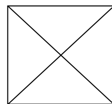
निनाद

(मैथिली नाट्यालोचना)

कमल मोहन चुन्नू



नवारम्भ
पटना

ISBN: 978-93-82013-18-1

निनाद
(मैथिली नाट्य आलोचना)

प्रथम संस्करण : 2017
मूल्य : 250 रु.

प्रकाशक
नवारम्भ
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
मधुबनी : वार्ड न.-2, विवेक पुरम्
Email : navarambhprakashan@gmail.com
lekhakajitazad@gmail.com
मो.- 08434680149, 09631459988

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Ninad
Dramatic Cricism in Maithili
By **Kamal Mohan Chunnu**
Edition : 2017, Price : Rs 250/-

विषय-सूची

मैथिली नाट्यालोचनाक वस्तु-स्थिति

पछिला पाँच-छओ दशक भारतीय आधुनिक रंगमंच लेल बेस महत्वपूर्ण सिद्ध भेल अछि। एहि कालखंड मे एकर अभिनय-शैली, प्रस्तुति, तकनीक प्रभृति क्षेत्र मे अप्रत्याशित परिवर्त्तन, विस्तार आ परिष्कार भेल अछि। नव-नव प्रयोग, पारम्परिक तत्वसभक पुनराविष्कारक प्रवृति, तदजन्य निर्भयता आदि विषय आइ विश्वक विशिष्ट नाटक सहित लोकधर्मी नाटकसभ कें सेहो समसामयिक अर्थवत्ताक संग प्रस्तुत करबाक सामर्थ्य देलक अछि। रंगभाषा आ रंगशैलीक स्तर पर समृद्ध विविधता आ सार्थक सूक्ष्मता अर्जित करैत आधुनिक रंगमंच आइ राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संवादक समर्थ मंच सेहो बनल अछि। अनेकानेक साहसिक प्रयोगक संग ई रंगमंच, नव-नव शिल्प आ तकनीकक विकास कयलक अछि जाहि सँ ई स्थिति एकदम स्पष्ट भ' गेल अछि जे रंगमंच आब मात्र मनोरंजनक माध्यम नहि, एहि मे मानवीय यथार्थक मारिते रास अपरिचित स्थलसभ कें पकड़बाक एकटा अद्भुत सामर्थ्य छैक।

मैथिली साहित्यक नाट्येतर आलोचक लोकनि आधुनिक मैथिली नाटकक प्रारम्भ कविवर जीवन झाक नाटक 'सुन्दर संयोग' (1904 ई.) सँ मानैत छथि। हमरा लेल ई तथ्य आइयो एकटा ओहन अतार्किक बुझौअलि सन अछि जकर उत्तर मात्र ओकर प्रश्नकर्त्तेटा कें बूझल रहैत छैक। वस्तुतः हमरा नहि लगैत अछि जे 'सुन्दर संयोग' मैथिलीक प्रथम आधुनिक नाटक अछि। समाजक आधुनिकता आ नाटकक आधुनिकता दुनू दू बात अछि। नाटकक आधुनिकता सँ अथवा रंगमंचक आधुनिकता सँ अनभिज्ञ लोक द्वारा एहन अपरिपक्व-अतार्किक स्थापना देल गेल होयत। तथ्य पर गम्भीरतापूर्वक विचार कयनहि बिनु कोनहु पूर्वकथित स्थापनाक छुहुक्का उड़ायब हमरा लोकनिक स्वभाव मे बड़ पूर्वहि सँ आबि रहल अछि। आदरक अतिरेक किंवा अन्ध आदर-भाव कोनहु विशेष प्रकारक परम्परावादिता कें समृद्ध अवश्य करैत अछि मुदा वस्तु-स्थिति कें नव तरहें देखबा-परेखबाक प्रवृति कें सदति समूल समाप्त सेहो करैत रहल अछि। ई अपन विकट आ घातक रूप मे तखन प्रकट होइत अछि जखन

एहि अंध आदर-भावक रूपान्तरण वैचारिक दासत्व मे होइत छैक। एवंक्रमे ओ यथास्थितिवादिताक अन्हार कें सेहो पसारैत अछि। आदरक एहि अतिरेक भाव सँ किंवा अंध-भाव सँ मैथिली भाषा-साहित्य कें सभ ठाम क्षतिए भेलैक अछि। अयोग्य कें अकास ठेकयबा मे अथवा योग्य कें पाताल पहुँचबा मे ई प्रवृत्ति बेसी उपयोगी सिद्ध होइत रहल अछि। एहि प्रवृत्तिक सर्वाधिक उपयोग प्राध्यापकीय प्रभाग मे भेल अछि। 'सुन्दर संयोग' सम्बन्धी उपरोक्त स्थापना सेहो मात्र एकटा प्राध्यापकीय स्थापना अछि। नाट्यालोचनाक आधुनिक तुला पर एहि स्थापना कें चढ़ा क' देखल जाय त' परिणाम एकर विरुद्ध जाइत अछि।

वस्तु बदलला सँ ओकर नपना (मात्रक) सेहो बदलैत छैक। तहिना विधा बदलला सँ ओकरा देखबा-परेखबाक दृष्टि कें सेहो बदलय पड़ैत छैक। कविता कें नाटकक दृष्टि सँ नहि देखल जा सकैत अछि, नाटक कें कथाक दृष्टि सँ नहि देखल सकैत अछि किंवा कथा कें उपन्यासक दृष्टि सँ नहि देखल जा सकैत अछि। अभिप्राय जे वस्तुक परिवर्त्तन दृष्टिक परिवर्त्तनक आग्रही होइत अछि। जेना-जेना नाटक मे तकनीक, शिल्प, शैली, प्रस्तुति प्रभृति मे परिवर्त्तन होइत गेल तेना-तेना एकर प्रेक्षकीय दृष्टि मे परिवर्त्तन सेहो अपेक्षित छल। आधुनिक नाटकसभ मे आ आधुनिक कालक नाटकसभ मे मंचीय मूल्य अपन प्रमुखताक संग उपस्थित भ' रहल छल मुदा एकरा देखबाक ढंग पुरने परिपाटीक छल, साहित्यिके मूल्यटा कें समग्र नाट्य-दृष्टि बूझयबला परिपाटी। तें मैथिलीक आधुनिक नाटक कें या त' ठीक सँ देखल नहि गेल आ नहि त' ओकर जे मूल्यांकन भेल से पुरनके तराजू पर, पुरनके बटखाराक संग। तें आधुनिक नाट्यालोचनाक क्षेत्र एतेक दुबरायल रहल। आलोचनाक एहि नव रूप, नव क्षेत्र मे पदार्पण लेल किछु अतिरिक्त श्रमक अपेक्षा छलैक। एहि दिशा मे यात्रा करबा लेल एकर मंचन, नव-नव तकनीक, एकर नव रूप मे प्रयोग, अन्य भाषाक रंगमंच मे होइत क्रमबद्ध परिवर्त्तन-परिष्कार आदि कें देखब-बूझब एकर प्राथमिक आवश्यकता मे सँ छलैक।

मैथिलीक किछु एककालखंडी नाटक जेना- पाथेय, मधुयामिनी (दुनूक लेखक- गुणनाथ झा, कोलकाता), भफाइत चाहक जिनगी, पहिल साँझ (दुनूक लेखक- सुधांशु 'शेखर' चौधरी, पटना) आदि एकटा नव

प्रयोग आ नव शिल्प-शैलीक संग मैथिलीक नाट्य-जगत मे उपस्थित भेल। एकर प्रथम श्रेय गुणनाथ झा केँ छनि, 'पाथेय' केँ छैक। कोलकाता मे 'पाथेय' (1968 ई.) नाटकक सफलतापूर्वक मंचन, एकर अभूतपूर्व चर्चा आ ख्यातिक छओ साल बाद 1974 ई. मे 'भफाइत चाहक जिनगी' नाटकक मंचन पटना मे भेल। इहो नाटक 'पाथेय'बला एककालखंडी शैली मे छल। मुदा साहित्यक नाट्येतर आलोचक लोकनि एहि नव नाट्य-शिल्पक मैथिली मे अवतारणाक श्रेय गुणनाथ झा केँ नहि सुधांशु 'शेखर' चौधरी केँ द' देलनि। कोना देलनि आ किएक देलनि से ने जानि! ई त' मैथिलीक नाट्यालोचनाक क्षेत्र मे होइत सायास लापरवाहीक एकटा झलकी मात्र अछि। एहन-एहन कतेको लापरवाही पूर्व मे भेल अछि, आइयो भ' रहल अछि।

ई जे एककालखंडी शैलीक नाटकसभ छल से ने त' एकांकीक शास्त्रीय परिभाषा केँ संतुष्ट क' रहल छल आ ने पूर्णांकीक व्याकरण-तुला पर चढ़ि पाबि रहल छल। मुदा एकर अछैत ई नाटकसभ अपन प्रभाव, प्रयोग, रंगभाषा, रंगशिल्प आदिक संग रस-निष्पत्तिक समस्त प्राचीन-अर्वाचीन उत्कंठा केँ शांत क' रहल छल। ई शैली बांग्ला रंगमंच मे पूर्वहि आबि चुकल छल। बांग्ला रंगमंचक ख्यातिलब्ध निर्देशक प्रवीर मुखोपाध्यायक चिंता आ 'चैलेंज' पर गुणनाथ बाबू एहि शैली केँ मैथिली मे अजमाओल। एहि प्रकारेँ ओ मैथिली भाषा आ मैथिली रंगमंच दुनूक शक्ति आ सामर्थ्य केँ प्रायोगिक रूपेँ अजमाबय चाहैत छला। पूर्णत: सफल सेहो भेलाह। 'पाथेय'क सफलताक अनुमान एहि सँ लगाओल जा सकैत अछि जे एकर बांग्ला भाषा मे रूपान्तरित क' मंचन सेहो कयल गेल जे कि एकटा अभूतपूर्व तथ्य अछि। यादवपुर विश्वविद्यालय मे 'पाथेय' केँ पाठ्यक्रम मे सेहो सम्मिलित कयल गेल। मुदा मैथिलीक आलोचक लोकनि लेल एहि ऐतिहासिक महत्वक तथ्यसभ महत्वहीन छल, अनुल्लेखनीय छल। नाट्यालोचनाक क्षेत्र मे ई कतेक पैघ हानि छैक तकर अनुमान कयल जा सकैत अछि। ताहि पर सँ ई लोकनि एहि नव शैलीक नाटक केँ नितान्त पारम्परिक-शास्त्रीय दृष्टि सँ देखि एकर आलोचना कयल। ई त' एकटा अपूरणीय क्षति सन भेलैक। अंतत: स्वयं नाटककारे लोकनि केँ एकर समुचित व्याख्या-स्थापना-व्याकरण आदि उपस्थित करय पड़लनि।

एहिना मैथिली रंगमंच मे 'चैम्बर नाटक'क आगमन भेल। इहो एकटा नव शैलीक नाटक छल जे कि अपना केँ एकांकी, पूर्णांकी, चौबटिया नाटक (नुक्कड़ नाटक) प्रभृति सँ फराक रखैत अपन सर्वांगीण रूप स्थापित कयलक, से मैथिलीक रंगमंचीय वैशिष्ट्य ओ निजताक संग। मुदा आलोचना मे एकरा व्याप्ति नहि भेटलैक जखन कि कुणाल लिखित-निर्देशित नाटक 'गोनू झाक खिस्सा' जखन पारम्परिक आ चैम्बर दुनू शैली मे भेल तँ चैम्बर शैलीक अस्तित्व, प्रभाव, चमत्कार आ नव स्वाद स्पष्ट भ' गेल छल। पमरिया शैली मे जखन कुणाल द्वारा हरिमोहन झाक कथा 'बाबाक संस्कार' केँ मंच पर सफलतापूर्वक प्रस्तुत कयल गेल त' ई बुझबा लेल भेल जे एकटा नाट्य-शैलीक रूप मे 'पमार' मे असीम सम्भावना छैक। गुणनाथ झा, महेन्द्र मलंगिया, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, नचिकेता, कुणाल, कुमार शैलेन्द्र लोकनिक नाटक केँ देखि ई लागय लागल जे आधुनिक मैथिली रंगमंच केँ प्राय: ओ शक्तिसभ प्राप्त भेल जा रहल छैक जकरा बलेँ नव-नव शैलीक नाटक आ विकट-विकट प्रयोगसभ सँ परिपूर्ण नाटकसभ केँ ओकर अपेक्षित परिणति धरि पहुँचाओल जा रहल अछि।

वस्तुत: नाटक लिखब अपेक्षाकृत आसान काज अछि मुदा नाटक पर लिखब कने मोसकिल काज अछि। यद्यपि अन्य विधा मे सेहो एहने सन स्थिति अछि। कथा-कवितासभ खूबे लिखल जा रहल अछि मुदा कथा-कवितासभ पर लिखबा काल स्थिति विषम भ' जाइत छैक तथापि कथा-कविताक क्षेत्र मे रचनारत रहला सँ एकटा सुविधा त' ई भेलैक जे एकरा आलोचक भेटलैक, आलोचनाक व्याप्ति भेटलैक। फलत: एकरा सभ केँ मैथिली साहित्यक प्रमुख विधा मे सँ बूझल जाय लागल। एहि विधासभक आलोचक दुनू गोटे भेलाह। पेशेवर आलोचक सेहो आ रचनाकार आलोचक सेहो। मुदा नाटक मे ई दुर्भिक्ष बनले रहल। एकरा लेल निजगुत आलोचकक अभावे सन रहल। कथे-कविताक आलोचक एकरहु आलोचना करय लगलाह। फलत: नाटक केँ मात्र एकटा कथारूप मे बूझल जाय लागल। एहि आलोचक लोकनिक दृष्टि-सीमा ओ सामर्थ्यक दुष्प्रभाव सँ नाटक आ एकर आलोचना क्रमेण प्रभावित होइत चलि गेल। मैथिलीक आधुनिक रंगमंच मे जे-जे नाटकसभ अपार सफलता आ प्रशंसा

अर्जित कयलक ताहू नाटकसभ पर साहित्यहीनताक आरोप लगाओल जाय लागल जकरा कि प्रकारान्तर सँ कलाहीनताक आरोप सेहो बनाओल जा रहल छल। यथार्थ तथ्य त' ई छल जे आरोप मढ़निहार महानुभाव लोकनि अपन पारम्परिक सीमा मे अपना सहित अपन आँखि-पाँखि कें सेहो घोकचा क' राखि लेने छलाह। मिनाप (जनकपुर) आ भंगिमा (पटना)क उद्भव सँ एहि स्थिति मे अभूतपूर्व सुधार भेलैक। नाट्यालेख, नाट्यालेख पर यथार्थवादी विमर्श, मैथिलीक निज रंग-परम्पराक अन्वेषण, नाट्य-मंचन, मंचनक अन्यान्य सहयोगी तत्वसभ, नाट्य-समीक्षा आदि पर प्रमुखता सँ विचार करब सन विषयसभ केन्द्र मे आबय लागल। अपन पारम्परिक रंग-तत्व आ रंग-सौन्दर्य कें आधुनिक दृष्टि सँ देखय-बूझय जाय लागल। उल्लेखनीय बात ईहो जे एहि प्रकार समस्त स्थिति-परिस्थितिक ज्ञानक प्रारम्भ शहर सँ भेल, शहरी रंगमंच सँ भेल। एतहुक रंगकर्मीए लोकनि नाटकक समीक्षाक क्षेत्र मे आगू आबय लगलाह। तखन नाट्यालोचनाक स्थिति कने आश्वास्तिदायक भेल। तथापि एतय एकटा एहन नियमित आलोचना ओ आलोचकक खगता छलैक जकरा नाटकक समस्त प्रधान आ गौण अंगोपांगक जानकारी हो आ ओ मात्र एकटा समर्थ प्रेक्षकक भूमिका मे रहय। ओकरा पर अन्य कोनहु भार नहि हो (जेना कि स्व. कुमार शैलेन्द्रक दिल्ली मे स्थिति छलनि)। तखन सक्षम आ समर्थ नाट्यालोचना साकार भ' सकत।

मैथिलीक पत्रिकासभ मे नाट्यालोचनाक 'स्पेश' अत्यंत कम छैक। विलोपक अंतिम सीमा धरि कम। मंचनक सूचनाटा रहैत अछि, सेहो सम्पादक लोकनिक अतिरिक्त अनुकम्पाक संग। मंचनक समीक्षा अथवा नाटक सम्बन्धी पोथीक समीक्षाक 'स्पेश' एखन धरि नियमित रूप मे असम्भवे अछि। पत्रिका-पुरुष लोकनि कें एतत्सम्बन्धी बहन्ना आ तकर प्रतिपूर्त्ति रूप मे टाल-मटोलक प्राय: कोनहु भंडारे हाथ लागि गेल छनि। ताहि स्थिति मे नाट्यालोचनाक क्षेत्र मे काज करब, बहुत दूर धरि त' एना लगैत अछि जेना हम जानि-सुमानि क' एकटा बिर्रो मे ठाढ़ भ' गेल छी, अपन पाग आ धोती कें पकड़ने।

पटनाक रंगकर्म नाटक कें ओकरा समग्रता मे (मंचीय मूल्य आ साहित्यिक मूल्य दुनूक संग) बुझबाक हमरा अवगति देलक। एकरे बल

पर हम समकालीन साहित्य कें, नाटक सँ इतर साहित्य कें सेहो एकटा वैचारिक धरातल पर बूझय-गूनय लेल उत्प्रेरित होइत रहलहुँ। पटनाक साहित्यिक परिवेश, साहित्यक समग्रताक परिवेश अछि। एतहुक साहित्य-कर्म समग्रताक साहित्य-कर्म अछि। कथा, कविता, नाटक, रंगमंच, व्यंग्य, पत्रकारिता, सम्पादन प्रभृति प्राय: सभ विधाक लेखन एतय सँ होइत रहल अछि। आधुनिक काल मे सेहो एतय मैथिलीक साहित्यिक सामग्रीक सम्पादनक एकटा दक्ष परम्पराक सम्यक् निर्वाह आदरणीय गुरुवर डॉ. वासुकी नाथ झा द्वारा भेल। समकालीन आधुनिक आलोचनाक एकटा समर्थ अध्याय आदरणीय मोहन भारद्वाज द्वारा एतहि रचल गेल। प्रशंसनीय बात इहो जे एतय विभिन्न विधाक रचनाकारक बीच संवादक निरन्तरता बनल रहल। से अद्यावधि बनल अछि। पारस्परिक संवादहीनताक स्थिति एतय प्राय: नहि आयल। साहित्यक एकरसाह स्थिति किंवा अलसायल स्थिति कें तोड़य लेल बरोबरि एतय किछु ने किछु नव बात, नव आयोजन होइत रहल। एकरहि परिणामस्वरूप एतहुक साहित्य अपन क्रियात्मक आ गुणात्मक दक्षताक संग अपन उपस्थिति दैत रहल अछि। अग्रज पीढ़ीक प्रति सम्मान आ अभ्यर्थना तथा अनुज पीढ़ीक प्रति निर्माण आ सम्वर्द्धनाक पवित्र वातावरण आ तकर सुखद उदाहरण जतेक सुन्दर पटना परिवेशक अछि ततेक प्राय: अन्यत्र कत्तहु नहि। उच्चतर कक्षाक शिक्षा-प्राप्तिक संगहि एही सुखद परिवेश मे हमर सांस्कृतिक-साहित्यिक निर्मिति सेहो भेल। ओहि समस्त सांस्कृतिक-साहित्यिक अग्रज लोकनिक सदति सगर्व आभारी रहैत छी।

गीत-रचना आ गीत-गायनक प्रस्तुतिजन्य स्तरहीनता कें देखैत अपन रचनाकर्मक प्रारम्भ गीत-रचना सँ कयल। पटनाक विद्यापति स्मृतिपर्वक मंच पर से समादृतो होइत रहल। बीचहि मे हमर जुड़ाव रंगमंच सँ भ' गेल। अपन रंगमंचीय जीवनक प्रारम्भ हम नाट्य-संगीत सँ कयल मुदा ताही संग हमरा अभिनय सेहो करय पड़य। अभिनय करब हमर प्रधान रंगमंचीय रुचि मे नहि छल तें हम एकर अन्य प्रत्यक्ष-पार्श्व अंगोपांग मे सेहो रुचि लेबय लगलहुँ। एहि सन्दर्भ मे रोहिणी रमण झा, प्रशान्त कांत, स्व. कुमार शैलेन्द्र, कुणाल, किशोर केशव लोकनिक प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग कें नहि बिसरल जा सकैत अछि। बीच-बीच मे कएकटा अपरोजक आ

स्तरहीन नाटकसभ सेहो देखय पड़य जाहि मे ने कथ्यक कोनहु ठेकान आ ने शिल्प, शैली, तकनीक आदिक कोनहु विचार। एहि स्थिति कें दोमबाक लेल नाट्य-लेखन दिस बढ़लहुँ। नाटक लिखलहुँ। हमर प्रथमे नाटक-'नव घर उठे' चेतना समिति द्वारा चयनित भेल। सफलतापूर्वक मंचन सेहो भेल। आइयो मोन पड़ैत छथि रघुवीर मोची जे ओ हमर नाटक पढ़ि एकर चयन ओ मंचन लेल समिति सँ कोना लड़ि गेल रहथि। तकर बाद त' नाटक लिखैत गेलहुँ, मंचित होइत गेल। मुदा एकर संगहि नाटकक समीक्षा-आलोचना दिस बढ़बाक स्थिति सेहो बनल। धुरझार लिखय लगलहुँ। एतय ई कहब अनिवार्य अछि जे हम जे नाट्य-लेखन कयल किंवा क' रहल छी से मनोरंजन-भाव सँ अभिभूत भ' क' नहि। साहित्य-कर्म हमरा लेल मनोरंजन-कर्म नहि अछि। हम एकरा एकटा वैचारिक अभिव्यक्ति मानैत रहल छी। मनोरंजनक की अभिव्यक्ति आ की विचार! नाटक लिखैत काल जँ हम कोनहु चरित्र कें हँसबैत छी कि कनबैत छी त' तकर उद्देश्य ककरहु मनोरंजन करब त' एकदम्मे नहि रहल अछि। अपन वैचारिक उद्देश्यक प्राप्ति लेल एकटा खास समय आ परिवेश मे एकटा खास अवसर पर एना करैत छी हम।

नाट्यालोचना-कर्म सेहो हमर ओही वैचारिक उद्देश्यक प्राप्ति लेल एकटा रूपान्तरित औजार अछि, वैचारिक माध्यम अछि। एहि क्रम मे हम अतिरिक्त रूप सँ साकांक्ष रहल करैत छी जे हमर ई आलोचना-कर्म प्राध्यापकीय व्याख्या नहि बनय। प्राध्यापकीय व्याख्या मे शास्त्रीयता आ शास्त्र-सम्मतिक व्यामोह तेना ने पसारल जाइत रहल अछि, अपन अतीत-गाथा कें, अतीत-स्तुति कें आ कि अतीत-मुग्धता कें खगता सँ बेसी तेना ने सिद्धान्त-प्रमाणादि बनाओल जाइत रहल अछि जे ओहि मे नवता किंवा नवताक 'स्पेश' तकलहुँ सँ नहि भेटत। जँ आलोचना अतीतगामी किंवा अतीताभिमुखी हो अथवा एहि प्रवृत्तिसभ कें प्रश्रय दैत हो त' आलोचनाक ताहि पुनरुत्थानवादी प्रवृत्ति सँ कहिया कोन साहित्य कें लाभ भेलैक? एहि माध्यम सँ एकटा विशेष प्रकारक वर्चस्व-भाव कें जे पुष्टि भेटि जाय मुदा संगहि इहो धरि सत्ये जे एहि सँ कोनहु साहित्यक निजगुत विकास कें क्षतिए भेलैक अछि। ई कहबा मे धरी-धोख नहि जे एखन धरि जे मैथिलीक आधुनिक नाटकक आलोचना भेल अछि ताहि मे बेसी ठाम एही

वर्चस्व-भावक प्रदर्शन कयल गेल अछि। लगैत अछि जे एहने सन किछु कारणसभ छैक जाहि कारणें मैथिली नाटकक आलोचना सुव्यवस्थित-सुविकसित नहि भ' सकल जे कि एकर अपेक्षित समृद्धि-प्राप्तिक मार्ग मे नमहर बाधा सन अछि। आधुनिक रंगमंच मे दिनानुदिन नव-नव खोज आ नव-नव प्रयोग भ' रहल अछि। जँ एकर आलोचना अपना कें तदनुकुल परिष्कृत आ प्रासंगिक नहि बनाओत त' से कोना समुचित होयत। आधुनिक रंगमंच मे कविताक मंचन (यथारूप अथवा रूपान्तरित), कथाक मंचन, उपन्यासक मंचन, कथा-कविताक कोलाजक मंचन प्रभृति जे नव-नव रंगमंचीय रूपसभ सोझाँ आबि रहल अछि, स्थापित सेहो भ' रहल अछि से कएक परिप्रेक्ष्य मे नाटकक पारम्परिक मंचन सँ तत्वतः भिन्न सेहो अछि। जँ एहि नव-नव रूपक नाटक कें पारम्परिक मंचनक दृष्टि सँ देखि आलोचना कयल जाय त' से कतेक उचित होयत? की एहि सँ आलोचनाक वस्तुगत समकाल प्रभावित नहि होयतैक? एखन धरिक नाट्यालोचना मे बेसी काल, बेसी ठाम यएह भ' रहल अछि। प्रमाणक क्षणिक अनुपलब्धता कें प्रमाणक सार्वकालिक अभाव मानि नाटक सम्बन्धी मारिते रास निर्णय देल जाइत रहल अछि, जे कि अंततः मैथिलीक आधुनिक नाटक कें आ ताहि ब्याजें एकर नाट्य-परम्परा कें अवमूल्यित करैत रहल अछि। हमरा लेल अदौ सँ ई अतिरिक्त चिंताक विषय बनैत रहल।

कहबाक खगता नहि जे एखन धरिक नाट्यालोचना एकांगी, निरन्तर निषेध, अन्यमनस्क आ तें उपेक्षा-भावक आलोचना रहल अछि। ई आलोचना बेसी काल अपात्र, अयोग्य आ अगम्भीर लोक द्वारा कयल गेल आलोचना अछि। मुदा एकर दोसरो पक्ष, दोसरो दृश्य कम लज्जास्पद नहि अछि। एहि रंगमंचक रंगकर्मीओ लोकनिक बीच सँ होबयबला आलोचना-कार्यक नितान्त अभाव रहल अछि। अधिकांश रंगकर्मी मैथिली रंगकर्म कें मनोरंजनेक सामग्री माननलि, समीक्षाक सामग्री नहि। जे किछु गोटे समीक्षा योग्य मानबो कयलनि त' ताहि मे बेसी गोटे अपना कें वाचिके स्थिति धरि सीमित राखि अपना कें 'सेफ जोन' मे रखलनि। एकाधे गोटे लिखबाक 'रिस्क' उठाओल। तें ने एतेक रास नाटक आ नाट्य-प्रस्तुति होइत रहल मुदा तकर आलोचना-समीक्षा अत्यल्प भेल। रंगकर्मीक नवागत पीढ़ी मे उत्सवधर्मी रंगकर्म, जे कि स्वभावतः दुर्बल आ

अल्पजीवी रंगकर्म होइछ, ताहि मानसिकताक प्रभाव बेसी प्रबल अछि। तेँ मैथिलीक आजुक रंगकर्म पूर्वापेक्षा बेसी अगम्भीर भेल सन लगैत अछि। रंग-विषयक गतिविधि मे अल्पत्व आयब, रंग-संस्थासभक एकाएकी बन्द होयब प्रभृति घटनासभ मैथिलीक रंग-सक्रियता केँ क्रमेण स्थगित करबा दिस ठेलि रहल अछि। अनियोजित किंवा मनोरंजनी रंग-प्रदर्शन कोनहु भाषाक रंगमंच केँ अपन उद्देश्य-प्राप्ति मे बाधके बनैत रहल अछि। विश्वक कोनहु भाषाक रंगमंच अपन मनोरंजनी कर्मकांड केँ छोड़िए क' कोनहु स्थायी महत्वक काज क' सकल अछि। विमर्शक अभाव किंवा विमर्शक प्रति निषेधक भाव एकर दुर्गति केँ बढ़ाए देलक अछि। एहि सन्दर्भ मे पटनाक आजुक हाल त' आओरो बेहाल अछि। एतय आब कोनहु सार्वजनिक-सर्वसुलभ मैथिल दलान नहि बाँचल अछि जतय साहित्यकर्मी-संस्कृतिकर्मी लोकनि एकत्र भ' विमर्श क' सकथि। विद्यापति भवन आब ओहेन नहि अछि जेहेन पहिने छल। नवका विद्यापति भवन सँ मैथिली रंगकर्म केँ कोनहु उसास नहि भ' रहल छैक। ओकरा अन्यान्य उद्देश्यक पूर्त्तिक अनुसार विकसित कयल जा रहल अछि। साहित्यिक-सांस्कृतिक उद्देश्यक पूर्ति ओकर सूची मे छैको कि नहि, से ने कहि! तेँ समितिओक दलान कोनहु साहित्यिक-सांस्कृतिक विमर्श लेल आब सार्वजनिक नहि, सर्वजनसुलभ नहि। आन पटनियाँ नाट्य-संस्था कहियो आत्मालोचना किंवा समीक्षात्मक विमर्शक आग्रही नहि रहल। मुदा 'भंगिमा' अपन स्थापना कालहि सँ अपन सार्थक ओ समर्थ उद्देश्यक पूर्ति हेतु विमर्श केँ एकटा सक्षम औजार रूप मे अंगीकार कयने छल। मुदा किछु वर्ष सँ इहो संस्था अपना केँ आलोचनात्मक-समीक्षात्मक विमर्श सँ एकात क' लेने अछि। एहने सन दुर्बल स्थिति कलकतियो मैथिली रंगमंचक अछि। कलकत्ताक मैथिली रंगमंच कहियो अत्यधिक सक्रियता आ निरन्तरताक संग उपस्थित रहैत छल। तहिया एकरा बाबू साहेब चौधरी, श्रीकांत मंडल, गुणनाथ झा, दयानाथ झा, नचिकेता, रामलोचन ठाकुर सन-सन समर्पित रंगकर्मीक योगदान प्राप्त छलैक। एक-पर-एक विलक्षण नाटकसभ अबैत रहल आ मैथिली रंगमंचक भाल गर्वोन्नत होइत रहल मुदा ई पीढ़ी लगैए जे अपन रंगकर्म केँ एकटा समर्थ पीढ़ी केँ हस्तान्तरित नहि क' सकल। यद्यपि आइयो ओतय रंगकर्म भ' रहल अछि। गंगा झा, शंभुनाथ मिश्र,

भवनाथ झा लोकनि आइयो लागल छथि। मुदा ओतहुक क्रियाशील रंगकर्मी समूह मे सेहो गम्भीरताक बेस ह्रास भेल अछि। समकालीन नाट्यकर्मक मर्म केँ बूझैत नाटक लिखयबला नाटककारक ओतय घोर अभाव देखल जा रहल अछि। ताही संग एकटा आलोचक व्यक्तित्वक त' घोर अभाव अछिए कलकत्ताक मैथिली साहित्य-जगत मे। ओतहुक समकालीन रंगकर्म निर्वाह कोटिक रंगकर्म अछि। इहो रंगमंच युवा रंगकर्मीक अभाव, अगम्भीर प्रस्तोता समूह आदिक दंश भोगि रहल अछि। प्रदर्शनक परम्पराबद्ध प्रारूप सँ इतर कोनहु नव प्रयोग हेमनि मे नहि देखल गेल अछि ओतय। एहू ठामक बेसी नवयुवक रंगकर्मी लोकनि अभिनयेटा केँ रंगकर्मक पर्यायरूप मे ग्रहण कयने छथि। सार-संक्षेप एतबे जे कलकत्तोक रंगमंच आइ उन्नतावस्था मे नहि अछि।

नाटक मे एकहि संग साहित्य आ प्रदर्शन-कला दुनूक अनिवार्य उपस्थिति रहैत अछि। तेँ एकर आलोचना सेहो एहि दुनू तत्व सँ निरपेक्ष नहि भ' सकैत अछि। ई एकटा विडम्बना अछि जे नाट्येतर आलोचक सँ एकर प्रस्तुति ओ संरचना-पक्ष ओहिना छुटैत रहल छनि जेना रंगकर्मी आलोचक सँ एकर साहित्यिक पक्ष। एखन धरिक जे नाट्यालोचना अछि से दर्शक केँ पूर्वापेक्षा नीक दर्शक बनय मे मदति नहि क' सकल अछि। फलत: दर्शकक दृष्टिकोण बूझब आ तकरा बूझि कोनहु नाटक केँ पुनर्मंचित करबाक विशेष प्रयास करब, तकर प्राय: अभावे सन रहल अछि। एहि संदर्भ मे बहुत मोसकिल सँ एतय महेन्द्र मलंगियाक 'छुतहा घैल' आ कि कुणाल निर्देशित 'रुक्मिणी हरण', कुसमा-सलहेस' सन एकाधटा आओर नाटकक नाम लेल जा सकैत अछि। साहित्यक आलोचक लोकनि जेना कथा, कविता, उपन्यास आदि पर सम्पूर्ण तैयारीक संग हुमचि क' लिखलनि तेना नाटक पर नहि। नाट्यालोचनाक प्रति हिनका लोकनिक भाव-रुग्णता अद्यावधि विद्यमान अछि।

मैथिलीओ मे नाटकक आलोचनाक नाम पर मारिते रास पोथी प्रकाशित अछि। एहि मे आलेख-संग्रह बेसी अछि जे विभिन्न लोकसभ द्वारा लिखल गेल अछि। ताहू मे बेसी ठाम अनाधिकारे चेष्टाक भरमार अछि। कोनहु एक लेखक द्वारा एक मानसिकता सँ, एक विचार-धारा सँ लिखल पोथीक संख्या अत्यल्प अछि। जे अछिओ से अपना केँ साहित्यिके

मूल्य धरि सीमित कयने अछि। नाटकक दुनू मूल्य केँ एक संग राखि कोनहु नाट्यालोचनाक पोथी हो जे एकहि गोटेक लिखल हो, तकर मैथिली मे अभाव अछि। ताहि अर्थ मे 'निनाद' रूप मे हमर ई प्रयास मैथिलीक प्राय: पहिल प्रयास अछि। जँ पहिल नहिओ स्वीकार्य त' विरल प्रयास त' अछिए।

प्रस्तुत पोथी 'निनाद' मे प्रयास ई कयल गेल अछि जे नाटकक दुनू मूल्य (साहित्यिक आ मंचीय) केँ एक ठाम एक संग राखि विचार करबाक परम्पराक प्रारम्भ हो। ताही क्रम मे नाटकक आलोचना, नाट्य-मंचनक समीक्षा, रंगयात्रा-वृत्तांत आदि केँ सेहो सम्मिलित कयल गेल अछि। प्रयास इहो कयल गेल अछि जे 'निनाद' मे वर्णित तथ्यसभ प्रमाणित हो आ से तथ्यसभ मैथिलीक आधुनिक रंगमंचक इतिहास-लेखन (जँ कहियो किनकहु द्वारा सम्भव भेल तँ) हेतु सक्षम सामग्री सेहो बनय। अपना भरि हम एतद्विषयक कोनहु भ्रांत धारणा केँ ने त' स्थान देल अछि आ ने प्रश्रय। रंगमंचीय आलोचना स्वाभाविक रूपेँ नाट्य-मंचनक आलोचना बेसी अछि नाट्य-साहित्यक आलोचना कम। तेँ हम नाटकसभक प्रकाशन-तिथिक अपेक्षा मंचन-तिथिक प्राथमिकता बेसी देल अछि। किछु 'रेडीमेड' स्थापनासभ केँ यथातथ्य ऊघय सँ परहेज अवश्य कयल अछि। मुदा तकरहु सही-सही निर्णय तँ विज्ञ लोकनि करताह।

बरोबरि कहल जाइछ जे मैथिली मे पठनीयताक क्रमेण ह्रास भ' रहल अछि, रंगमंचीय घटना-परिघटना बेस कमि गेल अछि, रंगमंचीय लेखन अपन जबदाह प्रवृत्तिक चलते भारी भेल जा रहल अछि, आदि-आदि। 'निनाद' एहि कहबीसभ केँ निरस्त करबा मे न्यूनाधिक यथाशक्ति सहयोगी सिद्ध हो से कामना। 'निनाद' अपन निजगुत पाठक केँ जँ कनिको काल अपना लग ठमका सकल, एकहुटा नव बात आ कि नव जानकारी बिलहि सकल किंवा रंगमंचीय-साहित्यिक ज्ञान-स्तर केँ मिसियो भरि ऊँच क' सकल त' हमर सभटा श्रम सार्थक होयत आ तखन अगिला खेप मे एकटा नव पोथीक संग पुन: उपस्थित होयब।

मित्र अजितजीक सत्प्रयास सँ ई पोथी एकटा मजगुत आकार ग्रहण कयलक अछि। मित्र केँ धन्यवाद कोना देल जाय! पुत्र गुंजन, पुत्री कीर्त्ति मंजरी आ पत्नी इन्दुलेखा, तीनू गोटे हमर रंगमंचीय गतिविधि मे प्रत्यक्ष ओ

परोक्ष रूपेँ सदति हमर संग पूरैत रहल छथि। हिनका लोकनिक प्रति आभार कोना प्रकट कयल जाय! साहित्य ओ रंगकर्मक समस्त अग्रज-अनुज लोकनि जे हमरा प्रति सदति सहयोगी-असहयोगी भावना राखि हमरा उत्तरोत्तर सम्पुष्ट होयबा मे मदति करैत रहल छथि, तिनका सभ केँ कोना बिसरल जाय! सभ गोटे केँ पुन: स्मरण करैत, समस्त पाठक समाजक सोझाँ 'निनाद'क संग...

गुरु पूर्णिमा
2017

कमल मोहन चुन्नू

विद्यापतिक मणिमंजरी

मैथिली-साहित्य मे विद्यापति आ हुनक काल (इतिहासकार लोकनि द्वारा निर्णीत- 1350 ई. सँ 1450 ई. धरि) कएक अर्थ मे प्रसिद्ध रहल अछि। मैथिलीक साहित्यिक उत्कर्षक अर्थ मे एकर उल्लेखनीय महत्व जगद्विख्यात अछि। विद्यापति सँ पूर्व जे प्रमुखता सँ उपलब्ध सामग्री अछि से थिक चर्यापद (8म-11म शताब्दी) आ वर्णरत्नाकर (14म शताब्दी)[1]। मुदा मैथिली-साहित्यक आदिकालीन सामग्रीक रूप मे मैथिली शब्दसभक पंजीप्रबन्ध, धर्मशास्त्र किंवा संस्कृत वाङ्मयक अन्य प्रभाग मे प्रयोग, सिद्ध-साहित्य, डाक-वचन, लोकगीत-आख्यानादि, प्राकृत पैंगलम्, वर्णरत्नाकर, धूर्तसमागम आदिक मान्यता सर्वस्वीकृत रहल अछि।[2] एहि सामग्री मे प्रमुखता सँ उपलब्ध अछि ज्योतिरीश्वरकृत वर्णरत्नाकर आ धूर्तसमागम। 14म शताब्दीक प्रथम चतुर्थांश मे लिखल 'वर्णरत्नाकर' केँ ज्योतिरीश्वरक सर्वश्रेष्ठ मैथिली-गद्यग्रंथ मानल जाइछ। वर्णरत्नाकर आ धूर्तसमागमक अतिरिक्त ज्योतिरीश्वरकृत तीनटा आओरो ग्रंथक सूचना भेटैछ- पंचशायक, रंगशेखर आ रति रहस्य।[3] ज्योतिरीश्वरक जन्म 1348 ई. अनुमानित अछि[4]। यद्यपि हिनक काल-निर्धारण मे अद्यावधि भ्रम अछिए कारण साहित्य अकादमी सँ प्रकाशित पुस्तक 'ज्योतिरीश्वर' (सुरेश्वर झा) मे ज्योतिरीश्वरक काल दू प्रकारक देल अछि। पृष्ठ-18 पर 1348 ई. आ पृष्ठ-29 पर 1324 ई.। मुदा हमर अभिप्राय एतय मात्र एतबे अछि जे ज्योतिरीश्वरक शीघ्र बाद मैथिली मे विद्यापतिक उदय निश्चये एकटा समर्थ उत्तराधिकारिक रूप मे भेल छनि।

विद्यापति पर कोनहु मैथिल विद्वान द्वारा लिखल पहिल पुस्तक अछि पं. शिवनन्दन ठाकुर रचित महाकवि विद्यापति। एकर प्रथम प्रकाशन भेल 1941 ई. मे।[5] साहित्य-जगत मे एहि पुस्तकक विद्यापति आ तद्युगीन तथ्यगत प्रामाणिकता सर्वस्वीकृत आ समादृत अछि। पं. ठाकुरक अनुसार विद्यापतिक रचनासभ छनि- कीर्तिलता, कीर्तिपताका, भूपरिक्रमण, पुरुष-परीक्षा, लिखनावली, शैवसर्वस्वसार, गंगावाक्यावली, विभागसार, दानवाक्यावली, गयापत्तलक, दुर्गाभक्तितरंगिनी, वर्षकृत्य आ पदावली। पं. ठाकुरक देल एहि पुस्तक-सूची मे विद्यापति-रचित 'गोरक्षविजय'

(नाटक)क सूचना नहि अछि। मणिमंजरी (नाटिका)क सूचना अवश्य अछि जे महेशपुर (दरभंगा) निवासी पं. किशोरी झाक घर मे भेटल छलनि। पं. ठाकुर द्वारा उक्त नाटिकाक आरम्भिक मंगलाचरण-श्लोक आ अंतिम आशीर्वाद-श्लोकक चर्च अछि।[6] डा. बजरंग वर्माक अनुसार ई नाटिका मैलाम (दरभंगा) निवासी पं. चन्द्रानन्द ठाकुर केँ प्राप्त भेलनि। 1966 ई. मे पं. रमानाथ झाक सम्पादन मे एकर एक संस्करण प्रकाशित भ' चुकल अछि।[7] ई मणिमंजरीक पहिल प्रकाशन छल आ तेँ खूबे सम्भव जे ओ मणिमंजरीक यथारूप प्रकाशन रहल हो। यथारूप सँ अभिप्राय अछि जे मणिमंजरी संस्कृत नाटक अछि। संस्कृत-साहित्यक आने नाटक यथा- स्वप्नवासवदत्ता (भास), मालविकाग्निमित्र, विक्रमोर्वशीयम् (कालिदास), मृच्छकटिकम् (शूद्रक), मुद्राराक्षस (विशाखदत्त) आदि जकाँ एहि नाटक मे सेहो भाषा-योजनाक संदर्भ मे संस्कृत-प्राकृत मिश्रित भाषा-परम्पराक अनुकरण भेल अछि। मैथिली अकादमी (पटना) द्वारा मणिमंजरीक प्रकाशन एकर दोसर प्रकाशन कहल जायत।

विद्यापति रचित दूटा नाट्यकृति उपलब्ध अछि- मणिमंजरी आ गोरक्षविजय। गोरक्षविजयक पहिल प्रकाशन नेपाल सँ प्रकाशित 'संस्कृत-संदेश' नामक पत्रिका मे भेल छल। 1961 ई. मे सर्वप्रथम डा. जयकान्त मिश्र एकरा सम्पादित क' पुस्तकाकार प्रकाशित कयल।[8] संस्कृत-मैथिली नाटक मे गोरक्षविजय केँ सब सँ प्राचीन होयबाक श्रेय प्रदान करैत डा. हरिमोहन मिश्र एकरा किरतनियाँ नाट्य-परम्परा सँ पृथक मानने छथि।[9] राग-तालबद्ध गीत लिखबाक परम्परा संस्कृत मे प्रायः जयदेव सँ प्रारम्भ भेल अछि। संस्कृत नाटक मे से गीतसभ प्राकृत मे लिखल जाइत रहल अछि। कालिदासेक नाटक मे प्रायः पहिल बेर प्राकृत भाषा मे गीत भेटैत अछि। अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम् प्रभृति नाटक केँ उदाहरणरूप मे उपस्थितो कयल जा सकैत अछि। मुदा विद्यापतिए सर्वप्रथम एहन नाटक 'गोरक्षविजय'क रचना कयल जाहि मे संस्कृत-प्राकृतक अतिरिक्त मैथिली मे गीत छल, लोकभाषा मे गीत छल।

नाट्य-प्रस्तुतिक प्रारम्भ करबाकाल मंगल-श्लोक किंवा नाटकक मंचनक प्रस्ताव अर्थात् प्रस्तावना पढ़बाक परम्परा रहल अछि। संस्कृत नाटक मे एकरा प्रस्तावक कहल जाइछ मुदा जगदीशचन्द्र माथुर एकरा सूत्रधार कहलनि अछि।[10] सम्पूर्ण नाटक केँ नियंत्रित आ संचालित करबाक

सूत्रधार-पद्धति किरतनियाँ नाटक मे भेटैछ। अंकिया-नाट मे सेहो भेटैछ। मुदा विद्यापतिक सूत्रधार आ नटी संस्कृतेक नाटक सन मात्र प्रस्तावना धरि सीमित रहैत अछि। किरतनियाँ नाटक मे उमापति 'प्रवेश-गीत' नामक एकटा नव नाट्यशिल्प चलाओल जे कि नव पात्र केँ मंच पर अयलाक उपरांत गाओल जाइत छल मुदा उमापतिओक सूत्रधार-नटी प्रस्तावकेक रूप मे प्रस्तावने धरि सीमित रहल।

विद्यापतिकृत मणिमंजरी स्त्रीपात्र बहुल ललिताभिनय-युक्त नाट्यांग (पताका-स्थानादिसहित) चारि अंकक नाटिका अछि। एकर प्रथम अभिनय (प्राय:) भगवान जगन्नाथक यात्रा-प्रसंग मे एकत्र चारू दिस सँ आयल चतुर लोकक सभा मध्य भेल छल।[11] कहिया भेल आ कोन ठाम भेल तकर सूचना आइयो अप्रस्तुत अछि मुदा जँ 'मणिमंजरी'क सूत्रधारक संवाद केँ सूचनारूप मे ल' सकी त' कम सँ कम एक बेर त' एकर मंचन अवश्य भेल अछि। हँ, 'गोरक्ष-विजय'क प्रस्तावना-संवाद जकाँ एहि नाटिकाक मंचन-प्रस्ताव रखैतकाल कोनहु राजाक किंवा आश्रयदाताक नामोल्लेख नहि कयल गेल अछि। विद्यापति द्वारा मणिमंजरीक रचना-प्रकृतिक मादे 'नाटिका' (तत्सभ्यान्नवनाटिकामृतरसास्वादावधानश्रमं) आ 'संगीतक' (प्रेयसीमाहूय संगीतकं सम्पादयामि)[12] शब्दक प्रयोग भेल अछि। 'संगीतक'क दूटा अर्थ होइछ– प्रथम, नृत्य आ वाद्यक संग गीत आ दोसर, सम्मिलित गीत। संस्कृत नाटक मृच्छकटिकम् (शूद्रक)क प्रस्तावना मे जे 'संगीतक' शब्द आयल अछि तकर अभिप्राय अछि संगीतमय राग-तालबद्ध गीत। ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'क प्रस्तावना मे आ विद्यापतिकृत 'गोरक्षविजय'क प्रस्तावना मे सेहो 'संगीतक' शब्द आयल अछि। अभिप्राय ई जे गोरक्षविजय आ मणिमंजरी दुनू केँ जे संगीतक कहल गेल अछि से ओकर मैथिली किंवा प्राकृत गीतक परिप्रेक्ष्य मे। एकर अछैत स्वयं विद्यापतिए गोरक्षविजय केँ नाटक[13] कहलनि आ मणिमंजरी केँ नाटिका[14]।

विद्यापतिकृत एहि दुनू नाट्य-रचना मे भाषा-प्रयोग सम्बन्धी समानता देखल जाइत अछि। दुनू मे संस्कृत आ प्राकृत मे संवाद-रचना भेल अछि। गोरक्षविजय मे गीत मैथिली मे अछि मुदा मणिमंजरी मे संस्कृत मे। भाषाक प्रयोगक स्तर सँ मणिमंजरी मे दू कोटिक पात्र अछि। सूत्रधार, राजा, वैतालिक, कंचुकी, सुमन्त्र, चन्द्रकांत, सूत आ मनोहर प्रभृति आठटा पात्र संस्कृत बजैत अछि आ नटी, विदूषक, रानी (पद्मावती), कलकंठिका,

कुन्दलतिका, दौवारिक, सुभद्र, मदनलेखा, दुनू चेटी, प्रतिहारी, मणिमंजरी, कनकलता, सुशीला, ललिता प्रभृति पंद्रहटा पात्र प्राकृत बजैत अछि। 23टा पात्र मे 10टा पुरुष आ 13टा महिलाक होयब सेहो विद्यापतिक हिम्मति, नाट्य-रुचि आ नारीवादी संवेदनाक समर्थ उदाहरण अछि। 'मणिमंजरी'क किछु आओरो आँकड़ा चमत्कृत करैत अछि। सम्पूर्ण नाटिका मे 84टा गीत-पदादिसभ अछि जे कि संवादक संगहि नाटकक स्वरूप आ गतिक संवाहक सेहो अछि। कुल 332टा संवाद मे 190टा संवाद प्राकृत भाषा मे अछि। एहि मे दृश्य नहि, अंक अछि। संस्कृतेक महाकाव्य-परम्पराक अनुसार चारू अंकक नाम क्रमश: स्वप्ननिवेदन, चित्रफलक, मणिमंजरी दर्शन आ मणिमंजरी संगम देल गेल अछि। हँ, गोरक्षविजय जकाँ विभिन्न गीत-पदादिसभक लेल राग-तालक नामोल्लेख नहि अछि फलत: पात्रक गद्य संवाद आ पद्य संवाद (गीत-पदादि)क मध्य संवादजन्य-प्रस्तुतिजन्य सहजता प्राय: अक्षुण्ण रहैछ। किरतनियाँ शैलीक नाटक मे एहि गद्य-पद्य मिश्रित संवादक विशेष महत्व अछि। गोरक्षविजय जकाँ मणिमंजरी मे सेहो प्रथम दृश्य मे सूत्रधार-नटी आबि नाटकक प्रस्ताव क' अलोपित भ' जाइत अछि। कहल जा सकैत अछि जे एहि प्रकारक चरित्र सूत्रधार कम आ प्रस्तावक बेसी अछि।

विद्यापतिक एहि दुनू नाट्यकृति मे पूर्वापर स्थिति स्थिर करब कठिन अछि। कोनहु ठोस सूचना-संकेत नहि उपलब्ध भ' रहल अछि जे ई कहल जाय जे पहिले कोन नाट्यकृतिक रचना भेल। पं. शिवनन्दन ठाकुर मणिमंजरीक सूचना त' देने छथि मुदा गोरक्षविजयक नहि। तहिया धरि हुनका गोरक्षविजय नहि उपलब्ध भेल हो से सम्भव अछि। मुदा कोनहु वस्तुक अनुपलब्धता ओकर अनस्तित्वक एकमात्र प्रमाण नहि भ' सकैत अछि। डा. चन्द्रधर झा मणिमंजरीए केँ पहिल नाट्यरचना मानलनि अछि।[15] यद्यपि हिनक ई संकेत अत्यंत संकुचित सेहो अछि आ निष्प्रमाण सेहो। तथापि जँ दुनू नाट्यकृति केँ एकठाम एकहि संग देखल जाय त' स्थिति किछु साफ होइत अछि। गोरक्षविजयक रचना-प्रक्रिया मणिमंजरी सँ बेसी परिपक्व लगैत अछि। मणिमंजरी मे चारि अंक (दृश्य) अछि मुदा गोरक्षविजय मे एकहि अंक। मणिमंजरी नाटिका अछि आ गोरक्षविजय नाटक। मणिमंजरीक गीत संस्कृतक श्लोकरूप मे अछि मुदा गोरक्षविजय मे मैथिलीओ मे। गोरक्षविजय मे किरतनियाँ नाटकक तत्व अपेक्षाकृत किछु

बेसी समावेशित कयल गेल अछि। डा. जयकांत मिश्र त' गोरक्षविजय केँ किरतनियाँ नाटकक पूर्वरूप मानने छथि।[16] तकरा ध्यान मे रखैत मणिमंजरी एहि सँ बेसी पूर्वक लगैत अछि। जँ एहि सँ फराक भ' क' सेहो विचार कयल जाय त' विद्यापतिक प्रारम्भिक रचना संस्कृत मे भेल छनि, अवहट्ट मे भेल छनि। तकर बादे ओ मैथिली दिस धुरझार भेल छथि। ताहू दृष्टिए कहल जा सकैत अछि जे गोरक्षविजय बादक रचना अछि। मणिमंजरीक अपेक्षा गोरक्षविजयक नाट्यनिर्देश बेसी परिपक्व अछि। दुनू केँ संगीतक कहितहु गोरक्षविजयक पदसभ गीत कोटिक अछि आ मणिमंजरीक पद गीतांश किंवा पद्य संवाद कोटिक। गोरक्षविजय मे गीतसभक लेल राग-रागिनीक निर्देश सेहो एकर परिपक्वता-क्रम केँ पुष्ट करैत अछि।

मणिमंजरीक कथावस्तु– राजा चन्द्रसेन अपन पहिलुके दर्शन मे मणिमंजरी नामक एकटा वैश्य-कन्या पर विमुग्ध भ' जाइत छथि। रानी पद्मावती पहिले त' यथाशक्ति अपन तामस देखबैत छथि मुदा राजा अपन मित्र माकन्द आ सेविका कलकण्ठिकाक प्रयास-चातुर्यक बलेँ अपन रूसल आ कि तमसायल रानी केँ बौसि लैत छथि आ रानी पद्मावती मणिमंजरी केँ अपन छोटि बहिन कबूलि ओकरा राजा केँ समर्पित क' दैत छथि।

ई एकटा सुखांत प्रकृतिक नाटक अछि मुदा आधुनिक रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य मे ई बहुत कमजोर कथानक सन अछि। एकरा ने त' नारी-विमर्शक कोटि मे गानल जा सकैत अछि आ ने एकटा प्रेम-कथाक कोटि मे। यद्यपि एहि दुनू स्थिति सँ विद्यापतिक नाट्यरचनाक भाव फराक छनि से बूझिए क' एकर अध्ययन-प्रदर्शनादि कयल जयबाक चाही। विद्यापतिक एहि नितांत कमजोर कथ्य केँ समकालीन संदर्भ सँ जोड़ि एकरा आओरो प्रासंगिक बनाओल जयबाक खगता छैक। प्रस्तुतिजन्य निर्देशकीय स्वतंत्रता आजुक रंगकर्मक प्रमुख आ आवश्यक तत्व सन भ' गेल अछि। नाट्यकृति केँ प्रासंगिक, समकालीन किंवा युगसापेक्ष बनयबाक क्रम मे ओकर कथावस्तु, भाषा, प्रस्तुति-शैली, संगीत प्रभृति क्षेत्र मे हस्तक्षेप करब आवश्यको होइत अछि आ एकर ई वर्त्तमानकालीन व्यावहारिक यथार्थ सन सेहो अछि।

मणिमंजरीक मंचन– पुर्वहु कहि चुकल छी जे मणिमंजरीक मंचन-तिथिक सम्बन्ध मे कोनहु ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहि कयल गेल अछि।

मुदा प्रथम मंचनक सूचना सूत्रधार-नटी संवाद मे भेटैछ। तेँ कम-सँ-कम एक बेर मंचन भेल होयत से कहल जा सकैत अछि। मुदा से जँ हम एहिए पुस्तकक साक्ष्य पर कही त' ओ मंचन विद्यापतिकृता संस्कृत नाटिका 'मणिमंजरी'क मंचन रहल होयत। एकर मैथिलीरूप किंवा अनुवादितरूप आइ धरि कतहु मंचित भेल अछि से सूचना कतहु नहि उपलब्ध अछि। तेँ जाधरि कोनहु नव आ ठोस प्रमाण-सूचना नहि उपलब्ध होइछ ताधरि ई अवश्ये कहल जा सकैछ जे मैथिली मणिमंजरीक प्रथम मंचन मैलोरंग (नई दिल्ली) कयलक अछि। 25 अगस्त 2013 क' दिल्लीक सुव्यवस्थित प्रेक्षागृह मे सँ एक श्रीराम सेंटर (मण्डी हाउस, नई दिल्ली) मे ई प्रस्तुत भेल। आधुनिक रंग-तकनीक आ रंग-प्रयोग सँ सजल ई प्रस्तुति कएक परिप्रेक्ष्य मे महत्वपूर्ण अछि। एहि प्रस्तुतिक मूल आधार अछि डा. चन्द्रधर झा द्वारा अनुवादित आ सम्पादित एवम् मैथिली अकादमी, पटना सँ प्रकाशित पोथी 'मणिमंजरी'। नाट्य-लेखनक संस्कृत-परम्पराक अनुगमन करैत एहि नाटक मे सेहो पात्रगत आ कोटिगत संस्कृत-प्राकृत भाषाक उपयोग कयल गेल अछि मुदा एकर मैथिली अनुवाद करैतकाल कोटिगत भेद प्रदर्शित करबा लेल ने त' दू भाषाक प्रयोग कयल गेल अछि आ ने दू स्तरक मैथिलीक प्रयोग कयल गेल अछि। गद्य-संवादक अनुवाद स्वयं सम्पादके कयलनि अछि मुदा संस्कृत श्लोकक पद्यानुवाद-भावानुवाद कयल अछि सम्पादकक पूज्य पिता स्व. पं. विश्वम्भर झा। एहि पद्यमय भावानुवाद सँ एहि अनुदित नाटिकाक रूप-सौन्दर्य अप्रतिम भ' गेल अछि से कहल जा सकैत अछि।

मैलोरंग रेपर्टरीक ई प्रस्तुति अवश्ये भव्य भेल अछि जाहि मे वस्त्र-विन्यास, रूप-सज्जा, प्रकाश-व्यवस्था, गीत-नृत्यादि प्रभृतिक अभिनव आ आधुनिक रूपेँ समायोजनक विशेष महत्व अछि। एहि प्रदर्शन मे नृत्यक विवेकसम्मत आ बहुकोणीय उपयोग प्रशंसनीय अछि। राजा चन्द्रसेन, माकन्द प्रभृति प्राय: सभ पात्रक लेल मंच पर आगमन आ प्रस्थानकाल एकटा विशेष प्रकारक नृत्य-गतिचर्या देखि किरतनियाँ नाटक आ आसामक एकटा लोकनाट्यरूप 'तमाशा'क स्मरण स्वाभाविक अछि। मुदा किरतनियाँ नाटक आ 'तमाशा' नाटयरूप मे एकटा महत्वपूर्ण विशेषता छैक जे ओकर सभ पात्रक लेल ई प्रवेश-प्रस्थानमूलक गतिचर्या आवश्यक अछि आ प्राय: एकरंगाह अछि। एकर संगीत आ ताल मे ओतहुक लौकिक रूप आ

लोकपक्षक आवश्यक प्रमुखता रहैछ। मणिमंजरीक प्रस्तुति मे एहि लोकपक्षक, जे कि एकर निजपक्ष सेहो भ' सकैत अछि, तकर अभाव सन छल। संगीत-संयोजन मे सहयोगी वाद्यक रूप मे हारमोनियम, तबला आ घुघरूक उपयोग भेल अछि संगहि यथास्थान किछु 'रिकॉर्डेड रिद्म' सेहो राखल गेल अछि। वन्दना-गायन मे कर्णाटकी संगीतक छाया सेहो छल। गीतसभक गायनकाल मणिमंजरीक रूपराशिक जे वर्णन होइछ तकर प्रदर्शन हेतु समानान्तर दृश्यक रूप मे मणिमंजरीक नृत्याभिनयक मंचीय प्रदर्शन निश्चये एकटा निर्देशकीय चमत्कार अछि। राजा चित्रसेन द्वारा मणिमंजरीक चित्र बनयबाकाल सेहो एहि युक्तिक उपयोग कयल गेल अछि। एहि प्रदर्शनक अभिनय-पक्ष बेस सक्कत अछि। प्रवीण कुमार 'सिन्टू', प्रियदर्शिनी पूजा, मुकेश झा, ज्योति झा, जितेन्द्र झा, संतोष कुमार, नीरा कुमारी, प्रेमलता, रश्मि, मनोज पाण्डेय, अमित कुमार, रमण कुमार, विपुल कुमार, प्रवीण कुमार लोकनिक अभिनय सराहनीय अछि। संगीत-रचना मे दीपक ठाकुरक संयोजन ध्यानाकर्षक अवश्य अछि जे एकटा नव श्रुति-सुख दैछ मुदा नाट्य-संगीतक रचना मे श्रुति-सुख किंवा श्रुति-वैचित्रीक आभास आ निजताक आभास दुनू दू बात होइत छैक। राजीव रंजन झाक गायन आ दाउद राइनक नाट्य-सापेक्ष तबला-वादन समुचित अछि। लोकभाषा (मैथिली)क नाटक होइतहुँ एकर रचना आ प्रदर्शनक प्रकृति अपेक्षाकृत गम्भीर अछि, शास्त्रीय अछि। ताहि परिप्रेक्ष्य मे तबला, शंख, मृदंग (दुनू रिकॉर्डेड), घुघरू प्रभृतिक यथोचित-यथासम्भव उपयोग प्रशंसनीय अछि।

नाटकक स्वरूपगत क्रम-विकास केँ रंगमंचीय सीमा मे यथासाध्य विश्वसनीय आ रुचिगर बनयबाक क्रम मे राजीव मिश्राक ध्वनि-संयोजन सम्बन्धी विशेष-प्रभावक सोच आ श्रम दुनू सार्थक भेल अछि। नाटक केँ उत्कर्ष धरि पहुँचबा मे नृत्य-परिकल्पना (रमण कुमार-प्रियदर्शिनी पूजा) आ वस्त्र-विन्यास (प्रेमलता-अनिल मिश्रा) बेस सहयोगी बनल। आ एहि समस्त नाट्य-युक्तिक परिकल्पना क' एकर भव्य प्रस्तुतिक लेल निर्देशन (प्रकाश झा) निश्चये सराहनीय अछि। विद्यापतिक एहि नाटिकाक अंत रानी पद्मावतीक सहमति सँ होइत अछि मुदा मैलोरंगक एहि प्रस्तुतिक अंत रानी पद्मावतीक घनीभूत पीड़ाक मूक आ एकाकी (मुदा क्षणिक) प्रदर्शन सँ भेल अछि से विद्यापतिक एहि नाटिकाक अवश्ये निर्देशकीय विस्तार अछि। सूत्रधार-नटीक संवाद मे समकालत्व रखबाक 'स्कोप' बनायब नीक

उसरल अछि, नीक ओरियायल सेहो अछि।

नाट्यक्षेत्रक प्रायः सभ धारा नाटकक दर्शक आ प्रदर्शकक मध्य विद्यमान एकटा कृत्रिम दूरी केँ कम करबाक पक्षधर अछि। विद्यापतिक द्वारा एहि नाटिका मे सेहो एहि बिन्दु पर बहुत पूर्वहि विचार कयल गेल अछि से एहि नाटिकाक एकटा महत्वपूर्ण पक्ष अछि। एहि संवाद केँ देखल जाय-

सूत्रधार- .... आर्ये! चन्द्रसेन भूमिका केन परिगृहीता?

नटी - णं अज्जस ज्जेव कनिट्ठ भादुशा रसपेशलेन।[17]

अर्थात् सूत्रधार पूछैत अछि जे चन्द्रसेनक भूमिका के करताह? ताहि पर नटी कहैत अछि जे अहीँक (सूत्रधारक) छोट भाय रसपेशल। विद्यापतिक एहि प्रयोग-भाव केँ बूझि निर्देशक यथास्थान-यथारुचि विस्तारक छूट सेहो लेलनि अछि आ अंततः ई छूट नाटकक प्रस्तुति केँ भव्यता आ स्तरीयता प्रदान करैत छैक। मैलोरंगक ई प्रस्तुति मैथिली रंगकर्मक एकटा उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।

दिल्ली मे मैलोरंगक जखन स्थापना भेल छल ताहि सँ पूर्वहु ओतय मैथिलीक नाटक होइत रहल अछि। किरारी मे दशहरा मे संजय झा एकटा क' मैथिली नाटक कयल करथि। चन्दन झाक निर्देशन मे 'अंगना' नामक संस्था द्वारा (2002 मे प्रायः) 'यमपुत्र' (लेखक- विकास कुमार झा) कयल गेल छल। मुदा कोनहु रजिस्टर्ड संस्था द्वारा दिल्ली मे जे पहिल खेप नाटक भेल से छल- 'सामा-चकेवा' (लेखक- रोहिणी रमण झा, निर्देशक- संजय चौधरी)। 26 नवम्बर 2003 क' मण्डी हाउस मे एकर मंचन भेल छल जाहि मे लेखक-निर्देशक सेहो अभिनय कयने रहथि। ई स्थिति आ परिस्थिति मैलोरंगक स्थापना हेतु पृष्ठभूमिक काज जतेक कयने हो मुदा एतबा त' कहले जा सकैत अछि जे उक्त मंचनसभक पाछाँ उत्सवधर्मी रंगकर्मक मनोभाव प्रमुखता सँ सम्मिलित रहैत छल। नाटक लेल नाटक करबाक स्थिति प्रारम्भ कयलक मैलोरंग। मुदा एहि परिप्रेक्ष्य मे मिथिला मैत्री संघ (दिल्ली) आ मिथिलांगन (दिल्ली)क योगदान आ सक्रियता केँ अबडेरल नहि जा सकैत अछि, सेहो तखन, जखन सामा-चकेवा, सोन मछरिया, नैका-बनिजारा, उगना हॉल्ट, इथ-उथ (किंकर्त्तव्यविमूढ़) टुस्सा आ बाँझी, छुतहा घैल, काठक लोक, एक छल राजा, ओरिजनल काम, देसिल बयना प्रभृति नाटक एतय मंचित भ' चुकल अछि। एहने सन मारिते रास कारणक बलेँ आइ दिल्ली मे मैथिली रंगमंचक अपन 'रिपर्टरी'

छैक, अपन अभिनेता-समूह छैक, अपन टेक्नीशियन छैक आदि-आदि। तकरहि परिणामस्वरूप ई 'मणिमंजरी' समस्त मैथिल रंगकर्मीक प्रस्तुति अछि। ताहि अर्थ मे ई प्रस्तुति दिल्लीक मैथिली रंगकर्मक विकासमान रूपक परिचायक सिद्ध होइत अछि। विद्यापतिक एहि नाट्यकृतिक दर्शन-लाभ आनहु ठामक लोक केँ भेटय तकर संस्थागत आ समूहगत प्रयास अवश्ये होयबाक चाही। जँ सभ किछु ठीक-ठाक रहल त' ओ दिन दूर नहि जे हमरा लोकनि विद्यापतिक दोसरो नाट्यकृति- 'गोरक्षविजय'क मंचीय प्रस्तुतिक साक्षी बनब। आशा त' कयले जाय।

संदर्भ-संकेत :

1. मैथिली साहित्यक इतिहास, दुर्गानाथ झा 'श्रीश', पृ.-58
2. मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास, डा. दिनेश कुमार झा, पृ.-46
3. ज्योतिरीश्वर, सुरेश्वर झा, पृ.-19
4. प्रस्तावना (वर्णरत्नाकर), मैथिली अकादमी, पटना, पृ.-06
5. प्रकाशकीय (महाकवि विद्यापति), पं. शिवनन्दन ठाकुर, मै. अ., पटना
6. महाकवि विद्यापति, पं. शिवनन्दन ठाकुर, मै.अ., पटना, पृ.-35
7. प्राक्कथन (गोरक्षविजय), वि.रा.प. पटना, पृ.-ख
8. भूमिका (गोरक्षविजय), वि.रा.प. पटना, पृ.-18
9. प्राक्कथन (गोरक्षविजय), वि.रा.प. पटना, पृ.-क
10. प्राचीन भाषा नाटक संग्रह, ज.च. माथुर, पृ.-09
11. मणिमंजरी नाटिका, विद्यापति, मै.अ. पटना, पृ.-03
12. मणिमंजरी नाटिका, विद्यापति, मै.अ. पटना, पृ.-02
13. गोरक्षविजय (वि.रा.प. पटना), पहिल गीतक बाद आ अंत मे भरतवाक्यक बाद
14. मणिमंजरी नाटिका, विद्यापति, मै.अ. पटना, पृ.-02.
15. भूमिका (मणिमंजरी), मै.अ. पटना, पृ.-छ
16. A History of Maithili Literature, Dr Jaykant Mishra, पृ-311.
17. मणिमंजरी नाटिका, विद्यापति, मै. अ. पटना, पृ.-05

कर्णामृत, वर्ष-33, अंक-132,
अक्टूबर-दिसम्बर 2013, कोलकाता

•

कविवर जीवन झाक नाटकक काव्यतत्व

नाटक केँ परेखब एकटा नितान्त भिन्न प्रक्रिया अछि जे कि साहित्यक अन्य विधा सँ एकरा बोधक स्तर पर फराक करैत अछि। नाटक मे साहित्य-मूल्य आ मंच-मूल्य दुनूक अनिवार्य उपस्थिति होइछ। एहि ठाम हम मानैत छी जे नाटकक मंच-मूल्य ओकर प्रधान तत्व अछि आ साहित्य-मूल्य ओकर सहयोगी तत्व। नाटक केँ दृश्यकाव्य कहला सँ सेहो एही स्थापना केँ बल भेटैत छैक।

साहित्य मे काव्य दू अर्थ मे प्रयुक्त होइत रहल अछि। पहिल अर्थ मे ई उपरूपकक एकटा भेदमात्र अछि जे एकहि अंकक होइछ। एकर नायक ललित आ उदात्त होइछ। एहि मे हास्य आ श्रृंगार रसक प्राचुर्य रहैछ संगहि एकर नायक विप्र, अमात्य किंवा वणिक् एवम् नायिका कुलजा किंवा वेश्या होइत अछि। एहि मे विदूषक आवश्यक, संगहि भग्नताल, मात्रा आ लास्यक प्रयोग अपेक्षित। अग्निपुराण, भावप्रकाश किंवा नाट्यदर्पण सेहो काव्यक एही अर्थ आ अभिप्राय केँ समर्थन करैत अछि। मुदा काव्येक दोसर अर्थ लेल मेदिनी कोष 'कवेरिदं कार्यभावो वा' कहि कवि द्वारा सम्पन्न कार्य केँ काव्य कहैत अछि। अभिनवगुप्त सेहो 'कवनीयं काव्यं' कहि एकरहि समर्थन करैत छथि। अग्निपुराणक 'अपारे काव्य संसारे कविरेव प्रजापतिः'[1] उक्तिक अनुसार कविक कर्म केँ काव्य आ कवि केँ एहि संसारक प्रजापति कहल गेल अछि। संस्कृत साहित्य मे सेहो नाटक केँ प्रथमतः काव्ये मानल गेल अछि। यद्यपि ई मान्यता नाटकक मंचीय मूल्य आ एकर स्वरूप केँ गौण सिद्ध करैत छैक जाहि सँ आधुनिक रंगमंच केँ सदैव असहमति रहलैक अछि तथापि रसगंगाधरकार पंडितराज जगन्नाथ- 'रमणीय अर्थक प्रतिपादक शब्दसमूह' केँ काव्य कहैत छथि। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ- 'काव्य केँ अनिवार्य रूपेँ रसात्मक होयब' मानैत छथि।[2] अरस्तू काव्य केँ प्रकृतिक अनुकृति कहैत छथि। किछु अन्य भारतेतर विद्वान एकरा अंतःकरणक विस्फोट आ परिस्थितिक प्रतिक्रिया मात्र मानैत छथि। किछु आधुनिक विद्वान काव्य केँ आनन्दक कोटि मे रखैत एकरा एहेन असत्य भाषण कहैत छथि जे आनन्दप्रद अछि। हेमराज त' काव्य केँ

सुन्दर झूठ पर्यन्त कहि देने छथि। एवंक्रमे ई देखल जाइत अछि जे संस्कृत साहित्यक प्राय: सभटा स्थापना काव्य केँ आनन्द-प्राप्तिक एकटा शिष्ट साधनमात्र सँ बेसी किछु नहि कहैत अछि। आधुनिक नाटक आ रंगमंचक स्वरूप, सौन्दर्य आ उद्देश्यक प्रचलित अवधारणा केँ देखैत एहि ठाम असहमत अवश्य भेल जा सकैत अछि।

जखन ई कहल-सूनल जाइछ जे 'काव्येषु नाटकं रम्यम्' त' ई ताकब स्वाभाविक अछि जे ओ कोन काव्य-तत्वसभ अछि जे नाटक केँ रम्य बनबैत अछि। एहि क्रम मे किछु तत्वक प्रमुखता सँ नाम लेल जा सकैत अछि। जेना- नाटकक कथ्य, भाषा, शिल्प, प्रवाह, संवाद, संवादक गद्य-पद्यरूप, पद्यक गुण, रीति, शक्ति, प्रयोजनादि, पद्य मे रस, अलंकारादि, नायक-नायिका विमर्श, नाटकक सामाजिक सरोकार प्रभृति।

पं. जीवन झा आधुनिक मैथिली नाटकक आदि पुरुषक रूप मे देखल जाइत छथि। किएक देखल जाइत छथि, ओहि द्रष्टा लोकनिक नाटकक मापदंड की छनि, नाटकक आधुनिकताक बोध केहन छनि से प्रश्नसभ हमरा लेल आइयो अनुत्तरिते अछि, अशांते अछि। हिनक मैथिली सट्टक केँ छोड़ि शेष तीनू नाटक उपलब्ध अछि। 'सामवती पुनर्जन्म' छओ अंकक, 'सुन्दर संयोग' चारि अंकक आ 'नर्मदा सागर' अपूर्ण अछि। सामवती पुनर्जन्मक कथातत्व एकटा पौराणिक आख्यान अछि जाहि मे अंगीरस श्रृंगारे अछि मुदा भक्तिरस एकटा अन्तर्धारा जकाँ प्रवाहित छैक। कथाक रूप रीतिकालीन अछि। कहबा मे हर्ज नहि जे मित्रद्वय सुमेधा-सामवानक अर्थानुसन्धानक क्रम मे सामवानक स्त्रीरूप धारण करब, दान-दक्षिणा ग्रहण करब, सामवान केँ पुन: पुरुषरूप मे नहि आयब सन कथावस्तु एकर नाट्यकथ्य केँ अविश्वसनीय बनबैत अछि। ताहि तुलना मे 'सुन्दर-संयोग' आ 'नर्मदा सागर' कने बेसी विश्वसनीय लगैत अछि, बेसी परिपक्व सेहो अछि। मुदा 'नर्मदा सागर' केँ सट्टक कहल गेल अछि, नाटक किंवा अन्य प्रभेद नहि। सट्टकक शास्त्रीय परिभाषा अछि जे ई एहन उपरूपक अछि जाहि मे प्राकृत भाषाक प्रयोग होइछ, प्रवेशक आ विषकम्भकक अभाव रहैछ, अद्भुत रसक प्रधानता रहैत अछि आ एकर अंक यवनिका मे विभक्त रहैत अछि।[3] मुदा 'नर्मदा सागर'क नाट्यभाषा मैथिली अछि, एहि मे एकटा गीत संस्कृत मे अछि मुदा प्राकृत त' कतहु नहि अछि।

विषकम्भक[4] सेहो अछि संगहि एकर अंक केँ यवनिका नहि अंके कहल गेल अछि। तखन ई सट्टक किएक कहल गेल अछि से ने जानि!

आब कविवरक नाट्यभाषा केँ देखल जाय। कविवरक कालखंड छनि 1848-1912 ई.।[5] नाटकक प्रकाशन तिथिक अनुसार नाटकक क्रम होइछ सुन्दर संयोग (1904 ई.), नर्मदा-सागर (1906 ई.) आ सामवती पुनर्जन्म (1920 ई.)। सामवती पुनर्जन्म केँ सुन्दर संयोग सँ पूर्वक रचना सेहो कहल गेल अछि।[6] हिनक नाट्यभाषा मे गद्य आ पद्य दुनू व्यवहृत भेल अछि जाहि क्रम मे क्रियापदक संक्षिप्त रूप, संश्लिष्ट क्रियापदक प्रयोग, किछु मध्यकालीन भाषारूप प्रभृति, डा. रामदेव झाक कथन उचिते छनि। मुदा कविवरक भाषा ततेक प्रांजल आ संस्कृतनिष्ठ अछि जे ओ आधुनिक नाटकक आ कि आधुनिक रंगमंचक भाषा नहि भ' सकल अछि। कविवरक कार्यस्थल बनारस छलनि आ हिनक कालखंड हिन्दीक भारतेन्दु युग आ द्विवेदी युगक प्राय: मध्यवर्ती समानान्तर छनि। तहियाक हिन्दी नाटक भाषा सँ बेसी बोलीक आग्रही होबय लागल छल आ नाट्य-संवादक भाषा सँ बोली दिसक यात्रा समादृतो भ' रहल छल। मुदा कविवरक नाटकक संवाद-भाषा अपन भाषाशास्त्रीय शुद्धता आ संस्कृतनिष्ठा सँ बाहर नहि भ' सकल अछि। ई परम्परा परवर्ती नाटककारहु केँ 5-6 दशक धरि प्रभावित कयने रहल। कविवर जीवन झा किरतनियाँ नाटकक अवसान किंवा मद्धिम पड़लाक बादक नाटककार छथि। किरतनियाँ नाटकक एकटा प्रमुख विशेषता अछि बोलीक रंगमंच, जे कि मैथिली नाट्य-परम्पराक प्रमुख निजता अछि मुदा कविवरक नाटक एहि निजताक आग्रही नहिए जकाँ अछि। संस्कृत नाट्य-परम्पराक अवसानक उपरान्त किरतनियाँ नाट्य-परम्परा अपन परिचिति आ प्रभाव स्थापित कयलक जे कि यात्रा, लावणी, तमाशा, माचा, अंकिया प्रभृति सम्पूर्ण भारतक नाट्यशिल्प आ शैलीक उपजीव्य बनल मुदा कविवरक नाट्य-रचना मैथिलीक एहि निज शैली मे नहि अपितु संस्कृत नाट्य-शिल्प आ पाश्चात्य नाट्य-शिल्पक मिश्रण सँ भेल। 'सुन्दर संयोग'क अंतिम (चारिम) अंक मे पर्दा खसलाक बादहु लगातार नओटा दीर्घकाय गीत आ पुन: दू-चारिटा संवादक बाद दू-दूटा बारहमासाक समावेश एहि नाटकक अपनहुँ शिल्प आ प्रवाह केँ अवरुद्ध करैत छैक। एकटा व्यावहारिक यथार्थ अछि जे नाटक मे कोनहु दीर्घकाय गीत ओकर गति केँ प्रत्यक्षरूपेँ

प्रभावित करैत छैक।

कविवरक नाटक मे गद्य आ पद्य दुनू प्रकारक संवाद अछि। नाटकक कथ्यानुरूप हिनक बेसी पात्र शिष्ट अछि, धीर अछि आ विज्ञ अछि तेँ तदनुकूल संवादो अछि। विज्ञ एहि कारणे जे हुनका लोकनि लेल दोहा, चौपाइ आ श्लोक मे त' संवाद गढ़ले गेल अछि, बहुत रास पात्र त' मंचस्थे भ' गीत पर्यन्त गबैत अछि। संवादक क्रम मे आयल दू-चारि पाँतिक दोहा-चौपाइ सभ अन्यत्र प्रयुक्त गीत सभ सँ बेसी सहज, गतिशील आ प्रयोगिक अछि। संवाद मे आयल गद्य-पद्यरूप नाटक केँ विषमतलीय बनबैत छैक जे कि नाटकक मंचीय मूल्यक संदर्भ मे ओकर गुणपक्ष अछि।

नाटक मे प्रयुक्त गीति-रचना कोनहु स्वतंत्र गीति-रचना सँ प्रकृतिगत भिन्न होइत अछि। से होयबाको चाही कारण ओ गीतसभ अपन पूर्वापर संदर्भक संग ओहि नाटकेक कथ्य आ प्रवाह मे गुम्फित रहि ओकर अंगोपांग बनल रहैत अछि। तेँ एहि गीत किंवा पद रचना सभक मूल्यांकन मे स्वतः निर्धारित एकटा सीमा रहैछ। कविवर अपन तीनू नाटक मे महेशवाणी, तिरहुति, चैत, लगनी, उचिती, योग, वटगमनी, नचारी, परिछनि, बारहमासा, कजरी, विहाग प्रभृति लोकगीत-लोकभासक प्रयोग कयने छथि त' दोसर दिस बरबा, सबैया, दोहा, जयकरी, चौपाइ, चौपइ, होरी, मल्लारी, पृथ्वी, मल्लारदण्डक, शार्दूलविक्रीडित, जाजमन्ती, सोरठ, कवित्त, धनाक्षरी, वंशस्थ प्रभृति वार्णिक-मात्रिक छन्दक सेहो उपयोग कयने छथि मुदा बेसी झुकान दोहा आ चौपाइ दिस छनि। एवंक्रमे ईहो कहल जा सकैछ जे कविवर अल्पप्रचलित-बहुप्रचलित दुनू प्रकारक छन्दक उपयोग कयने छथि। एकर अतिरिक्त संस्कृत मे श्लोक आ गजलक संगहि भारतीय संगीत-परम्पराक राग-रागिनीक उपयोग सेहो कयल गेल अछि।

जँ कविवरक काव्य-प्रयोजनक संदर्भ मे तीनू नाटक केँ देखी त' तीनू नाटक सुखांत प्रकृतिक नाटक अछि। तीनू मे सूत्रधार अछि जे कि नाटकक प्रस्ताव क' सम्पूर्ण नाटक सँ विलुप्त भ' जाइत अछि तेँ एहि नाटकसभक तथाकथित सूत्रधार वस्तुतः प्रस्तावक अछि, सूत्रधार नहि। एहि सूत्रधाररूप प्रस्तावकक प्रस्तावना केँ जँ देखल जाय त' कविवरक नाट्यप्रयोजन सभाक मनोरंजन आ परितोषण धरि सीमित अछि।[7] प्रथम दुनू नाटक मे सूत्रधाररूप प्रस्तावक केँ नाटक मोन पड़ि जयबाक युक्ति आजुक रंगमंचीय

संदर्भ मे अतिनाटकीयता सन अछि।

आब किछु गप कविवरक रसपक्ष पर। भारतीय काव्यशास्त्र मे रसक सर्वप्रथम विवेचन भरतमुनि नाट्यशास्त्र मे कयने छथि जतय विभाव, अनुभाव आ व्यभिचारी भावक संयोग सँ रसनिष्पत्तिक बात कहल गेल अछि।[8] श्रीरूपगोस्वामीक भक्तिसामृतसिन्धु आ उज्ज्वलनीलमणि ग्रंथक आधार सँ ई कहल जा सकैत अछि जे काव्यक पाठ, श्रवण आ कि अभिनय देखला पर विभावादिक संयोग सँ निष्पन्न होइत आनन्दात्मक चित्तवृत्तिक नाम थिक 'रस'। कविवरक नाटक मे श्रृंगार आ करुण रसक प्रधानता आ प्रचुरता अछि। श्रृंगार मे संयोग श्रृंगार कम आ विप्रलम्भ बेसी महत्व पओने अछि। नायक-नायिकाक स्वरूप वर्णन यथासम्भव शिष्ट, सुकोमल आ मर्यादित अछि।[9] सुन्दर संयोगक प्रिय-मिलनक वर्णन (पृ. -125, वटगमनी) मे विरहोपरांत मिलनक तृप्तिक शिष्ट वर्णन अद्‌भुत अछि। ठाम-ठीम अन्यो रस जेना हास्य (सामवती पुनर्जन्मक बन्धुजीव-चपला संवाद, नर्मदा सागरक घटक-विद्यार्थी संवाद), वीर (सामवती पुनर्जन्मक कलियुग-बन्धुजीव संवाद), भयानक (सामवती पुनर्जन्म, पृ.-74, 85), अद्‌भुत (सामवती पुनर्जन्म, पृ.-86), रौद्र (सुन्दर संयोग, पृ.-125) प्रभृति रस सेहो समाविष्ट अछि। व्यभिचारी भाव मे ग्लानि, आलस्य, दैन्य, मोह, स्मृति, धैर्य, हर्ष, आवेग, पारवश्य, कार्पण्य, गर्व, औत्सुक्य, चपलता प्रभृति भाव सेहो यथास्थान वर्णित अछि। नान्दी त' शिवक आराधना, स्तुति आ कि शरणागतिक ब्याजेँ आकंठ भक्तिरस मे डूबल सन अछि। तीनू नाटकक नायक धीर कोटिक अछि मुदा धीरोद्धत नहि। हिनक नायिका प्रोषितपतिका, विरहोत्कंठिता मुदा स्वकीया छनि तेँ प्रेम, मान, विरहादि मे एक तरहेँ सीमा-संकोच देखल जाइछ। विरहिणी नायिकाक बहुकोणीय रूप आ स्थितिक वर्णन सँ भरल गीतसभ अछि। विरह-तापक शमन हेतु चानन लेपब, क्षण-क्षण वरिस भरि लागब, कुल-परिजन-परिवारक सुधि बिसरब, उठि-उठि क' बाट ताकब, चन्द्रोदय सँ चित्त चंचल होयब, बसातक सिहकला सँ विरहाग्नि केँ पजरब प्रभृति उदाहरण देखल जा सकैत अछि।

कविवरक तीनू नाटक मे जतेक गीत-गजल अछि ताहि मे शब्दगुण आ अर्थगुण प्रमुखता सँ प्रयुक्त भेल अछि। लालित्य आ माधुर्यगुणक प्रधानता धीरललित नायक आ तदनुकूल नायिकाक विशेषते अछि। हिनक

काव्य मे, विशेष क' दोहा-चौपाइबला संवाद मे लक्षणा आ व्यंजना सँ बेसी अभिधा शब्दशक्तिक उपयोग भेल अछि। कतहु-कतहु उपादान लक्षणा सेहो व्यवहृत भेल अछि। मुदा जँ काव्य-दोषक दृष्टि सँ देखबाक हिम्मति करी त' एकाध ठाम किछु दोष अवश्य अभरैत अछि। 'सामवती पुनर्जन्म'क बन्ध जीव-चपला संवाद मे ओजगुण भरल शब्द सभक प्रयोग जेना- एकट्ठा, ठट्ठा, चुस्की, फुस्की, धक्का, धोंछी प्रभृति तुकांत शब्द। 'सुन्दर संयोग'क सौम्य आ धीर नायक सुन्दर मिश्रक मुँहे महिला पात्र कुसमी कें दुष्टि, लण्ठिनी कहायब, कुसुमीक मुँहे कादम्बरी कें 'छिनारि' कहायब, अभिरानी द्वारा कादम्बरी कें 'छुच्छी' कहायब। हम एहि ठाम संवादक शाब्दिक शुद्धताक आग्रही नहि छी मुदा पात्रानुकूल संवाद गढ़बाक आग्रही त' छीहे। दूटा गीत मे मात्राक्षय अभरैछ जेना- सुन्दर संयोगक पृष्ठ-107क गीतक तेसर पाँति आ नर्मदा-सागरक पृष्ठ-139क नान्दी गीतक चारिम पाँति।

कविवरक काव्य मे शब्दालंकार आ अर्थालंकार दुनूक प्रयोग भेल अछि। अनुप्रास मे-

- विरचल चीकन चौरस चाकर चानन पोर (पृ.-74)
- गुरु गुन गौरव गौरि गरीबिनी करतहि कोन प्रकार (पृ.-78)

अर्थालंकार मे उपमालंकार-

- जनु हिय बेधय कुसुम शरासन (पृ.-67)
- पक्वविम्बफल दशसनक छदने रे (पृ.-81)
- दामिनी सभ तनु पहिरल पिय अनुराग पटोर (पृ.-74)
- लता जनु लपटय तमाल अभिराम (पृ.-90)
- विधि सुकृति रतन राखल सुठाम (पृ.-104)

हिनक काव्यकर्मक किछु आओरो विशेषता अछि जे विभिन्न ठाम वर्णनक क्रम मे आयल अछि। जेना- वसंत ऋतुक वर्णन, वर्षा ऋतुक वर्णन, होरी, प्रथम रातिक मनोभाव, मिलनक उपरांत विछोहक शंका, घटकक उक्तिक बहन्ने समाजक शैक्षिक स्थिति, विरहदग्धा नायिकाक आभ्यंतरिक स्थिति, शरणागतिक क्रम मे पश्चाताप आ वर्जनाक प्रतिज्ञा, समता विचार, स्त्री शिक्षा, स्त्रीक स्वावलम्बन आदि। मुदा ई समस्त विशेषता

कविवरक नाटकक मूल स्वर नहि छनि।

नाटकीय काव्यक मूल्यांकन ओकर कथ्यक सीमे मे रहि क' कयल जायब उचित छैक। नाटकक कथ्य ओकर काव्य कें प्रभावित करैत छैक। कथ्य आ काव्यक एहि तादात्म्यक संग अपन आलेखक एकटा असमंजस राखय चाहब। कविवर जीवन झाक काल भारतीय स्वतंत्रता संग्रामक काल रहल अछि। तत्कालीन मारिते रास दैशिक-वैश्विक परिस्थिति एहि संग्राम कें सुनगा रहल छल। कविवर सँ प्राय: 6-7 सय वर्ष पूर्वक आदि उपलब्ध किरतनियाँ नाटक 'धूर्त्त समागम' संस्कृत नाटक सँ फराक चरित्र अपना क' धर्म आ सत्ताक भ्रष्टाचरण पर गम्भीर कटाक्ष करैत अछि, धर्म एवम् न्याय-व्यवस्था मे नशाखोरी आ स्त्रीक प्रति वासनामयी आसक्ति सँ भेल घृणित पतनक पकठोस कथा कहैत अछि मुदा एतेक रास काव्यशास्त्रीय ताकहेरक अछैत कविवर जीवन झाक नाट्य-कथ्यसभ मनोविलासे धरि सीमित रहल से जरूरे अचम्भित करैत अछि। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम मे लागल मिथिला लेल कविवरक तीनू नाटक मे विवाहक आवश्यक उपस्थिति, पुरुष (सामवान) कें स्त्री (सामवती) बनि जायब, हथउठाइ दान-दक्षिणा ग्रहण करब सन तथ्य अचंभित त' करिते छैक, एहि नाटक सभ कें आधुनिक नाटक कहबाकाल असमंजस मे सेहो राखि दैत छैक। कविवरक नाट्य-कथ्यसभ हमरा लोकनिक घरैया दृष्टिए जतबा प्रशंसनीय रहल हो मुदा जँ विचार करबाक चास-बास कने आरो चाकर करी आ एकर तुलना अन्य भाषाक तत्कालीन नाट्य-चेतनाक संग करी त' ई असमंजस बढ़िते चलि जाइत छैक। एहन स्थिति मे मैथिलीक आधुनिक कहल जायबला एहि नाटकसभक एतेक दुब्बर आरम्भ, सेहो निज शैली मे नहि अपितु आयातित शैली मे, से आश्चर्यित त' करिते छैक, नाटकक आधुनिकताक संदर्भ मे पुनर्विचार करबा लेल मारिते रास आधार सामग्री सेहो उपलब्ध करा दैत छैक।

आ अंत मे एक नजरि एकर गेयधर्मिता पर। महाकवि विद्यापति, गोविन्द दास आ कि सूरदास सहित अष्टछापक भक्तकवि लोकनि अपन-अपन भाषिक चेतनाक संग कृष्ण-साहित्य कें समृद्ध कयल। अष्टछापक कविक लेल कृष्णक बाललीला आ तकर विभिन्न पक्ष एकटा प्रमुख विषय रहल छल। अन्य भाषा मे सेहो एहि प्रकारक रचनासभ भेल। मुदा कविवर जीवन

झाक एकटा पद, तकर विषय, बिम्ब, चमत्कार, ओजन, रसपक्ष आ मोहक गेयता सहित नायक कृष्णक वाल मनोदशाक निर्दोष चित्र अन्यत्र भेटब जँ असम्भव नहि त' मोसकिल अवश्ये अछि–

(गीत तिरहुति)

राधा कञ सिरिजल विधिवाला, नेनमति ठानल मदनगोपाला।
ककरो दैव बनाओल बामा, कातर हृदय होथि घनश्यामा।।

उर गुरु पीन पयोधर तनिकाँ, बलहुँ भार हिय ह्वै अछि हिनकाँ।
हुनका छैन्ह जघन गुरु भारा, हिनक पयर पुनि चलय न पारा।।[10]

संदर्भ संकेत :

1. अग्निपुराण, 339 : 10
2. साहित्यदर्पण, 1 : 3
3. भाव प्रकाशन (शारदातनय) : 9म अधिकार
4. नर्मदा-सागर (सट्टक), मै. अ., पटना, पृ.-144
5. पूर्वरंग : कविवर जीवन झा रचनावली, मै.अ. पटना, पृ.-5
6. पूर्वरंग : कविवर जीवन झा रचनावली, मै.अ. पटना, पृ.-41
7. पूर्वरंग : कविवर जीवन झा रचनावली, मै.अ. पटना, पृ.-47, 101,
8. नाट्यशास्त्र : 6म अध्याय
9. कविवर जीवन झा रचनावली, मै.अ. पटना, पृ.-104
10. कविवर जीवन झा रचनावली, मै.अ. पटना, पृ.-87

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय सभागार, पटना मे
27-28 फरवरी 2014 क' आयोजित
प्रथम आधुनिक मैथिली नाटककार कविवर जीवन झा केन्द्रित
द्विदिवसीय पुण्यशती संगोष्ठीक दोसर दिन (28 फरवरी 2014)क
चारिम सत्र मे पठित आलेख

•

एकल-नाट्य आ मैथिली रंगकर्म

'नाट्य' शब्द 'नट्' धातु सँ निष्पन्न अछि। नाट्याचार्य धनंजय अवस्थाक अनुकरण केँ नाट्य कहैत छथि– अवस्थानुकृतिर्नाट्यम्। ई अनुकृति आंगिक, वाचिक, सात्विक आ आहार्य, एहि चारि प्रकारक चेष्टा सँ कयल जाइछ। नाट्य केँ आँखिक विषय होयबाक कारणे 'रूपक' सेहो कहल जाइछ। नाट्यशास्त्रक मे एकर दसटा भेद अछि– नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार, वीथी, प्रहसन, डिम, ईहामृग आ अंक। एकर अतिरिक्तहु नाटिका, उपरूपक, प्रकरणिका, त्रोटक, सट्टक, गोष्ठी, रासक, प्रस्थानक, उल्लोप्यक, प्रेक्षणक, मल्लिका, डोम्बी, पारिजातक, छलिकादि प्रभृति किछु आओरो प्रभेदक चर्चा भरतमुनि अपन नाट्यशास्त्र मे कयने छथि। नाट्यभेद-प्रभेदक ई भारतीय दृष्टि-सौन्दर्य एकर गुण-चरित्रादि पर आश्रित अछि।

मध्यकालक किछु नाट्यचिन्तक नाटकक स्वरूप-नियमादि विधान केँ नजरि मे राखि एकरा दू वर्ग मे वर्गीकृत कयने छथि– शास्त्रीय आ लोकनाट्य। शास्त्रीय-नाट्य जतय नाट्यशास्त्रीय नियमक प्रबल पक्षधर अछि ओतहि लोकनाट्य अपन मंचन सौविध्यक अनुसार ओहि शास्त्रीय नियमक पालन, सुधार अथवा निरसनक व्यवस्था तय करैत अछि। पूर्णांकी आ एकांकी नाम सँ एकटा आओर वर्गीकरण अछि जे कि एकर रचनाक दृष्टिए वर्गीकृत कयल गेल अछि। पूर्णांकी नाटक मे जतय कम-सँ-कम चारिटा अंक रहैत अछि ओतय एकांकी एकहि अंक मे समटल रहैत अछि। यद्यपि आधुनिक रंगमंच मे ई अंक-विभाजन शून्यप्राय भ' गेल अछि तथापि जखन 'पूर्णांकी' आ 'एकांकी' नाटक केँ प्रस्तुतिक समय सँ जोड़ि क' देखल जाइछ, पूर्णांकी केँ पूर्णावधि (2-3 घंटाक) नाटक आ एकांकी केँ अल्पावधि (एकाध-घंटाक) नाटक गछल-बूझल जाइछ त' से ने त' न्यायसंगत आ ने युक्तिसंगत। कारण आधुनिक रंगमंच मे ई सम्भव भ' चुकल अछि जे एकहि अंकक नाटक पूर्णांकी सन समय लैत अछि। जेना- पाथेय, मधुयामिनी (दुनूक लेखक- गुणनाथ झा) भफाइत चाहक जिनगी, पहिल साँझ (दुनूक लेखक- सुधांशु 'शेखर' चौधरी) आदि।

एकर अतिरिक्त किरतनियाँ नाटक, लीला नाटक, अंकिया नाट, दसौत, रमखेलिया, ओझापालि (ओजापालि), विदापत प्रभृति लोकधर्मी वर्गीकरण सेहो नाट्य-चिन्तन मे अपन जग्गह बनौने रहल अछि। भने आइ ओ सुप्त, गुप्त किंवा लुप्त किएक ने हो। नाट्यमंचक अवधारणा, अवस्थिति, प्रकृति आ विन्यासक नजरि सँ एकटा आओर महत्वपूर्ण वर्गीकरण अछि– मंचीय नाटक आ चौबटिया नाटक (जकरा हिन्दी मे नुक्कड़ नाटक कहल जाइछ)। ई एकटा मंचसापेक्ष वर्गीकरण सेहो अछि। संवादक औचित्येक आधार पर नाटक केँ आओरो दू भाग मे बाँटल जा सकैत अछि- वाक् नाटक आ मूक नाटक। वाक् नाटकक अभिप्राय अछि ओहेन नाटक सँ जाहि मे पात्र द्वारा ओकर संवाद उच्चरित होअय आ मूक नाटक सँ अभिप्राय अछि संवादहीन नाटक।

उपरोक्त जतबा वर्गीकरण अछि से नाटकक स्वरूप-विधान-गुण-रीति-नीति आ कि शास्त्रीय-अशास्त्रीय मापदंड पर अछि। एहू ठाम नाटकक वर्गीकरण केँ देश-काल-पात्र सापेक्ष राखल गेल अछि। मंचीय नाटक आ चौबटिया नाटकादि एकर देश सापेक्ष वर्गीकरण अछि। रूपक-रासक-प्रभृति प्रभेद कालसापेक्ष वर्गीकरण अछि। आ तेसर वर्गीकरण अछि पात्रसापेक्ष। एहि ठाम कुलशेखर वर्मन मोन पड़ैत छथि। दशम शताब्दी मे जाहि समय कुलशेखर वर्मन संस्कृत नाटक केँ जनसाधारण हेतु बोधगम्य बनयबा लेल मूल नाटकक संग स्थानीय भाषा मे ओकर छायानुवाद क' रंगशालाए मे प्रस्तुत करबाक परम्परा प्रारम्भ कयल जकरा 'कुटियाट्टम' कहल गेल, ताही कालखण्ड मे केरल मे मुटियेट्टू, तियाट्टू, पुराट्टू, यात्रकलि प्रभृति लोक प्रदर्शनक जनसमूह मे परम्परा चलल छल जाहि मे विदूषक द्वारा तत्कालीन समाज पर व्यंग्य एकर अद्भुत विशेषता छलैक। एकर विकास मे नम्बूदरी ब्राह्मण लोकनिक योगदान कएक अर्थ मे प्रशंसनीय अछि। मिथिलाक रंगमंचीय व्यवस्था लेल किछु विशेषरूपेँ अनुकरणीय सेहो।

ओही कालखण्ड मे ओतहुक मंदिर मे चाक्यार नामक नट लोकनिक एकल नृत्याभिनय बेस प्रचलित भ' गेल छल। ई चाक्यार लोकनि चम्पू आ भाणक शैली मे एसकरे विभिन्न पात्रक अभिनय करथि। अभिनयक ई उत्कृष्ट परम्परा आइयो अछि। चाक्यारक ई अभिनय 'कुतू' कहल जाइत छल।[1] यद्यपि कुतूक वर्तमानकालिक स्वरूप बहुत बदलि गेल अछि। से स्वाभाविक सेहो। मुदा एतबा त' स्पष्टे अछि जे एकर अभिनयक

दीर्घकालीन परम्परा नाट्य-क्षेत्रक एकटा महत्वपूर्ण घटना मे सँ छल जतय सँ एकल-नाटकक एकपेरिया फुटकि जाइत अछि। दशम शताब्दी सँ चलि अबैत ई परम्परा न्यूनाधिक सभ भाषाक रंगकर्म केँ प्रभावित कयलक। सभ ठामक रंगमंच एहि अभिनय-परम्पराक सौन्दर्य-बोध केँ अकानय लागल, एकर रंगमंचीय पक्ष केँ आत्मसात क' तकरा मंचीय उपस्थापन देबय लागल आ ताही क्रम मे प्रारम्भ भ' गेल एहि अभिनव परम्परा केँ नाटकक एकटा नव 'फॉर्मेट' मे सृजित-परिभाषित-स्थापित करबाक एकटा नव रंगमंचीय प्रयास। ताहि प्रयासक सुखद परिणाम अछि 'एकल-नाट्य'। भारतीय परम्पराक किछु लोकधर्मी चिन्तक एकल-नाट्यक सम्पर्क ढोल बजा क' अल्हा गबैत नट लोकनि सँ जोड़ैत छथि त' किछु चिन्तक एकरा पाण्डवाणीक प्रस्तुति सँ जोड़ैत छथि। किछु चिन्तक एहि एकल-नाट्यक कारणरूप मे नाट्यदलक अभाव, रंगकर्मक व्यक्तिवाची अवधारणा, पारिवारिक किंवा रंगमंचीय नैराश्य (फ्रस्टेशन) आदि केँ सेहो रेखांकित करैत छथि।

यद्यपि एहि बात पर त' सहमत भेले जा सकैत अछि जे नाटक जेँ कि प्रयोग-प्रदर्शन आदिक विधा अछि तेँ एकरा कोनहु ठोस नियमावली अथवा व्याकरण मे बान्हब सम्भव नहि। कदाचित उचितो नहि। कारण, प्रयोगसापेक्ष कोनहु विधाक प्रयोगोपरांत परिणाम कोनहु नियमक शत-प्रतिशत मुखापेक्षी नहि होइत अछि। नाटक सेहो नहि अछि। एहि विद्या मे कोनहु नियम-सिद्धान्तादि संग असहमतिक गति सदैव सहज आ तीव्र होइत अछि। तथापि किछु मौलिक चारित्रिक सौन्दर्य होइत छैक जाहि पर एकर स्वरूपगत वैशिष्ट्य आश्रित रहैत छैक जे कि ओकर निजताक पहिचान सेहो छैक। एहने सन किछु तत्व एकल-नाटकक संग सेहो संयुक्त अछि। मुदा एकर मौलिक संरचना सँ त' ई स्पष्ट भ' जाइत अछि जे समूह नाटक मे जतय एकाधिक अभिनेताक खगता होइछ ततय एकल नाटक मे एकहि पात्र द्वारा अभिनय कयल जाइछ।

नाट्य-लेखनक आवश्यक मान्यता अछि जे दू पात्रक सृष्टि आ कि स्थापना एक रंग नहि होयबाक चाही। कतहु-कोनहु स्तर पर दुनूक मध्य वैविध्य अवश्ये देखार रहबाक चाही। अभिप्राय ई जे विभिन्न पात्रक गढ़नि मे नाट्य-लेखक लोकनि केँ पुनरावृत्ति सँ परहेज करबाक चाही। मुदा एकल-नाट्य मे एकहिटा पात्र केँ कएकटा चरित्रक अभिनय करय पड़ैत छैक आ से सभ स्थिति मे सम्बन्धित पात्रक चरित्र केँ अक्षुण्ण रखैत। एहि

स्तरक अभिनय मे विभिन्न चरित्रक निर्वाह करब बेस भरिगर काज अछि। एहि ठाम अभिनय-दक्षता केँ प्रमाणित करबाक खगता त' छैके संगहि एहि क्रम मे कएकटा गौण तत्वक सहयोग सेहो लेल जाइछ। दू चरित्रक अभिनय प्रदर्शित करबा लेल अभिनेता अपन 'जोन' (चरित्र विशेषक अभिनय करबा लेल निर्धारित मंचीय प्रक्षेत्र) बदलैत अछि। अपन संवादक 'टोन' सेहो बदलि क' दू चरित्रक प्रभाव उत्पन्न कयल जाइत अछि आ पुनः अपन पुरना प्रक्षेत्र मे आबि अपन पूर्वक चरित्र केँ स्थापित करैत अछि। एक चरित्र सँ दोसर चरित्र मे जयबाक ई यात्रा वस्तुतः ओहि चरित्रक मनोदशा मे पैसबाक आ पुनरागमनक यात्रा थिक। एकर कुशलता आ 'टाइमिंग' जाहि अभिनेता कि आलेख मे जतेक सक्कत रहैत छैक ओ अभिनेता ततेक कुशल, ततेक काबिल आ ओ आलेख ततेक मजगुत, ततेक निस्सन मानल जाइत अछि। मराठी रंगमंच मे त' दू चरित्र लए 'जोन' बदलबाक प्रचलन आब निङ्हटले सन अछि। ओ लोकनि मात्र 'टोन' (संवाद प्रक्षेपणक स्वर-स्तर) आ कायिक अभिनयक वैविध्य केँ प्रमुखता सँ उपयोग करैत छथि। एहि सन्दर्भ मे लेखकक निर्देश-वाक्यक सेहो महत्वपूर्ण भूमिका होइत छैक जे कि कथ्य-विस्तार मे आ कि तकर भाव-बोध मे बेस मदति करैत छैक।

एकल-नाटक रचबाकाल पात्रक संवाद-योजना मे बेस सतर्कीक खगता रहैछ। जखन ई स्थापित करबाक हो जे एकहि पात्रक गतिविधि महत्वपूर्ण अछि त' ओहि पात्रक संवाद त' लिखले जाइछ संगहि दोसरो जे सम्बन्धित पात्र (गौण पात्र) जे कि मंचस्थ नहि अछि तकरो प्रतिक्रियात्मक संवाद केँ पहिले पात्र लेल लिखल जाइत अछि जे कि ओकर भाव-प्रतिक्रियादिक संगहि ओकर अवस्थितिक आभास सेहो करबैत अछि। हँ, ध्यान ई अवश्य राखल जाइत अछि जे एहि गौण पात्रक प्रतिक्रियात्मक संवाद छोट-छीन हो आ ओ संवाद ओकर तत्कालीन भावना केँ यथासम्भव सम्पूर्णता मे राखि सकय। एहि सँ प्रधान पात्रक केन्द्रीय भाव स्खलित नहि होइछ आ विषयक मंचीय विकास आ विस्तार सहजरूपेँ होइत चलैछ। एहि कलात्मक निर्वहन मे संकट सेहो छैक, कारण दू भाव-धाराक चरित्र केँ, ओकर संवाद-प्रक्षेपणक ढंग केँ आ कि ओकर भावनात्मक पक्ष केँ एकहि पात्र द्वारा व्यक्त करबाक छैक सेहो तेना भ' क' जे लगैक दोसर (गौण) पात्र सँ गप-शप त' भ' रहल अछि मुदा ओ पात्र महत्वपूर्ण नहि

ओकर वाक्य-व्यापार महत्वपूर्ण अछि।

जखन कथा केँ एकल-नाटकक रूप देल जाइछ त' एकहि पात्र केँ सूत्रधारोक अभिनय तखने करय पड़ैछ। एहि माध्यम सँ कथ्यक भावभूमि, स्थिति, कालखण्डादि स्पष्ट कयल जाइछ। भीष्म साहनीक कथा-'त्रास' मे दिल्लीक व्यस्ततम सड़क आ ओहि पर होइत दुर्घटनाक विषय केँ जतेक कुशलता सँ नाट्यरूप देल गेल अछि ताहि मे दिल्लीक सड़क पर आवाजाही करैत गाड़ीक वर्णन करबाकाल इहो ध्यान राखल गेल अछि जे संवाद अपन प्रभावक स्तर पर 'रसहीन एकालाप' ने भ' जाय।

स्थितिक प्रभाव केँ रेखांकित क' सेहो बहुत रास बात केँ बोधगम्य बनाओल जाइछ। एतहु एकटा साकांक्ष निर्देशकक खगता छैक जे ओ ई देखबा मे सक्षम हो जे कोनहु स्थिति-विशेषक कोन-कोन प्रभावी तत्वसभ सम्बन्धित पात्रक चरित्र केँ आ ओकर पात्रता केँ मदति करत। 'अमृतसर आ गया' (भीष्म साहनी) कथा भारत-पाकिस्तानक विभाजन सँ उपजल आक्रोशक कथा अछि, ओकर त्रासदीक कथा अछि जाहि मे चारि-पाँचटा पठान आ एकटा 'दुबले बाबू' एकहि ट्रेनक बॉगी मे जा रहल अछि। मुदा एकर नाट्यरूप (एकल) मे एकहिटा अधबेसू पठान एकर पात्र अछि। चलती ट्रेन मे बैसल एहि पठानक स्थिति देखायब एकटा दुरुह काज अछि। ओहि ठाम ओहि पठान अभिनेताक औँघाइत रूपक उपयोग कयल गेल अछि जाहि मे ओकर देह तेना ने लयबद्ध-तालबद्ध रूपेँ हिलैत-डोलैत रहैत अछि जे स्वतः स्पष्ट भ' जाइछ जे ई ट्रेनक बॉगीक घटना अछि। शेष कसरि तखन पूर्ण भ' जाइत छैक जखन ओ औँघाइत पठान रहि-रहि क' ई पुछारी करैत छैक जे ई कोन स्टेशन छैक।

नाटकक एहि 'फॉर्म' मे 'जोन डिविजन'क ताम-झाम कमे-सम राखल जाइछ कारण एकर वाचिक संवाद आ कायिक अभिनयक आपसी तारतम्य तेना ने गँथायल रहैत छैक जे एकरा एकहि जोन मे राखब एकर बाध्यता सेहो छैक आ एकर विधागत सौन्दर्य सेहो। यद्यपि 'जोन डिभीजन'क ई 'सीमा-संकोच' कोनो दृढ़ नियम नहि छैक अपितु व्यावहारिक स्तर सँ उपयुक्त होइछ। कारण एहि मे एकहिटा पात्र होइत अछि त' स्वाभाविक छैक जे एही अभिनेता केँ निरन्तर अपन संवाद बजबाक छैक, अपन मति, गति आ विधि तीनू केँ संतुलित रखबाक छैक जकरा कायम रखबा मे अभिनेताक बेस ऊर्जा खर्च होइत छैक। तेँ निर्देशकीय स्तर सँ प्रायः ई चेष्टा

कयल जाइछ जे पात्रक 'मूवमेंट' त' बनल रहय मुदा से एहि विवेकक संग जे बेसी 'एक्टिभ' भेला सन्ताँ पात्र थाकल-ठेहियायल सन ने भ' जाय आ तदनुकूल एकर चरित्र आ अभिनय थाकल सन ने लागय। कारण रंगमंचीय परिप्रेक्ष्य मे थाकलक अभिनय आ अभिनयक थाकल दुनू दू बात अछि। पहिल स्थिति मे अभिनेताक भीतर ऊर्जाक अभाव नहि रहैत अछि अपितु अभावक अभिनय करैत अछि मुदा दोसर स्थिति मे ऊर्जाक सद्यः अभाव भ' गेल रहैछ। पहिलक सरोकार मंच सँ दोसरक नेपथ्य सँ होइछ।

नाट्य-प्रस्तुतिक प्रकृति आ संगहि अभिनेताक एही सामर्थ्यक अनुसार मंचक 'सेट डिजाइनक' परिकल्पना कयल जाइछ। एहि संदर्भ मे निर्देशक लोकनि अत्यल्प उपादानक प्रयोगक पक्ष मे रहैत छथि, मुदा ततबो कम नहि जे नाट्य-बोध बाधित होइत रहय। जँ कथावस्तुक अनुसार मंचोपादान बेसी रखबाक बाध्यता होइत छैक त' ओहि समस्त सामग्री केँ यथास्थान मुदा लगे-लगे राखल जाइछ जाहि सँ अभिनेताक बेसी सँ बेसी ऊर्जा संरक्षित रहि सकय।

एहि प्रकृतिक नाट्यरूप (एकल-नाट्य) मे निर्देशक पर बेस संकट रहैत छैक। अभिप्राय जे एहि नाटक मे एसकरे पात्र आ एसकर निर्देशक रहैत अछि तेँ एकर सफलता-असफलताक लेल एही दुनू गोटे केँ जिम्मेदार मानल जाइत अछि। लगैत अछि एहने सन किछु कारण सँ सभ निर्देशक एकल-नाट्यक क्षेत्र मे नहि ठठि सकलाह अछि। एकटा आओर संकट अछि जे कि कने विषम प्रकृतिक अछि। एहि नाटक मे एकर खूबे सम्भावना रहैत छैक जे पात्र अपन संवाद बिसरि जाय, कारण एतय त' कोनहु प्रकारक 'को-आर्टिस्ट' त' छैक नहि जकर संवादक 'क्लू' सँ अपन बिसरल संवाद मोन पाड़ल जा सकय। एहि संकट सँ बँचबाक लेल एकटा विशेष प्रकारक रंगयुक्तिक उपयोग कयल जाइछ। निर्देशने केँ ताहि प्रकारेँ निश्चित कयल जाइछ जे प्रायः सभ संवाद पर तदनुकूल कार्य-व्यापार आ तदाश्रित कार्य-व्यापार निर्धारित रहैछ जे कि पात्र केँ परिस्थिति सँ जुटय मे त' सहयोगी होइत अछि आ एहि कार्य-समूहक क्रमिकता सँ एकर संवादक क्रमिकता बन्हायल रहैत अछि जे कि पात्र केँ ओकर संवाद बिसरय नहि दैत छैक, अन्यथा एक-एक घंटा (किछु बेसीए)क एकल प्रस्तुति मे सांगोपांग अपन संवाद मोन राखब आन कोनहु युक्ति सँ मोसकिल सन अछि। वैदिक-वेदपाठी लोकनिक वेदपाठ काल जे 'हस्तस्वर'क विन्यास (हस्त-संचरणादिक क्रिया)

अछि तकरो पाछू किछु एहने सन यथार्थ रहल होयतैक।

एकल-नाटकक अभिनय-पक्ष बेस दमगर होयबाक चाही। ई एकर सौन्दर्य त' छैके, एकटा बाध्यता सेहो छैक, कारण जे एकहिटा पात्रक अभिनय दर्शक-समूह केँ बड़ी काल धरि देखबाक छैक तेँ एहि मे रसहीनता, अरुचि आ कि अभिनय-शैथिल्यक सम्भावनाक सम्पूर्ण गुंजाइश रहैत छैक। जँ अभिनेता मे नाट्य-कथ्यानुरूप साहित्य-बोध आ तदजन्य मंचीय-बोध मे मिसियो भरि अभाव रहतैक आ कि एहि दुनू तत्वक संतुलन-विवेक मे मिसियो भरि थकमकी रहतैक त' प्रस्तुति प्रभावित होयत। तेँ एकल-नाट्य एकटा सुच्चा आ समर्पित अभिनेताक मांग करैत अछि। यद्यपि ई मांग त' आनो प्रकारक नाटक करैत अछि मुदा ओहि ठाम त' कोनहु पात्रविशेषक अभिनय बेसम्हार भेल त' दोसर सम्हारय केँ चेष्टा करैत छैक मुदा एहि ठाम त' से सम्भव नहि। एही परिप्रेक्ष्य मे हमर ई व्यक्तिगत धारणा अछि जे जखन कोनहु रंगमंच परिपक्व होइछ तखने ओकरा सँ चौबटिया नाटक आ कि एकल-नाटकसभ सम्भव छैक कारण एकल अभिनय, अभिनयक उच्चतर स्थिति अछि आ समर्थ कसौटी सेहो अछि। एहि नाटक मे कखनहु क' कथ्यक उतार-चढ़ाव ततेक तीव्रता सँ होइत अछि जे बोधगम्यताक स्तर पर ओहेन दर्शक लेल ई अवश्ये दुरुह भ' सकैछ जे शिल्प-शैलीसभ सँ परिचित नहि छथि आ पाबनिए-तिहारे नाटक देखैत छथि। तेँ एहन प्रकृतिक नाटक मे दर्शकोक बौद्धिक स्तर सामान्य सँ कने ऊँच जरूरे होयबाक चाही आ दर्शक केँ रंगकर्मक समकालत्वक आंशिको ज्ञान जरूरे रहबाक चाही अन्यथा बोधक स्तर पर ओ नाटकसभ ओहि दर्शक मे सुठाम धरि नहि पहुँचि सकत त' से बड़ आश्चर्य नहि।

एकल-नाटक रंगमंच केँ रसे-रसे एकान्त दिस सेहो ल' जाइत अछि। बंगालक रंगमंच मे त' एकरा 'एकान्त नाटक' सेहो कहल जाइत रहल अछि। अभिप्राय जे नाटकक ई 'फॉर्म' सामूहिक प्रदर्शन नहि वैयक्तिक प्रदर्शन दिस चलि जाइत अछि। ई सदिश यात्रा जँ नाटकक पसार आ लोकप्रियता-उपलब्धता प्रभृति लेल सुखद अछि त' किछु अर्थ मे एकर परिणामी संकेत दुखद सेहो अछि, विशेष क' रंगकर्मक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य मे। नाटकक एहि प्रभेद मे जनसमूहक सोझाँ नाटकक समूह केँ धकियाबय सन चारित्रिक तत्व एकर एकटा ऋणात्मक पक्ष सेहो छैक।

नाटकक समस्त भेद-प्रभेद मे ई एकमात्र एहन नाट्यरूप अछि जकरा प्रस्तोता समूहक खगता नहि। जखन कि ई स्वयं परिपक्व सामूहिक चिन्तनक प्रतिफल थिक। एकर मंचन-पक्ष जाहि गतिशीलता, सक्रियता आ बौद्धिकताक अपेक्षा रखैत अछि से एकरा शहरिया प्रकृतिक रंगमंच दिस जाय लेल बाध्य कयने छैक जतय एकरा दर्शकक बौद्धिक आ विशाल वर्ग त' उपलब्ध अछि मुदा एतय ई नाटक जागरणरूप मे कम आ मनोरंजन-मनोविलासरूप मे बेसी ग्राह्य भ' जाइत अछि। शहरिया जीवन-शैलीक ताम-झामक सभ सँ बेसी चोट रंगमंचे केँ लगैत रहलैक अछि। एकर प्रस्तुति मे ग्रामीणो रंगमंचक तत्व संलग्न कयल जा सकैत अछि मुदा ताहि दिशा मे प्रयास होयब शेषे अछि।

एहि प्रभाग मे जहाँ धरि मैथिली रंगकर्मक हस्तक्षेपक प्रश्न अछि त' स्थिति कनी बेसीए निराशाजनक अछि। एतय अधिसंख्य रंगकर्मी रंगकर्मक नाम पर खानापूर्ति क' रहल छथि। नाटक केँ 'पैशन' रूप मे कम आ 'फैशन' रूप मे बेसी लेने छथि। बेसी गोटेक लेल नाटक विद्यापति स्मृतिपर्वक एकटा 'टाइम पास आइटम' मात्र अछि जकरा एकटा पारम्परिक बिधकरी सन विध पूरा करबाक रहैत छैक आ पुन: साल भरि लेल 'पतनुकान व्रत'। कहियो कोनहु आन भाषाक नाटक कि आन ठामक नाटक मे ओ नहि अभरताह। रंगकर्मक पत्र-पत्रिका पढ़ब एखनहु मारिते रास रंगकर्मीक लेल ने त' हिस्सक बनि सकल अछि आ ने सौखे। फलत: रंगकर्मक क्षेत्र मे होइत नव-नव परिवर्तन-प्रयोगादि सँ निश्चिंत ओहि रंगकर्मी लोकनि सँ अभिनय आ कि नाट्य-चिन्तन जेहेन होयबाक चाही तेहने अछि। उत्तम अभिनय हेतु साले-साल पुरस्कृतो होइत कलाकार लोकनिक डाँड़ एकल-नाट्य लेल सक्कत नहि देखैत छी। भंगिमा (पटना)क स्थिति कने फराक अवश्य अछि। किछु बाह्याभ्यंतरिक चोट एकरा प्रभावित त' कयनहि छैक तथापि ई एहि अर्थ मे अवश्य सफल अछि जे एकरा लेल नाटक एकटा 'पैशन' छैक। एकरा नाटकक किंवा रंगकर्मक सम्पूर्ण प्रक्रियाक ज्ञान छैक, व्यवहृतो छैक आ किछु बुझनुक गार्जियनो छैक। तेँ एकर रंगमंचीय क्रिया-कलाप पर किछु आँखि साकांछो छैक, किछु गुम्हरलो आ किछु कनखरलो। आ ई सभटा तत्व ओकरा सही दिशा मे कार्य करबा लेल ऊर्जास्वितो करैत छैक आ बाध्यो करैत छैक। समकालीन रंगकर्मक गतिविधि मे दखलो देने रहैत छैक। किरतनियाँ नाटकक मंचीय

स्थापना, समृद्धि आ विस्तार मे कुणालजीक रंगमंचीय अवदान केँ भंगिमेक योगदानक पर्याय गछल जाय। आ से एकरा सूची मे चैम्बर ड्रामा, पमारा, विदापत प्रभृति नव-नव शैलीक नाटक केँ मैथिली रंगमंच मे स्थापित करबाक श्रेय सेहो संलग्न छैक। प्रशंसनीय विषय ईहो अछि जे एकरा लग आइयो उमाकांत, ब्रह्मानन्द, कुमार गगन, संजीव पाण्डेय, आशुतोष अभिज्ञ सन नीक-नीक अभिनेतो छैक जे जहिना किरतनियाँ नाटक मे सटीक अछि तहिना आनो प्रभेदक नाटक मे। किछु एहन नाम छैक जे एकल-नाटक मे ठठि सकैत अछि। जेना- उमाकांत, ब्रह्मानन्द, कुमार गगन, आशुतोष अभिज्ञ आदि।

भंगिमा 17 फरवरी 1988 ई. क' पहिल बेर 'संवाद-तीन उर्फ उमाकांत- एक' नामक 'चैम्बर नाटक' प्रस्तुत कयलक।[2] निश्चित रूप सँ मैथिली रंगकर्मक ई 'टर्निंग प्वाइंट' छल जकर श्रेय कुणालजी केँ जाइत छनि, से अहू कारणे जे एहि प्रस्तुति केँ मैथिलीक चैम्बर नाटकक पहिल मौलिक प्रस्तुति कहल जाइछ। ई खतरा भंगिमे उठा सकैत छल, कुणालेजी उठा सकैत छलाह। कुणालजी उमाकांतजी पर मारिते रास रंगमंचीय प्रयोगो कयलनि आ ताहि मे एकटा खास सीमा धरि उमाकांतजी सफल सेहो रहलाह मुदा ई बात त' गछहि पड़त जे नाटकक साहित्यिक मूल्य दिस बेसी रुचि नहि रहबाक कारणे उमाकांतजीक सम्पूर्ण नाट्य-यात्रा अभिनय केन्द्रित भ' क' रहि गेल जखन कि नाटकक दुनू मूल्य मे सार्थक हस्तक्षेप रखबाक कारणे कुणालजी बहुत दूर धरिक यात्रा तय कयल फलत: मैथिलीओक रंगमंच मे कएकटा नाट्यरूप-नाट्यतत्वादिक उत्खनन, पुनरुज्जीवन आ प्रसारण सम्भव भेल। ओना महेन्द्र मलंगिया (जनकपुर), गुणनाथ झा, दयानाथ झा (कोलकाता), कुमार शैलेन्द्र, किशोर केशव (पटना), रमेश रंजन (जनकपुर), रोहिणी रमण झा (पटना), प्रकाश (दिल्ली) सन किछु महत्वपूर्ण नाम छैक जे नाटक केँ ओकर समग्रता मे सकारि अपन दीर्घ यात्रा तय कयलनि अछि किंवा क' रहल छथि।

तथापि एकटा गप त' नि:संकोच कहल आ गछल जा सकैत अछि जे एकल नाटकक क्षेत्र मे मैथिलीक रंगकर्म केँ प्रयास करब शेषे अछि। यद्यपि चैम्बर नाटक मे एकल अभिनय खूबे भेल अछि। उमाकांत-एक, बुलबुल आ रखबार, गाछ लगाउ, पाँच पत्र प्रभृति चैम्बर शो एकर उदाहरणो अछि। मुदा एकरासभ केँ एकल नाटक नहि कहल जा सकैत अछि। स्वयं रचयिता-प्रस्तोता लोकनि सेहो एकरा 'एकल अभिनय बला

चैम्बर नाटक' गछने छथि, एकल नाटक नहि। कारण एहि मे अभिनेताक सहयोग करैत 5-6 गोटेक एकटा समूह (समाजी) केँ मंचस्थ कयल गेल अछि। ई समाजी गीत-कवितादिक गायन त' करिते अछि संगहि एकरा लेल किछु संवादो गढ़ल गेल अछि। समाजी केँ चैम्बर नाटकक अपरिहार्य अंग मानल गेल अछि जे कि गायन-वादनक संग 'बैक-ड्रॉप'क निरूपण सेहो करैत अछि।[3] अभिनेता एही समाजीक बीच सँ उठि क' अभिनय-स्थल पर अबैछ। एकर अभिनयक संग-संग समाजीक संगीत (गायन-वादन) चलैत रहैत अछि।[4] अभिप्राय ई जे 'चैम्बर नाटक'क स्वरूपगत चमत्कार नाटक आ दर्शकक बीचक दूरी केँ न्यूनतम करबाक आग्रही अछि। एहि ठाम कुणालजीक प्रायोगिक अनुभव महत्वपूर्ण लगैत अछि जाहि मे ओ कहैत छथि जे- 'जखन-कखनो चैम्बर नाटकक प्रदर्शन पारम्परिक स्थल अर्थात मंच सँ भेलए, तखन ओकर प्रभाव निराशाजनक रहल'।[5] प्रस्तुति लए मंचक आग्रह नहि, नाट्य-रचनाक परम्परागत रूपक आग्रह नहि, प्रकाश, सेट, कस्ट्यूम, मेकप आदिक खगता नहि।[6] ई विशेषता चैम्बर नाटकक अछि। एकल नाटक केँ एहि तत्वसभक कमोबेश खगता पड़िते छैक। तेँ एहि प्रकृतिक नाटक केँ मैथिली रंगमंच मे एकल-नाट्य हेतु पृष्ठभूमि रूप मे त' स्वीकार कयल जा सकैत अछि, एकल-नाट्यरूप मे नहि। यद्यपि 1979-80 ई. मे ललितेशजी (फिल्म अभिनेता) चेतना समितिक मंच सँ एकाधटा प्रस्तुति कयने रहथि। तकर बाद अप्रैल 1984 ई. मे मनोज मनुज दूटा एकल प्रस्तुति 'विद्रोह' आ 'भीख आ भगवान' कयने छलाह। मुदा तकरा बाद एहि क्षेत्र मे योजनाबद्ध रूप सँ कोनो ठोस प्रयास नहि भेल।

एमहर 04 अगस्त 2015 क' भंगिमा द्वारा अपन 31म वार्षिकोत्सवक अवसर पर अन्य दूटा नाटकक संग राजकमलक कथा 'साँझक गाछ'क कुणालजीक निर्देशन मे मंचन कयल गेल छल। यद्यपि एहि अवसर पर प्रकाशित जे ब्रोश्योर छल ताहि मे एहि नाटकक स्वरूपक मादे एकटा भ्रांति छल जे कि एक प्रकारक द्वैध सेहो छल। कथाक लिखित शैली केँ सुरक्षित रखैत एसकर आशुतोष अभिज्ञ सँ अभिनय कराओल गेल तेँ एकरा एकल अभिनय कहल गेल, मुदा निर्देशकीय कथ्य सन लगैत कथासार लिखैतकाल एकरा 'कथाक नाट्वृत्ति (अभिप्राय नाट्यावृति) कहल गेल आ पात्र-परिचय मे आशुतोष केँ 'आवृति शिल्पी'। ई द्वैध नहि त्रैध भ' गेल जखन कि ई

कथाक मंचन छल, कथाक एकल मंचन।

मुदा मंचनक रूप-शिल्प आदिक दृष्टिए ई बहुत कमजोर मंचन छल। बेस बान्हल-छेकल अभिनेता। बेस विवश बनाओल गेल अभिनेता। कथा मे अभिनयजन्य विविधताक अछैत ओकर प्रस्तुति मंथर आ एकरसाह छल। ई एकर निर्देशकीय योजनाक अंतर्गत अबैत हो से सम्भव, मुदा मंच पर जँ कथाक वाचनेटा प्रस्तुत करब अभीष्ट हो त' से केहन निर्देशकीय योजना? कथाक मात्र वाचन हो आ तकर मात्र श्रवण हो (दर्शन नहि), ई केहन मंच-न्याय? यद्यपि एकाध ठाम अभिनेता किछु-किछु स्वतंत्रता लेबाक चेष्टा अवश्य कयल जे कि अपेक्षित सेहो लगैत छल, मुदा तकर जँ स्थायी निर्वाह रहैत त' एकल अभिनयक दृष्टि सँ से बेसी उचित होइत।

'साँझक गाछ'क नैरेटर स्वयं कथाकारे छथि, स्वयं राजकमले छथि से प्राय: स्पष्ट अछि। त' जँ एहि कथाक मंचन प्रस्तुत करैतकाल अभिनेता (आशुतोष) केँ राजकमलक प्रतिच्छायारूप मे उपस्थित कयल जाइत आ तदनुकूल पाठ आ अभिनयक समायोजन होइत त' ई एकटा उत्तम एकल-नाटक भ' सकैत छल। कथा-मंचनक एकल प्रस्तुति लेल जाहि प्रकारक कथाक अपेक्षा रहैत छैक से प्राय: सभटा तत्व अछि 'साँझक गाछ' मे। खगता छलैक एकरा नीक एकल-नाटक बनबय जोग एकटा दृष्टिसम्पन्न चेष्टाक।

एकभग्गू रंगकर्मीक संख्या मैथिली रंगमंच मे बेसी भेला सँ एकर आनहु प्रभाग प्रभावित भेल छैक। आलोचना त' खास क'। नाटक लिखब एक बात अछि आ नाटक पर लिखब दोसर बात। पहिलुक अपेक्षा दोसर स्थिति कने बेसीए भरिगर अछि। तेँ एतहुक रंगमंच केँ निरन्तर नाट्येतर आलोचकक मलिकौत भोगय पड़ैत रहलैक। फलत: नाटकक आलोचना मात्र कथा-कविताक आलोचना भ' क' रहि गेल। नवका पीढ़ीक संग ई स्थिति कनेक सुधरल अछि। एहि पीढ़ीक किछु रंगकर्मी कनेक बेसी जोश सँ आ किछु बेसी मेहनतिक संग उपस्थिति द' रहल अछि। नाटकक सक्रियताक अभाव मे ई छहोछित भ' जाइत छैक से बात फराक। भंगिमा आ मैलोरंग लग आइयो किछु उम्दा कलाकार अछि जकरा मे एकल प्रस्तुति हेतु दक्षता देखल जा रहल अछि। मात्र पुनर्प्रयोगटा करब बाँकी छैक।

जतहुक रंगमंच जतेक सक्रिय आ समृद्ध ओतहुक नाट्य-चिन्तन ततबा उम्दा रहल अछि। उदाहरण लेल मास्को थियेटर (अन्तोन चेखब)

आ जर्मनी-अमेरिकाक थियेटर (ब्रेख्त) प्रभृति नाम लेल जा सकैत अछि। अपनो ओतय बांग्ला रंगमंच आ मराठी रंगमंच एकर उदाहरण अछि। मैथिलीओ मे कोलकाता, पटना, जमशेदपुर, जनकपुर, मधुबनी, बेगूसराय, दिल्ली सन किछुए जग्गह अछि जे मैथिली रंगकर्म लेल गानल जाइछ। एतय ध्यातव्य जे ई सभटा नाम शहरी रंगमंचक अछि। जनकपुर अपन सक्रियताक नाट्य-दिशा बदलय केँ चेष्टा मे लागल अछि। दरभंगा केँ मैथिली रंगकर्म मे कोनहु स्थाने नहि अछि। अमरजी (श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर') आधुनिक मैथिली रंगमंच (साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित) नामक पुस्तक मे अपन दरभंगिया पीठ अपनहि सँ जतेक ठोकि लेथि मुदा दरभंगा सँ नाट्य-साहित्य पर व्याख्यान देनिहार समस्त महंथ लोकनि केँ दरभंगिया नाट्यभूमि (स्वनिर्मित किंवा परनिर्मित) केँ ताकि सामूहिक संकोचक एकटा प्रायोजित कार्यक्रम करबाक चाही। दरभंगा सँ आधुनिक मैथिली रंगमंचक कोनहु अध्याय विकसित नहि भ' सकल, तखन जे दरभंगिया बाबू लोकनि आधुनिक रंगमंच लेल किछु लिखैत छथि त' से मात्र अपन ऊर्जा जियान करैत जाइत छथि संगहि रंग-क्षेत्र मे उघार-देखार सेहो भ' रहल छथि। बेगूसराय सेरा गेल अछि। पुरना रंगकर्मी लोकनि आब अपन रंगकर्म केँ ओही महंथानक ठकुरबाड़ी मे चढ़ा क' ओकर छिप-सराइ आ धूप-आरती मे लागल छथि। अकादमिक गोल केँ कहियो रंग-चेतना नहि रहलैक नहि त' रामदेव बाबू (डा. रामदेव झा) सन गंभीर अध्येता आ साहित्यकार केँ हुनक हल्लुक सन रचना (पसिझैत पाथर) लेल पुरस्कृत नहि करैत आ ने अमरजी केँ आधुनिक रंगमंच विषयक पुस्तकक सम्पादक कबूलल जाइत जखन कि मारिते रास नाम (जे कि सक्रिय रंगकर्मी छथि आ साहित्यसेवी सेहो छथि) एहि काज लेल उपयुक्त छल जे रंगमंचक आधुनिकता केँ विस्तार सँ बेकछयबा मे समर्थ छथि।

मैथिलीक कथाकार लोकनि जतेक जाँघ ठोकथि मुदा जखन आधुनिक रंगमंचक दृष्टिए नाट्यरूपान्तरण लेल आ कि एकल-नाट्य प्रस्तुति लेल कथाक ताकहेर कयल जाइछ त' परिणाम उत्साहजनक नहि पबैत छी। एखनहु बड़ थोड़ कथाकार छथि जनिका कथा मे आधुनिक नाट्यबोधक तत्व अभरैत अछि जखन कि कथा-रचनाक मूल मे बेसी तत्व त' नाटकेक अछि। एहने सन किछु आओरो कारण छैक जे आइ धरि मैथिली रंगकर्म आन्दोलनक स्तर धरि नहि उठि रहल अछि। ई एकटा पैघ

चिन्ताक कारण अछि। से साहित्य लेल सेहो, संस्कृति लेल सेहो आ समाजक मुख्य धारा लेल सेहो। मुखपत्रक अभाव मे आन्दोलन हेतु पर्यावरण नहि बनि रहल अछि। सरकारी कारबार त' सहयोग सँ बेसी अहिते क' रहल छैक। नाटक आ एकर दर्शन केँ चैलेंज रूप मे नहि ल' क' एकटा 'टाइमपास जॉब' रूप मे लेल जयबाक प्रवृत्ति बढ़िये गेल अछि। निरन्तरताक स्तर सँ नाटक पर समीक्षा, आलोचनादि लिखबाक क्षेत्र मे बड़ मोसकिल सँ दोसरो नाम अभरैत अछि। वर्तमानकालिक स्थितिक तमाम विडम्बना एकर अंग-उपांग केँ लुप्त होबय मे सहयोगे क' रहल अछि। तेहन समय मे किछु शहरिया रंगमंच (पटना-कोलकाता-जनकपुर-दिल्ली) सँ आ ओकर रंगकर्मी लोकनि सँ उमेद कने बेसीए भ' रहल अछि जे नाटकक आनहु भेद-प्रभेद केँ देखैत एकल-नाट्य दिस सेहो अपन ऊर्जा लगाबथि। ई एकर परिचिति आ पसार दुनू लेल आवश्यक। नाट्यविषयक गम्भीर विमर्श-आलोचनादि कोनहु नाट्य-दल केँ आगू मुँहे दौड़य लेल सदति ऊर्जा दैत रहैत छैक जकर उदाहरण मिनाप (जनकपुर), भंगिमा (पटना), मैलोरंग (दिल्ली) प्रभृति अछि। मैथिलीक रंगमंच निरन्तर समूह-नाटकक प्रदर्शन कयलक अछि। एकर एहि प्रकृति-प्रवृत्ति केँ जँ हमरा लोकनि अपन सांगठनिक-सामूहिक सोचक 'प्रमाण-पत्र' रूप मे रेखांकित करैत छी त' संगहि इहो गछहि पड़त जे मैथिली रंगमंच मे एकल-नाट्यक पूर्वापर स्थिति हमरासभक नाट्यविषयक सीमित-किंचित ज्ञान केँ सूचित करैत अछि। समाजक दिग्भ्रम हटाबय मे आ सांस्कृतिक क्षरण केँ रोकि ओकरा उन्नत स्तर प्रदान करबा लेल रंग-आन्दोलनक खगता आ प्रासंगिकता केँ किन्नहु ने नकारल जा सकैत अछि।

संदर्भ-संकेत :

1. परम्पराशील नाट्य, ज. च. माथुर, पृ.-14
2. भंगिमा, अंक- 24, पृ.-04
3. भंगिमा, अंक- 24, पृ.-03
4. भंगिमा, अंक- 24, पृ.-04
5. भंगिमा, अंक- 24, पृ.-03
6. भंगिमा, अंक- 24, पृ.-03

07 सितम्बर 2015, पटना

•

नाट्य-संगीत आ मैथिली रंगमंच

महामुनि भरत नाट्य केँ सार्ववर्णिक वेद कहैत छथि जाहि मे समस्त ज्ञान, कर्म, शिल्प, विद्या आ कला समाहित अछि।[1] 'नाट्य' शब्द नृत्य, गीत आ वाद्यक समूहरूप अर्थ केँ सेहो प्रकट करैत अछि। कोशकारलोकनि एकरा तौर्यत्रिकक संज्ञा सँ अभिसंज्ञित कयने छथि- 'नाट्य नृत्तगीतवाद्यं तौर्यत्रिकम्'। अमरकोश तँ तांडव, लास्य, नटन, नर्तन, आ नृत्त केँ नाट्यक पर्याय कहैए। अतः नृत्य, गीत, वाद्य आ अभिनयक समूहरूप अर्थ केँ नाट्य कहल जाय। नाट्याचार्य भरत आंगिकादि अभिनय सँ युक्त सुख दुःखदि सँ समन्वित लोक स्वभाव केँ सेहो नाट्य कहैत छथि।[2] मुदा हिनक ई परिभाषा 'नाट्य' शब्दक संकीर्ण परिभाषा कहल जाय।

नाट्यचार्य कोहलभरतक अनुसार नाट्यक एगारहटा अंग अछि- रस, भाव, अभिनय, धर्मी, वृत्ति, प्रवृत्ति, सिद्धि, स्वर, अतोद्य, ज्ञान आ रंग। मुदा भरतक अनुसार मात्र पाँचटा अंग अछि- आंगिक, वाचिक, आहार्य, गान आ वाद्य। एतय ध्यातव्य अछि जे भरत नाट्यक अंगक रूप मे गान आ वाद्य केँ स्वीकार करैत नाट्य आ संगीतक घनिष्ठ सम्बन्ध केँ उजागर करैत छथि।

भरतमुनि गीत केँ नाटकक प्रमुख अंग मे अन्यतम आ वादन एवम् नर्तन केँ एकर अनुगामी मानैत छथि। नाटक मे नृत्य, गीत आ वाद्यक संतुलित प्रयोग भारतीय नाट्य-परम्पराक विशिष्टता रहलैक अछि। नाट्याभिनय सँ संगीत केँ कात करब कोनहु हल्लुक काज नहि छैक। नाट्य मे संगीतक प्रयोग वातावरणक सृजन आ रसात्मक सृष्टि लेल सेहो कयल जाइछ। रंगमंच पर दृश्य मात्र केँ सुसज्जित कयला सँ घटनाक सजीव वातावरण नहि तैयार कयल जा सकैछ। ताहि लेल संगीतक खगता छैक जे नाट्याभिनय मे जीवनक संचार करैत अछि। नाट्य-प्रयोग मे कोनहु प्रकारक नीरसताक निराकरण लेल गीत, वाद्यादिक योजना आवश्यक। अभिनवगुप्त त' गीत केँ नाट्यतत्वक प्राण कहैत छथि। नाट्याचार्य शारदातनयक कहब छनि जे नृत्य-गीत-वाद्यादिक मेझरायल रूप संगीतक ओ कला अछि जकरा माध्यम सँ प्रेक्षक लोकनिक हृदय मे अवस्थित

राग-द्वेषादि विगलित भ' जाइछ आ शुद्ध सत्वक उदय होइछ।

नाट्य आ संगीतक अन्योन्याश्रयत्व केँ सकारैत भरतमुनि तीन नाट्यतत्व (नाद, स्वर आ ग्राम), छओ अलंकार, चारि गीति, तीन लय, तीन यति आ चारिटा वाद्य केँ सेहो स्वीकार करैत छथि जे कि ई बुझबा लेल पर्याप्त अछि जे भरतकालीन नाट्य-परम्परा मे संगीतक प्रयोग कतेक गम्भीर आ सूक्ष्म दृष्टि सँ होइत छल। तत्कालीन नाटक मे 'ध्रुवागान'क परम्परा सेहो भेटैछ। स्वर-वर्ण-पद-वाक्यादिक समुचित चयन, अलंकारादिक प्रयोग, आंगिक भाव-भंगिमा आ गीतक उत्कर्ष सँ ध्रुवागानक रचना होइत अछि। ध्रुवागानक प्रयोग सँ पात्रक गति, चेष्टादिक पूर्ण अभिव्यक्ति होइत अछि। पाँच प्रकारक ध्रुवागानक चर्चा भरतमुनि कयने छथि। नाटकक प्रारम्भ मे प्रावेशिकी, प्रत्येक अंकक अंत मे नैष्क्रामिकी, क्रमोल्लंघन क' द्रुत लय मे आक्षेपिकी, रंगमंच पर प्रसन्नताक संचार हेतु प्रासादिकी आ मुर्छा, भ्रांत, विषाद किंवा वस्त्राभरण केँ अव्यवस्थित भेला सँ दोष-निवारणक लेल अंतरा।

अमरसिंह नाट्योन्मेष एवम् नाट्यचिन्तनक तीनटा परम्पराक उल्लेख कयने छथि। प्रथम शिलालि, दोसर कृशाश्व आ तेसर भरतक। एहि तीनू परम्परा मे नाटक मे संगीतक उत्कृष्ट आ उल्लेखनीय प्रयोग भरतक परम्परा मे बेसी भेटैत अछि। एहि परम्पराक प्रायः सभ नाट्याचार्य संगीताचार्य सेहो भेल छथि।

कालक्रमेण नाटकक उद्देश्य परिवर्तित होइत गेल। प्राचीनकालीन नाटकक उद्देश्य मनोरंजन मात्र छल। तदुपरांत नाटकक उद्देश्य अपन साहित्यिक रूप गढ़लक आ एकटा महत्त्वपूर्ण विधाक रूप मे सुस्थापित भेल। मध्यकाल आ पूर्व-आधुनिक कालक संधियुग मे नाटकक उद्देश्य सामाजिक, राजनीतिक किंवा धार्मिक परिवर्तन बनलैक आ एहि परिवर्तनक माध्यमक रूप मे सेहो एकर प्रयोग होबय लागल। वर्तमानकालिक उत्तर-आधुनिककाल मे नाटक शहर दिस मुह कयलक आ प्रयोगक नाम पर अपन स्वरूप आ निजता केँ राइ-बाइ करबा लेलक आ अपन उद्देश्य नाट्यविधा केँ मात्र जीबैत राखब बना लेलक। अभिप्राय ई जे जहिना एकर उद्देश्य परिवर्त्तित होइत गेल तहिना एकर शिल्प, शैली, भाषा, तकनीक आ संगीत सेहो नव रूप मे विकसित होइत गेल। तंत्री वाद्यक ओजी पर सुषिर,

घन आ अवनद्ध वाद्यक प्रयोग होमय लागल। फलतः नाट्य-संगीतक सीमा-विस्तार सम्भव भेल।

प्राचीनकाल आ प्राक्-विद्यापति युगक अधिसंख्य नाटक संस्कृते मे अछि। मैथिली मे लिखब ओ लोकनि ओछ काज बुझलनि। स्वयं विद्यापति सेहो अपन दुनू नाटक (गोरक्षविजय आ मणिमंजरी) संस्कृते आ प्राकृत मे लिखलनि। गोरक्षविजय मे गीत अवश्य मैथिली मे छल। उत्तर-विद्यापति युग मे एहि दिशा मे किंचित काज अवश्य भेल। ओहि युगक नाटक गीतप्रधान होइत छल। विद्यापति रचित नाटक मे जे गीतक प्रयोग भेल अछि से काल आ परिस्थितिक अनुकूल राग-रागिनी मे आबद्ध अछि। ओहि युग मे नाटक मे आयल गीते-नाद कैँ नाट्य-संगीतक पर्याय बूझल गेल। मुदा एकरा आजुक संदर्भ मे नाट्य संगीत नहि कहल जा सकैछ, कारण गीत-नादक अलावे कोनहु ठाम संगीत नहि होइत छल। बादक युग मे त' संगीतशून्य नाटकक उल्लेख पर्याप्त मात्रा मे भेटैत अछि।

प्राचीनकालीन मैथिली नाटक पर स्पष्टरूपेण संस्कृतक प्रभाव अछि। एकर शिल्प, पात्र योजना, कथोपकथन, भाषा-शैली इत्यादि संस्कृताहे अछि। एहि प्रभाव सँ एकर संगीतपक्ष सेहो प्रभावित रहल। फलतः शास्त्रीय संगीतक राग-रागिनीक प्रयोग होइत रहल। मुदा आगू चलि क' रंगमंच पर ढोल-नगाड़ा सन लोकवाद्यक सेहो अवतरण भेल। एही समय मे उड़िया, बांगला आ कि मराठी रंगमंच अपन लोकधार्मिता कैँ आगू बढ़बैत नाटक मे चाँदखोल, मृदंग, मनारि आ झम्पक रंगबिरंगी प्रयोग प्रारम्भ कयलक। मुदा एतेक प्रायोगिक विस्तारक बादहु ई नाटकसभ संगीतके सन भ' क' रहय चाहलक। एही काल मे गीत-नाटिका, नृत्य-नाटिका, कीर्तनियाँ नाटकसभक आधारशिला सुदृढ़ भेल। मुदा एहि कालक नाटक गीत-संगीत सँ भरल-पूरल रहितहुँ एहि मे नाट्य-संगीतक सर्वथा अभाव रहल।

वस्तुतः नाटक मे मुख्यतः चारिटा काज लेल संगीतक प्रयोग आवश्यक मानल जाइछ-

1. परिवेशक निर्माण हेतु
2. चारित्रिक विविधता हेतु
3. रिक्तकक हेतु आ
4. समयान्तरालक स्थापना हेतु

परिवेशक निर्माण मे नाट्य-संगीत सहयोगी सिद्ध होइछ। संगीतक एकटा स्वरलहरी सँ अनुकूल परिवेशक मंच पर उपस्थापना सम्भव भ' जाइछ। जेना- प्रातःकालीन परिवेश हेतु राग भैरव या भैरवी मे बाँसुरीक मंद स्वरक खंडशः प्रयोग। श्रृंगार, शांत, करुण, मधुर, चमत्कार, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, विस्मयादि भावक अनुकूल नाट्य-संगीतक प्रयोग हेतु रखनहुँ बांगला-उड़िया रंगकर्म अनुकरणीय आ प्रशंसनीय अछि। चारित्रिक विविधता मे सौम्य चरित्र लेल बाँसुरी आ कि मुरलीक प्रयोग, अंतर्द्वन्द्वक प्रदर्शन हेतु सितारक प्रयोग, कारुण्य आ संतापक हेतु सारंगी अथवा शहनाईक अवरोही तानक प्रयोग, गाम्भीर्य प्रदर्शनक हेतु तानपुरा आ नगाड़ाक स्वरक मिश्रित प्रयोग, मृत्युक मंचीय प्रदर्शन हेतु क्रमेण कम होइत तबलाक परनक प्रयोग इत्यादि। रिक्तक (दू दृश्यक बीचक रिक्त समय) कैँ भरबाक लेल सेहो उपयुक्त संगीतक रचनाक प्रावधान अछि। दू पाँतिक गीतक विलम्बित एकल गायन सँ कतेको वर्षक अंतराल कैँ देखाओल जा सकैत अछि।

गीत आ वाद्यक दृष्टिए नाट्य-संगीत कैँ दू भाग मे बाँटल जा सकैछ-

1. लोक नाट्य-संगीत आ
2. शास्त्रीय नाट्य-संगीत

लोक नाट्य-संगीत मे संगीतोपकरणक रूप मे मुख्यतः लोकवाद्य आ घरैया समानक प्रयोग कयल जाइत अछि। जेना पित्तरि या फुलही थारी, बाटी, टोकना इत्यादि। एहि घरैया समान मे उचित मात्रा मे पानि भरि बाँसक एकहत्थी ठेंगा सँ प्रहार क' सुख-दुख, शोक, हास-परिहासादिक प्रभाव उत्पन्न कयल जाइछ। लोक नाट्य-संगीत मे ढोल-पिपही, डम्फा, झालि, मनारि इत्यादिक सेहो प्रयोग कयल जाइछ। छुच्छ घैलक तालबद्ध स्वरक सेहो अद्‌भुत प्रयोग होइछ। शास्त्रीय नाट्य-संगीत मे समस्त प्रभाव शास्त्रीय वाद्य सँ बहार कयल जाइछ। बांगला आ दक्षिण भारतीय रंगमंच मे दुनू तरहक नाट्य-संगीतक प्रयोग होइत रहल अछि मुदा मराठी रंगकर्मी लोकनि नाट्य-संगीतक लोकरीति पर बेसी जोर दैत छथि।

बिहारक हिन्दी आ भोजपुरी रंगमंच मे सेहो नाट्य-संगीत पर

कोनहु उल्लेखनीय काज नहि भेल अछि। विदेशिया, उगना रे मोर..., हीरा डोम, वैशाली प्रभृति बहुचर्चित नाटक मे गीत-नादक आधिक्य रहितहु नाट्य-संगीतक तत्व हेरायले सन रहल अछि। परवेज अख्तर निर्देशित नाटक 'अरण्य कथा' सन गोटेक नाटक मे नाट्य-संगीतक समर्थ प्रयोग अवश्य भेल छल। शेष नाटक त' नाट्य-संगीतक नाम पर ढोल-झालिक संग खानापूरी करैत रहल अछि।

मैथिली रंगमंच मे शास्त्रीय आ कि लोक नाट्य-संगीतक सर्वथा अभाव रहल अछि। तकर एकटा प्रमुख आ समर्थ कारण ई अछि जे एतहुक निर्देशक अपना केँ सर्वगुणसम्पन्न बूझि नाट्य-संगीतज्ञ केँ सर्वदा उपेक्षा करैत रहल छथि। एतय ततेक होशगर-गुणगर संगीतकारक सेहो घोर अभाव अछि। एतय लोकगीतक गबैया सँ नाटकक संगीत दियाओल जाइछ फलतः नाट्य-संगीत चेफड़ी सन लगैत रहैत अछि। एहि रंगमंच मे अभिनये मात्र केँ रंगकर्मक उत्तम पक्ष मानल जाइछ। शेष रंगमंचीय पक्ष उचित ज्ञानक अभाव मे लुप्त भेल जा रहल अछि, जाहि कारण सँ मैथिलीक रंगकर्मी हिन्दी-भोजपुरी रंगमंच दिस मुड़ियारी देबय लेल बाध्य भ' जाइत छथि।

मैथिली रंगमंच मे संगीतक प्रयोग हेतु बड़ कम गुंजाइश रहय देल जाइत छैक। कारण मंचस्थ पात्र अपन संवाद बजबाक धरफरी मे संगीतक जगह आ सौन्दर्य केँ तोपि बैसैत छथि। एकाध नाटक छोड़ि आइ धरि एतय कोनहु नाटकक 'रिहर्सल' असल संगीतक संग नहि भेल। एहि रंगमंचक ई दुर्भाग्य रहलैक अछि जे एतय अधिसंख्यक निर्देशक नाट्य-संगीतक ज्ञान सँ प्रायः शून्य छथि। एतहुक निर्देशकीय कौशल्य एतबे जे पात्र केँ मंच पर यत्र-तत्र टहला दी, उठा-बैसा दी, हँसा-कना दी। बस। नाटकक शैली, शिल्प तकनीक प्रभृति आवश्यक तत्व एतय दुर्बल आ महत्वहीन सन अछि।

एखन धरि एतय नाट्य-संगीत सँ समृद्ध अत्यंत कम नाटक देखल अछि। किछु नाटक जेना- कुणालजीक रुक्मिणी-हरण, सीतायन, कुसमा-सलहेस, लोरिकायन, विदापत आदि, रोहिणी रमण झाक सामा-चकेवा, जटा-जटिन, लोरिक-चंद्रा इत्यादि मे गीतनाद अवश्य पर्याप्त छल मुदा ई सभटा नाटक लोककथा सँ संदर्भित (किंवा ओहि पर आधारित) अछि तेँ

एहि पर त' नाट्य-संगीतक लोकरीतिक अधिकार युक्तिसंगते छैक मुदा नहि जानि किएक ई नाटकसभ नाट्य-संगीतक लोकधर्मी प्रयोगक प्रयास सँ वंचिते रहल। प्रशांत कांत निर्देशित 'एकटा चिनमा', कुमार शैलेंद्र लिखित-निर्देशित 'मुदायज्ञ' आ विनीत झा निर्देशित 'गुलाबछड़ी' मे नाट्य-संगीतक अभिनव प्रयोग अवश्य आरम्भ भेल मुदा इहो प्रयोग नाट्य-संगीतक कोनहु स्वस्थ परम्परा नहि ठाढ़ क' सकल। कारण एहि मंच मे नाट्य-विषयक शिक्षा, शक्ति आ संसाधन तीनूक अभाव भेल जा रहल अछि। परिणामस्वरूप एखन जतेक नाटक भ' रहल अछि से नाट्य-शिल्प, अभिनय, प्रस्तुति शैली, नाट्य-संगीतादिक नाम पर मात्र काज निर्वाह करैए। कीर्तनियाँ नाटक लेल प्रसिद्ध कुणालजी त' 'गठबंधन' (लेखक- कुमार गगन)क निर्देशनक क्रम मे संगीत रखबे नहि कयल। सदल-बल 'म्युजिकल टीम'क संग मंच पर उपस्थित होबयबला कुणालजी गठबंधन मे एकटा झालियो नहि बाजय देलाह। 'चाही एकटा शिवसिंह' (लेखक- छत्रानंद सिंह झा) मे निर्देशक किशोर कुमार झा नाट्य-संगीतक नाम पर विद्यापतिक गीतक चित्रहारे रखलनि। अग्निपथक सामा, सेहन्ता, देसिल बयना, नव घर उठे, शपथ ग्रहण, बसही टोल, राज्याभिषेक प्रभृति नाटक मे संगीतक उत्कृष्ट प्रयोग भ' सकैत छल मुदा सुन्दर कथानकक अछैत निर्देशकक संगीत ज्ञान-निरपेक्षता आ प्रायः बौद्धिक तानाशाहीक कारण सँ ई नाटकसभ सांगीतिक प्रयोग सँ वंचिते रहि गेल।

नाट्य-संगीतक मादे कलकत्ता बोकारो, जनकपुर प्रभृति शहरिया मैथिली रंगकर्म आ मिथिलांचलस्थ ग्रामीण रंगमंचक सेहो मोटामोटी एहने दशा आ दिशा रहल अछि।

रिक्तक मे एहन संगीतक प्रयोग कयल जाय जाहि सँ पूर्व दृश्यक स्तर सेहो आहत नहि हो आ आगूक दृश्यक भाव आ चरित्र केँ सेहो अनुकूल हो। मुदा 'चाही एकटा शिवसिंह' मे एक ठाम आगिला दृश्य परम कारुणिक छल मुदा रिक्तक मे नाल पर द्रुत कहरवा बाजि रहल छल, लागल जेना अगिला दृश्य मे प्रायः युद्ध होयत। घरैया समान सँ सेहो सभ भाव-रूपक सांगीतिक प्रभाव उत्पन्न कयल जा सकैछ। एकमात्र घैल आ टिनही थारीक कुशल प्रयोग सँ नाट्य-संगीतक चारू प्रभाव उत्पन्न भ' जाइत अछि। (एतय नरहरि घोषक प्रयोग ध्यातव्य)। सितार पर विलंबित

वादन आ मृदंग पर तदनुकूल संगत जतय कोनहु वृद्ध आ गम्भीर चरित्रक द्योतक अछि ओतहि द्रुत वादन कोनो उच्छृंखल चरित्र केँ देखबैत अछि। डुग्गीक एकल प्रयोग सँ हकासल-पियासल आ जतराक झमारल पात्रक स्थिति देखाओल जा सकैत अछि। (एतय उस्ताद जाकिर हुसैनक प्रयोग ध्यातव्य)। बांगला रंगकर्मी (प्रायः नरहरि घोष 'अमिय निमाई' नाटक मे) मात्र चाँदखोल आ झम्पक प्रयोग क' नाटक केँ रोचक बनबैत छलाह।

मैथिलीओ नाटक मे टापर-टोइया नाट्य-संगीतक उपयोग भेल अछि (ओरिजिनल काम, खड़िया खेल, चांङुर आदि) चांङुर मे त' मात्र सिंथेसाइजर आ नाल सँ सभ प्रभाव उत्पन्न कयल गेल छल।

सारतः एतबे कहल जा सकैत अछि जे एखन धरि मैथिली रंगमंच मे नाट्य-संगीतक क्षेत्र मे बेसी काज नहि भेल अछि। ई रंगमंच एकटा कुशल निर्देशकक ताकहेर मे अछि जनिका समस्त रंगमंचीय तत्वक ज्ञानक संगहि नाट्य-संगीतक सेहो पर्याप्त किंवा अपेक्षित ज्ञान होनि। एतय एकटा संगीतज्ञ निर्देशकक पदार्पण सेहो आवश्यक। संगहि पूर्वस्थापित निर्देशक अपन तानाशाही वृत्ति छोड़ि नाट्य-संगीतज्ञक संग ताल-मेल बैसाय, एकर समुचित विस्तार करथि। ई रंगमंच एखनहुँ बाट ताकि रहल अछि एकटा ओहेन मर्मज्ञ आ प्रयोगधर्मी संगीत निर्देशकक जे अपन विराट संगीत कौशल्य सँ एतहुक नाट्य-संगीत केँ नव आयाम द' सकथि।

संदर्भ-संकेत :

1. नाट्यशास्त्र 1/116
2. नाट्यशास्त्र 1/122

आधुनिक मैथिली नाटक : पहिल शताब्दी
2006, चेतना समिति, पटना

•

नाट्य-निर्देश आ मलंगियाजीक पक्ष

नाटक आ कथा दुनू दू वस्तु अछि, दू विधा अछि। नाटक मे एकटा कथा रहितहुँ ओ कथा सँ फराक चरित्रक होइत अछि। स्वरूपगत ई चारित्रिक विषमता अपन स्वाद आ प्रभावक स्तर सँ सेहो अपन परिचिति अक्षुण्ण रखने रहैत अछि। चरित्रगत ई विषमता तखन त' आओरो देखार भ' जाइत छैक जखन एक सन लागयबला दू साहित्यिक विधाक पारस्परिक अन्तर्यात्रा होइछ। एहि अन्तर्यात्रा सँ अभिप्राय ई जे जखन कथा केँ नाटक मे आनल जाइछ किंवा नाटक केँ कथा मे आनल जाइछ त' ओ विषमकारी तत्वसभ अपन उपस्थितिक औचित्य सिद्ध करैत अछि जकर अभाव मे कथा नाटक सन आ नाटक कथा सन रहैत अछि, नाटकक 'बगय-बानि' रहितहु ओ नाटक नहि अपितु संवाद रूप मे गढ़ल आ कथनोपकथन सँ मढ़ल मात्र एकटा कथाटा रहि जाइत अछि।

मुदा नाटक आ कथा मे एकटा तत्व उभयनिष्ठ अछि आ से अछि नाटककार कि कथाकार द्वारा देल गेल निर्देश। ई निर्देश अपन आभ्यंतरिक ओ स्वभावगत भिन्नताक कारणे सम्बन्धित विधाक सौन्दर्य केँ सेहो परिपुष्ट करैत अछि आ संगहि सम्यक् विश्लेषण सँ ओकर प्रभाव केँ बोधगम्य बनबैत अछि। नाटक मे प्रयुक्त ई निर्देश, जकरा कि 'नाट्य-निर्देश' कहल जाय, मुख्यरूपेण दू प्रकारक कार्य करैत अछि। पहिल त' ओ पात्रक तत्कालीन अभिनय किंवा मंचीय गतिचर्या केँ निर्देश करैत अछि आ दोसर, जे ओ पात्र किंवा दृश्यक मंचीय उपस्थापनक क्रम मे आन-आन सहयोगी तत्वसभ केँ स्पष्ट करैत अछि। कथा मे कथाकार द्वारा गढ़ल ई निर्देश प्रत्यक्ष होइत छैक मुदा नाटक मे प्रत्यक्ष आ परोक्ष दुनू रूपक निर्देश प्रयुक्त होइत अछि। निर्देश-वाक्यक निजगुत रूप आ गढ़नि सँ सेहो नाटक आ कथाक विधागत फरिछौट भ' जाइत अछि, दुनूक शैल्पिक वर्गीकरण स्पष्ट होइछ। कथा मे ई निर्देश-वाक्य सम्पूर्ण वाक्य रहैत अछि मुदा नाटक मे ई वाक्य खंडित किंवा आंशिक रूप मे रहैत अछि। कथाक निर्देश कथाक्रमक विस्तार मे सहयोग करैत अछि जे कि एकर एकटा मुख्य प्रयोजन सन अछि, मुदा नाटकक ओ निर्देश, जे कि संवादक संग लागल रहैछ, पात्रक

अभिनय-पक्ष केँ सहयोग करैत अछि। ई निर्देश जेँ कि क्रियात्मक बेसी होइत अछि तेँ एतय क्रिया (अभिनय)प्रधान खंडित वाक्य उपयुक्त होइछ। मुदा मंचन-निर्देश मे सम्पूर्ण वाक्य राखल जाइछ कारण ओतय क्रिया (अभिनय)क संगहि मंचीय स्थिति सेहो प्रयोजनीय रहैत अछि।

निर्देश-स्तर सँ त' नाटक आ कथा केँ फराक कयले जा सकैत अछि मुदा कोष्टक (Bracket)क उपयोग सेहो एकटा विषमकारी-विभाजनकारी तत्व अछि। कोष्टकक उपयोग प्राय: गौण अर्थ केँ प्रकट करबा लेल किंवा पर्याय-प्रभाव उत्पन्न करबा लेल होइत अछि। मौखिक साहित्यहु (गाथा-गायन, कथावाचन, व्याख्यानादि) मे कोष्टकक अर्थ-प्रभावक खगता रहैत छैक मुदा ओकर प्रकट करबाक रूप दोसर तरहक अछि जकर एहि ठाम चर्च करब अभीष्ठ नहि। कथाक निर्देश हेतु कोष्टकक उपयोग उचित नहि कारण निर्देशगत गतिचर्यासभ अपन प्रत्यक्षरूप मे कथा मे उपस्थित रहैत अछि मुदा नाटक मे एहि कार्य हेतु कोष्टकक उपयोग कयल जाइछ कारण एहि ठाम ई निर्देशित कार्य-व्यापार अपन प्रधान अर्थ मे नहि गौण अर्थ मे विद्यमान अछि, प्रत्यक्ष नहि परोक्षरूप मे उपस्थित अछि।

खंडित किंवा क्रियात्मक निर्देश-वाक्य मे नाटककारक पक्ष ताकब कठिनाह अछि, असम्भव अछि। जेना- तमसाइत, डपटैत, कनैत, तरङैत आदि निर्देश मे पात्र लोकनिक अभिनय सम्बन्धी कार्य-व्यापार त' अछि मुदा एहि मे नाटककारक पक्ष स्पष्ट करयबला सहायक शब्द-समूहक अभाव अछि। तेँ नाटककारक पक्ष तकबा लेल ओहि निर्देश-वाक्यक मुखापेक्षी होबय पड़ैत छैक जे सम्पूर्ण वाक्य अछि आ जे अभिनयक संग-संग आनहु कार्य लेल उपयुक्त होइत रहल अछि। एतय हम स्पष्ट करय चाहब जे नाट्य-निर्देश संदर्भ मे नाटककारक पक्ष तकबाक हमर ई कार्य पूर्णरूपेण लिखित अर्थात् प्रकाशित नाटकक आधार पर अछि सेहो मैथिलीक आधुनिक नाटकक आधार पर। एतय ईहो कहब आवश्यक अछि जे पं. जीवन झा लिखित नाटक 'सुन्दर संयोग' हमरा अनुसारेँ मैथिलीक प्रथम आधुनिक नाटक नहि अछि। एकरा आधुनिक नाटकक प्रवेश-द्वारटा मानि सकैत छी। सोझे मैथिली भाषाटा रहने ओ आधुनिक कोना होयत? मैथिली नाटकक क्षेत्र मे आधुनिकताक प्रवेश 'बसात' नाटक (पं. गोविन्द झा, 1954 ई.) सँ मानल जा सकैत अछि। तेँ हम एहिए नाटक लग सँ

अपन अन्वेषण प्रारम्भ कयल अछि। एहि सँ पूर्वक नाटक सँ नहि।

नाटक मे उपस्थित-वर्णित पात्रक 'रिमोट कंट्रोल' नाटककारे लग होइछ। हुनके निर्देश पर पात्रसभक समस्त गतिविधि संचालित होइत अछि। निर्देशक आ कि पात्र लोकनि ओकर सौंदर्य केँ निखारबा मे अवश्ये मुख्य भूमिका निमाहैत छथि। तेँ नाटककारक एहि पाक्षिक मनोभाव केँ बड़ सुगमता सँ ताकल जा सकैत अछि। मैथिली मे आलोच्य अवधि मे अद्यावधि जतबा नाटक प्रकाशित अछि आ उपलब्ध अछि प्राय: सभ मे नाटककारक निर्देशजन्य पक्षक ताकहेर कयला पर चकबिदोर लगाबयबला आँकड़ा सोझाँ अबैत अछि। पं. गोविन्द झा, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, कुणाल, सन नामी आ नमहर नाटककार लोकनिक गढ़ल नाट्य-निर्देश प्रभु-मानसिकता सँ भरल आ प्रभुवर्गक लेल आदर भरल अछि। ई लोकनि अपन नाट्य- निर्देश मे अभिजात गंध केँ छोड़ि नहि सकलाह अछि। पात्रक चरित्र-गठन सँ ल' क' ओकर क्रिया-कलाप धरि मे ई गंध देखल जा सकैत अछि। नाटकक मुख्य स्वर शोषित पीड़ितक स्वर हो से आधुनिक नाटकक एकटा प्रमुख अवधारणा अछि। मुदा नाट्य-निर्देश हेतु प्रयुक्त वाक्य-वाक्यांशसभक माध्यम सँ प्राय: सभ समकालीन नाटककारक सम्मान-भाव प्रकारान्तर सँ कुलीने वर्ग हेतु प्रदर्शित अछि, सत्तापक्षक प्रति अर्पित अछि। से कखनो पैघ जातिक प्रति, कखनो पैघ वयसक प्रति त' कखनो पैघत्व संस्कार आ वंशावलीक प्रति। जखन कि नाटकक पात्र सदिखन एकटा 'पात्र' अछि, ने ऊँच-नीच, ने पैघ-छोट आ ने कुलीन-अकुलीन। पात्रक प्रति सामाजिक हेम-छेम आ आहे-माहे जोड़ब, ई त' नाट्य-लेखनरूपक प्राचीन परम्परा छल जाहि मे नाटकक प्रादर्शनिक रूप केँ यथासाध्य-यथासम्भव लौकिक यथार्थ सन बनयबाक समुद्योग कयल जाइत छल। मुदा नाट्यक्षेत्र मे क्रमेण होइत देशी-विदेशी प्रयोग-परिवर्तनादि एहि मंचस्थ लौकिक यथार्थ केँ निरस्त करब प्रारम्भ कयलक आ अपन समस्त प्रायोगिक ऊर्जा नाटकीय यथार्थ दिस लगओलक। एकरे प्रभाव छल जे पात्र केँ सामाजिक सरोकार सँ बेसी रंगमंचीय सरोकार आ रंगमंचीय यथार्थक अनुरूप गढ़ल-मढ़ल जाय लागल। ई प्रयोग खूबे सफल भेल आ शनै:-शनै: रंगमंच एहि स्तर पर सेहो अपन आधुनिक रूप स्पष्ट कयलक। एतय सुधांशु 'शेखर' चौधरी लिखित नाटक पहिल साँझ (1982 ई.)क भूमिका सँ सहमत भेल जा सकैत अछि।

पं. गोविन्द झाक पाँचटा नाटकसभ मे बसात (1954), अंतिम प्रणाम (1982) आ रुक्मिणी हरण (1990) अत्यन्त प्रसिद्ध नाटक अछि। पंडितजी अपन व्यक्तिगत जीवन मे आ समाजिक जीवन मे सेहो, ककरहु 'रेकार' नहि मारैत छथि, बड़का-छोटका सभक लेल आदरयुक्त सम्बोधन रखैत छथि। मुदा जखन पंडितजी अपन ओहिए समाज सँ नाटक लेल पात्र बीछैत छथि त' हिनक ई आदरभाव नितान्त एकभग्गू भ' जाइत छनि। तखन ओ विभिन्न प्रकारक मानक (वित्त, वय, संस्कार, कुल-शीलादि)क संग एकटा वर्गीकरण करैत भेटैत छथि आ अपन मानकक अनुसार 'उच्च' लेल आदर आ 'निम्न' लेल आदरक अभाव क' दैत छथि। 'अंतिम प्रणाम'क फूदन कामति, मुखिया, डाक्टर, चौधरी सन वयस्क पात्र अथवा 'रुक्मिणी हरण'क नारद, कृष्ण, रुक्मिणी, रुक्म प्रभृति पौराणिक पात्रक लेल- बैसैत छथि, करैत छथि, रखैत छथि, ठाढ़ छथि सन क्रियारूप प्रयुक्त होइछ मुदा रंजन, बेचन, मदन, कमली (अंतिम प्रणाम), किसुनमा, रुकमिनियाँ, गोनर, ठकबा, बसन्ता (रुक्मिणी हरण) लेल तद्रूपक क्रियाक अभाव अछि। नवयुवक कि नवयुवतीक लेल त' गलतीओ सँ आदर नहि छनि।

कम कि बेसी मुदा एहने सन स्थिति सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटकसभ भफाइत चाहक जिनगी (1975), लेटाइत आँचर (1976), पहिल साँझ (1982), लगक दूरी (1992) आ कि हथटुट्टा कुरसी (एकांकी संग्रह, 1992) मे सेहो अछि। कुणालजीक विदापत (2003) आ कुसमा-सलहेस (2006) मे सेहो एहने सन स्थिति अछि। आदर किंवा आदरक अभावक ई परम्परा हिनका लोकनिक बादहुक नाटककार मे देखल जाइत अछि जे कि प्राय: अपन पूर्व पीढ़ीक शैलीक अनुकरण सँ बनल अछि। एहि क्रम मे डा. अरविन्द अक्कू, विभूति आनंद, रोहिणी रमण झा, मंत्रेश्वर झा, कमल मोहन चुन्नू लोकनिक नाम लेल जा सकैत अछि। तेँ कहबा मे हर्ज नहि जे मैथिलीक प्राय: समस्त नाटककारक आदर, निष्ठा आ कि श्रद्धा निम्न पात्र लेल सुरक्षित नहि रहि सकल अछि। तकर मारिते रास कारणक संग एकटा त' ई कारण अवश्ये झलकैत अछि जे ई लोकनि नाट्य-लेखन केँ सुच्चा रंगकर्म नहि मानैत छथि। नाटक मे उपस्थित विद्यापति, सलहेस कि लोरिकक पात्र मात्र नाटकीय पात्र अछि, स्वयम् विद्यापति, सलहेस आ कि लोरिक नहि। जँ कोनहु चरित्रक बहिक्रम बेसी छैक अथवा ओ अभिजात-कुलीन वर्गक

अछि त' ओकर बहिक्रम आ कि ओकर अभिजनत्व, सम्बन्धित पात्रक अभिनय-पक्षक तत्व अछि नहि कि जीवन पक्षक। तेँ आदर-आदराभावक त' प्रश्ने नहि उठबाक चाही।

नाट्य-निर्देशक उपरोक्त रूप, शैली कि स्तर सँ अपना केँ फराक करैत एकटा नव धार, नव दिशा आ नव स्तर ल' क' उपस्थित भेल छथि महेन्द्र मलंगिया। पुर्णांकी, एकांकी, रेडियो नाटक आ चौबटिया नाटकसभ केँ मिला क' पचासटा सँ बेसी नाटक लिखि नाटकक एकटा सक्कत युगक निर्माण मे समर्थ मलंगियाजीक पात्रसभ अभिजात वर्गक हो कि अनभिजात वर्गक, सभक लेल समान निर्देश गढ़ब अपेक्षाकृत बेसी उचित बुझलनि अछि। मलंगियाजी अपन पात्र केँ मात्र नाटकक पात्र बूझि नाटक लिखने छथि। ओहि समस्त पात्र सँ अपन-अपनैतीक ने त' गुंजाइश रहए देने छथि आ ने आवश्यकता। सुच्चा रंगकर्मक प्राय: यएह खगता छैक जे ओ अपना पात्र केँ रंगमंचक अनुकूल, एकर सुविधा-असुविधाक अनुकूल, एकर सीमा आ विस्तारक अनुकूल गढ़य, अपनैती-कुटमैतीक अनुकूल नहि। एहि प्रकारक गढ़नि सँ एहि पात्रसभक चरित्र केँ नाटककारक 'अतिरिक्त आत्मीयता'क अपेक्षा नहि रहैत छैक। नाटककारक अनावश्यक अपनैती भरल पात्रक चरित्र कएक अर्थ मे अविकसित कहल जा सकैत अछि जे कि पूर्वक रंगकर्मक किंवा अझुको नाटककार (सक्रिय रंगमंच सँ इतर)क एकटा जड़ियायल समस्या सन रहल अछि। एहू स्तर सँ आधुनिक रंगमंच अपन बाट फुटका चुकल अछि। मलंगियाजी एहि प्रकारक अपनैती केँ अबडेरिये क' नाट्यलेखन करैत रहल छथि। वस्तुत: अपनैतियायल पात्र (किंवा चरित्र) हेतु अतिरिक्त सहानुभूतिक खगता होइते छैक जे कि सम्बन्धित चरित्रक लेल त' हानिकारक अछिए संगहि एहि सँ नाटकक सौष्ठव सेहो प्रभावित होइत अछि, ओकर 'कसाव' सेहो कमजोर होमय लगैत अछि। मलंगियाजी अतिरिक्त सहानुभूतिक भीख मंगैत पात्रक पक्ष मे नहि छथि अपितु बेर-बेर ओहि पात्र किंवा चरित्रक डारि-पात छकरि, ओकर समुचित विकासक पक्षधर छथि। एतय एतद्विषयक कुणालजीक आ किशोर केशवक पात्र-योजना सँ निश्चये सहमत भेल जा सकैत अछि। मलंगियाजीक पात्रसभ प्रवचन आ कि उपदेश सेहो नहि दैत अछि अपितु पात्र आ चरित्र परस्पर तेना गुम्फित रहैत अछि जे ओकरा अलग सँ कोनहु

विशेष प्रकारक 'एजेंसी' खोलि अपन बात कहबाक ने त' खगते छैक आ ने पलखतिए। फलतः 'मल्लर' (ओकरा आङनक बारहमासाक चारिम पात्र), 'कम्पनी' (ओरिजनल काम) आ साधु (काठक लोक, छुतहा घैल) सन-सन कालजयी पात्र (चरित्र) गढ़ल जा सकल अछि।

कहि चुकल छी जे हिनक नाटककार अपन कोनहु पात्र सँ आहे-माहे नहि जोड़ैत अछि फलतः हिनका आदर भरल कि आदर हटल नाट्य-निर्देश गढ़बाक खगते नहि छनि। एक त' मलंगियाजी अभिजात वर्गसभ सँ कम पात्र उठओलनि। जँ दोग-दाग मे एकाधटा छैको त' तकरा मे अभिजातक ओ रूप नहि देलनि जे समकालीन आन नाटककार लोकनिक नाटक मे देखबा मे अबैत अछि। ई त' ओहू वर्गक सामान्ये लोक केँ अपन पात्र बनाओल जकरा लेल कुल-गोत्र-वंश प्रभृति शब्द निरर्थक सन अछि, निष्प्रयोज्य सन अछि। उदाहरण लेल जीबू (जुआएल कनकनी), चन्द्रकान्त (ओरिजनल काम), गोनू झा (छुतहा घैल), ओकरा आङनक बारहमासाक छठम सभ केँ देखल जा सकैत अछि।

मलंगियाजीक 'गाम नइ सुतैए' (1993)क पात्र 'पहिल पुरुष' पं. गोविन्द झा लोकनिक मापदंड सँ आदरणीय वर्गक अछि कारण ई पात्र अधबेसू अछि आ युवक-पहिल आ युवक-दोसरक क्रमशः कका आ भैया अछि। एकर संवाद सेहो एकटा परिपक्व पात्र जकाँ गढ़ल गेल अछि। एहन पात्र लेल पंडितजी कएक ठाम आदरयुक्त निर्देश गढ़ने छथि। प्रमाण हेतु 'अन्तिम प्रणाम'क फूदन कामति, चौधरी, मुखिया आ डाक्टरक निर्देश-वाक्य केँ देखल जा सकैत अछि। मुदा एतहि मलंगियाजीक निर्देश-वाक्य देखल जाय जे ने त' आदर भरल अछि ने आदरक अभाव अपितु एकदम तटस्थ आ एकसमान–

– पहिल पुरुष बेंच पर बैसि जाइत अछि (पृ.-04)
– पहिल पुरुषक देह जड़ि जाइत छैक (पृ.-09)
– पहिल पुरुषक कोनो उत्तर नहि दैछ (पृ.-09)

एहि नाटक मे एकहिटा स्त्रीपात्र अछि– युवती, जे कि युवक चारिमक पत्नी अछि। एकरहु लेल ओहने निर्देश–

– युवती बेंच लग अबैत अछि (पृ.-02)

– युवती कोनो उत्तर नहि दैछ (पृ.-03)
– युवती दू गिलास चाह बेंच पर राखि दैछ (पृ.-04)

ओरिजनल काम (2000 ई.) मे कुल बारहटा पात्र अछि जाहि मे एकहिटा पात्र उच्च वर्गक अछि– चन्द्रकान्त। एहि पात्रक लेल निर्देश देखल जाय–

– चन्द्रकान्त आबि क' अङनै मे ठाढ़ होइछ (पृ.-35)
– चन्द्रकान्त जीवलालक हाथ पकड़ि क' उठबैछ (पृ.-53)
– चन्द्रकान्त चलि दैछ (पृ.-57)

एकटा आओरो खास बात अछि हिनक किछु नाटक मे। ओ पात्रक सामाजिक-पारिवारिक नामक बदला व्यक्ति एक, व्यक्ति दू आ कि पहिल, दोसर, तेसर आदि लिखने छथि। यद्यपि एहि चित्रणक चलते हिनका पर नाटकक मानवीय दृष्टिक बहन्ना गढ़ि क' कएक प्रकारक आक्षेप सेहो कयल गेल अछि। ई आक्षेप कोनहु रंगेतरे व्यक्तिक भ' सकैछ से कहबाक खगता नहि। समकालीन रंगमंचक ई प्रमुख मान्यता सन छैक जे ओ पात्रसभ केँ सर्वप्रथम पात्र बूझैत अछि, सुच्चा एकटा रंगमंचीय पात्र, कोनहु प्रकारक सामाजिक कि लौकिक पात्र कि चरित्र सँ स्थूलतः आ सूक्ष्मतः दुनू स्तर सँ भिन्न। 'ओकरा आङनक बारहमासा' आ 'गाम नइ सुतैए' मे एहिए रूपक पात्र-चित्र अछि। 'ओकरा आङनक बारहमासा' मे त' किछु पात्रक पारस्परिक परिचय सेहो एही माध्यमे देल गेल अछि–

पहिल– तेसरक संगी
दोसर– चारिमक पुतोहु
तेसर– चारिमक बेटा
सातम– चारिमक पोता
नवम– चारिमक संगी

अभिप्राय जे मलंगियाजीक नाटक मे अंकधारी आ नामधारी दुनू प्रकारक पात्र भेटैत अछि मुदा एकर अछैत हिनक नाट्य-निर्देश मे कोनहु स्तर-भेद नहि। जेहने निर्देश-निष्ठा उचितलाल, खूबलाल, कम्पनी, सफीक, भगता (ओरिजनल काम) लाकनिक लेल ओहने जीबू, नीलू, बिन्दा, संझा (जुआएल कनकनी), पहिल, दोसर, तेसर.... (ओकरा आङनक बारहमासा)

लोकनिक लेल। निर्देश-लेखनक संदर्भ मे ई संतुलन-कौशल्य मलंगियाजी केँ उच्च स्थान धरि पहुँचा दैत अछि।

एकटा साकांछ नाटककार अपन नाटक केँ विरुदावली कदापि नहि होबय देत, भने ओ नारा भ' जाय, कथा भ' जाय कि रिपोर्ट-संस्मरणक एकटा विशेष रूप किएक ने भ' जाय। कारण ई नाटक आ नाटककार दुनूक हत्या सन छैक। मलंगियाजीक नाटकक रचना-प्रक्रिया केँ परेखला उतर ई देखैत छी जे हिनक समस्त नाटक कएक बेरे लिखल जाइछ, रिहर्सलक अन्तराल मे एकर शोधन-मार्जन कयल जाइछ, शोधित-मार्जित नाटकक कएक बेर कएक ठाम प्रदर्शन होइछ, प्रदर्शनक उपरांतहु अपेक्षित सुधार कयल जाइछ, आलोचना-प्रत्यालोचनाक द्वन्द्वक उत्पाद केँ यथासम्भव समाहित क' तखन पुस्तकरूप मे आनल जाइछ। समकालीन रंगमंचक यएह प्रक्रिया छैक जकरा अजमा क' आ ओहि प्रक्रिया सँ गुजरि क' मलंगियाजी नाटक करैत आयल छथि आ एही प्रक्रियाक पक्षधर सेहो छथि। कारण एहि मे नाटक आ नाटककार दुनू एकहि संग जीबि रहल होइत अछि। मलंगियाजीक समस्त नाटक रंगमंचक एही निस्सन प्रक्रिया सँ बहरायल उत्पाद अछि तेँ हिनक नाटकसभ आधुनिक मैथिली रंगमंचक एकटा नमहर उपलब्धिक सूची मे गण्य अछि।

सन्दर्भ :

1. कविवर जीवन झाक नाटक- सुन्दर संयोग
2. पं. गोविन्द झाक नाटक- बसात, अंतिम प्रणाम, रुक्मिणी हरण
3. सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक- पहिल साँझ, भफाइत चाहक जिनगी, लेटाइत आँचर, पहिल साँझ, लगक दूरी आ हथटुट्टा कुरसी (एकांकी संग्रह)
4. कुणालक नाटक- विदापत, कुसमा-सलहेस (अंतिका मे प्रकाशित)
5. महेन्द्र मलंगियाक नाटक- जुआएल कनकनी, ओरिजनल काम, छुतहा घैल, ओकरा आङनक बारहमासा, गाम नइ सुतैए, ओरिजनल काम।

महेन्द्र मलंगिया : जीवन एवं सृजन,
मैलोरंग, नई दिल्ली, 2015

•

शहरी रंगकर्म : मैथिल सन्दर्भ

हम जखन शहरी रंगकर्मक गप कर' लगैत छी त' बरमहल हमरा ग्रामीण रंगमंच आ रंगकर्मक किछु मूलभूत समस्या कचोटैत-झमारैत रहल अछि। विस्तार मे जायब एतय अभीष्ट नहि। मुदा एतबा त' अनुभव करिते छी जे शहरी रंगमंचक स्वरूप सँ जँ ग्रामीण रंगमंचक योगदान बेरा देल जाय त' ओ छुच्छुन सन लागय तकर बेसी सम्भावना। मैथिलीक परिप्रेक्ष्य मे त' ई सोझे-सोझ लागू होइत देखैत छी। शहरी रंगकर्म सँ हमर अभिप्राय एकदम सोझ अछि– शहर मे होबयबला रंगकर्म आ ओतय उपलब्ध संसाधनक संग होबयबला रंगकर्म । हम एहि ठाम गाम आ शहरक सीमा, स्वरूपादिक ओझरौट नहि उपस्थित करैत एतबा कहय चाहैत छी जे शहरी रंगकर्म अपेक्षाकृत बेसी सक्रिय अछि आ बेसी शिक्षित सेहो अछि। मैथिलीक शहरी रंगकर्म मे जाहि शहरसभक नाम प्रमुखता सँ लेल जा सकैछ से अछि– कोलकाता, पटना, बेगूसराय, जनकपुर, विराटनगर, सहरसा, मधुबनी, जमशेदपुर, दिल्ली आदि।

ग्रामीण रंगमंच लोकधर्मी आ लोकसापेक्ष मंच रहल अछि। यद्यपि ई मापदंड बेस दृढ़ता सँ लागू नहि कयल जा सकैत अछि। एतय सक्रियताक अभाव छैक। तकर मारिते रास अपरिहार्य कारणसभ सेहो छैक तेँ ई रंगमंच उत्सवधर्मिता लेल बाध्य जकाँ सेहो अछि। मुदा ताहि मामिला मे शहरक रंगमंच बेस लाभुक रहल अछि। प्राय: तीसक दशक मे मिथिला सँ कएक स्तर पर नवरूपेँ बाह्य सम्पर्क स्थापित भेल। से एकर युगसापेक्ष खगता सेहो छलैक। वैश्विक परिदृश्यक संगहि भारतक स्थिति-परिस्थिति सेहो बदलि रहल छल। कने देरीए सँ सही मुदा मिथिला मे सहो ई लहरि लहरल। राज-काज, शिक्षा, साहित्य, अर्थ, विज्ञान आ सांस्कृतिक क्षेत्र मे हस्तक्षेप पूर्वापेक्षा बढ़य लागल छल। परिणामत: लोक आप्रवासन-उत्प्रवासन लेल बाध्य होइत गेल। दिल्ली-पटना पयरे त'र बुझाय लागब शुरू भ' गेल छलैक। कलकत्ता त' अंगनै मे पड़ैत सन छलैक। मात्र एकटा कलकत्ताक पृष्ठभूमि पर मैथिली साहित्य मे मारिते रास कथा-कविता-उपन्यासादि अछि। ई मिथिलावासी लोकनि जतय जाइत गेलाह से अपना साहित्यिक-

सांस्कृतिक-शैक्षिकादि परिचितिक संगहि अपन-अपन पाबनि-तिहार, सौख-सिंगार, आचार-व्यवहार पर्यन्त केँ उघने गेलाह। जतय रहय लगलाह ताहि माटिक संग अपनैती जोड़ैत अपन माटिक सुगंधि केँ खिरबैत रहलाह। एकर कएकटा प्रत्यक्ष प्रभाव सोझाँ आयल। मिथिला-मैथिली-मैथिल पर सँ स्वगृही-घरमुहाँ-असमाजिक सन थोपल दाग धोखरय लगलैक। नव जगह, नव अनुभव आ नव चैलेंज सेहो सोझाँ अयलैक। साहित्यो ताहि रूप मे फौदाय लागल। मैथिली सेहो अपन नव जजातक संग हुलसैत गेलीह।

आप्रवासन-उत्प्रवासनक क्रम सदति चलैत रहल अछि। मानव-सभ्यताक विकास एकर गवाहियो द' रहल अछि। कदाचित् विकासवादक ई स्थायी नियम सन अछि। मिथिला कोना आबंच रहओ, मिथिजन कोना अस्पृश्य रहथु। मिथिलोक पंडित लोकनि उत्प्रवासित होइत रहलाह। एतहुक विद्वान, संत, दार्शनिक-दर्शनशास्त्री लोकनि अपन परिव्राजकरूप मे जहाँ-तहाँ जाइत रहलाह। तत्कालीन राजा लोकनि अपन दरबार मे मैथिल पंडित-विद्वान केँ पाबि गौरवान्वित सेहो होइत छलाह। इतिहास साक्षी अछि। असम, गुजरात, मध्यप्रदेश, काशी, बंगाल प्रभृति जगह आइयो एकर साक्षी अछि। महाप्रभु चैतन्यदेव जे कि बंगालक साहित्य-संस्कृतिक मुकुटमणि छथि से मैथिले पंडितक उत्प्रवासन-परिव्राजनक सुफल थिक।

पंडित लोकनिक छिट-फुट होयब अदौ सँ चलि रहल छल। मुदा तीसक दशक मे जे छिट-फुट होइत जाइ गेलाह से पूर्वापेक्षा कएक स्तर सँ कएक रूपेँ भिन्न छल। पूर्वक पंडित लोकनि अपन ज्ञान, दर्शन, साहित्यादि केँ खिरौलनि मुदा संस्कृति केँ खिरायब प्रधानकर्म सन नहि बनि सकल छल। उपरोक्त उत्प्रवासन अपन सांस्कृतिक महत्वक कारणेँ चर्चित रहल। एहि कालखण्डक आव्रजन मुख्यत: आर्थिक कारण सँ छल मुदा शिक्षा, संस्कृति इत्यादि एकर अन्य समानान्तर कारण सेहो छल। मिथिला सँ बाहरक जे शहर एकर संस्कृति केँ पहिल खेप देखार-जगजियार होयबाक प्रमुख अवसर देलक से प्राय: कलकत्ता छल। आ प्राय: ताही केर प्रतिफल छल जे पहिल-पहिल मैथिलीक पढ़ौनी कलकत्ता विश्वविद्यालय मे प्रारम्भ भेल। एहि लेल मैथिली-मिथिला महामान्य आशुतोष मुखर्जीक आभारी अछि, कृतज्ञ अछि आ कएक अर्थ मे ऋणी सेहो। तकर बाद बनारस मे मैथिलीक पढ़ौनी प्रारम्भ भेल, तखन पटनाक खेप अयलैक। आनन्ददायक

बात इहो अछि जे मिथिलाक बाहर प्राय: कलकत्ते मे पहिल बेर मैथिलीक रंगकर्म प्रारम्भ भेल। कहल जाइछ जे एकर बाद बनारसो मे भेल मुदा तकर इतिवृत्त हमरा उपलब्ध नहि भ' पाबि रहल अछि। एतबा धरि अवश्य जे मैथिली नाट्य-लेखनक इतिहास कलकत्ताक अपेक्षा बनारसक बेसी प्राचीन अछि। बनारसक मैथिली नाट्य-लेखनक प्रस्थान-विन्दु 1904 ई. मे कविवर जीवन झाक लिखल सुन्दर-संयोग सँ मानल जा सकैत अछि। कलकत्ताक 1953 सँ। तकर बाद त' प्राय: पटने मे रंगकर्मक प्रारम्भ भेल। पटनाक मैथिली नाटकक प्रारम्भ 1955-56 ई.क लगीच स्थिर होइत अछि। ई समय छल पारसी थियेटरबला। एहि कालखण्ड मे प्रो. आनंद मिश्र, प्रो. हरिमोहन झा लोकनि एहि दिशा मे काज कयल जकरा बाद मे चेतना समिति, अरिपन, नवांगन, कला समिति, भंगिमा, आंगन प्रभृति संस्था अपना-अपनी क' गति-प्रगति देलक। कहब आवश्यक अछि जे पटना मे आइ 'भंगिमा' सक्रिय अछि। चेतना समिति सेहो साल पिछु एकटा क' नव नाटक करबैत रहैत अछि।

समयक सांस्कृतिक प्रभाव अपन रंग तेना देखबैत गेल जे कएकटा शहर मे रंगसंस्थासभ बनल आ अपन सक्रियता रखलक। मुदा नाटक व्ययसाध्य त' छैके, श्रमसाध्यो कम नहि। किछु वर्ष बाद एहि शहरसभक संख्या घटहु लगलैक आ एहि रंगसंस्थासभक भूमिका मात्र 'जम्पिंग स्टोन' सन भ' गेलैक जतय सँ लोक कूदि क' आन उँचका दलान दिस जा सकैत छल। एखन मात्र तीन-चारि टा शहर एहन अछि जतहुक रंगमंच सक्रिय अछि– कोलकाता, पटना, जनकपुर आ दिल्ली।

शहरक रंगमंच किछु भिन्न प्रकृतिक अछि। ई 'ओभरटाइम थियेटर' बेसी अछि। शहरक निवासी अपन नौकरी-चाकरी सँ समय बचेलाक बाद एकरा लेल समय निकालि पबैत छथि। प्राय: ई 'पतरखेप' एखन किछु दिन आओरो चलत कारण मैथिलीक रंगकर्मक ओ भविष्य नहि जे हिन्दी किंवा आन भाषाक अछि। विडम्बना त' ई अछि जे एहि दिशा मे मैथिलीक स्थापित संस्थासभ द्वारा कोनहु विचारे नहि कयल गेल जे कि अत्यावश्यक सन अछि। सांस्कृतिक चेतनाक स्तर सँ हमरा लोकनि बंगालक कनौसियो भरि नहि भ' सकलहुँ। सम्पूर्ण मिथिला मे हमरा लोकनि कोनहु शहर केँ सांस्कृतिकरूपेँ नहि विकसित क' सकलहुँ।

मिथिलाक स्खलित सांस्कृतिक चेतना आब अपन विकरालता देखयबाक सभटा ब्योंत क' चुकल अछि। ई स्थिति मिथिलाक गाम-गमाइत मे सेहो देखल जा सकैत अछि। एकर दुष्प्रभाव शहरी रंगमंच केँ भोगय पड़ि रहल छैक। एतय युवाक आगमन सँ बेसी गमने भेल। किंवा एना कही जे संस्थासभ अपन चरित्र आ संस्कार केँ युवानुकूल नहि बनाबय चाहि रहल अछि। पटनाक संदर्भ मे त' किछु आओरो विशेष कारणसभ अभरैत अछि। एतय रोजगारक सम्भावना ततेक बेसी नहि रहि गेल छैक जे युवा केँ जगह भेटैक। एतहुक रोजगारक आर्थिक स्तर ओहन नहि छैक जे युवा केँ 'पैकेज' रूप मे लोभा सकय। पटना मे एहन कोनहु अर्थकरी मैथिल संस्था (आर्यावर्त-इण्डियन नेशन-मिथिला मिहिर सन) शेष नहि रहि गेल अछि जतय मैथिल समूह अपन अर्थपूर्ति करय आ आनुषंगिक रूपेँ साहित्य, संस्कृति, अथवा रंगमंच एकर लाभ उठा सकय। पहिले जतबा गोटे साहित्यकर्मी-संस्कृतिकर्मी छलाह ताहि मे प्राय: सभ गोटे सरकारी चाकर छलाह। जँ सरकारी नहि त' सरकारीए सन चाकर अवश्ये छलाह। नून-रोटीक ब्योंत धराओल छलनि। निश्चिंत सँ साहित्य-रंगमंचादि मे लागल रहैत छलाह। साहित्य आ रंगमंचक रचनात्मकता मे एकटा अन्तर बड़ महत्वपूर्ण अछि। रंगमंचक अतिरिक्त साहित्यक जतेक विधा अछि ताहि मे यायावरी जीवन सहयोगीए होइत रहल अछि। बाबा यात्री कि राजकमलक सम्बन्ध मे ई मापदंड सम्पूर्णता सँ लागू होइछ। हिनका लोकनिक साहित्य संवर्द्धना मे एहि यायावरी जीवनक अभूतपूर्व उपादेयता रहल। मुदा रंगकर्मक 'डिमांड' किछु अपना तरहक अछि। यायावर साहित्यकार कथा-कविता-संस्मरण त' लिखि लेताह मुदा रंगकर्म सेहो क' लेताह, रंगमंच केँ सेहो समृद्ध क' लेताह से प्राय: असम्भव। अपन रंगमंचीय 'उत्पाद' ल' क' परिभ्रमण करब सम्भव थिक मुदा रंगमंचक रचनात्मक विकास लेल रंगसंस्था केँ एक ठाम थत मारि क' रहहि पड़तैक, एकटा केन्द्र कायम करहि पड़तैक। रंगकर्म 'चलता काज' नहि छैक।

कहनहि छी जे शहरक रंगकर्म 'ओभरटाइम रंगकर्म' बेसी अछि तेँ बेसी ठाम ई 'ठेहियायल रंगकर्म' सिद्ध भेल अछि। पटनोक रंगकर्म किछु तेहने सन रहल तथापि ई मारिते रास उल्लेखनीय काजसभ सेहो कयलक। मुदा अगिला 25-50 वर्ष धरि सेहो ई काज करैत रहय ताहि

लेल किछु विषय विचारणीय अवश्य अछि। 'अरिपन' केँ ओकर मारुक महंथीए ढाहि देलकै। प्रशांत कांतक बाद 'आंगन' मे भरि ठेहुन घास भ' गेल। रविन्द्र बिहारी राजू आ मनोज मनुज कला समिति केँ बिसरि देलनि। लागल-लागल चेतना समिति एकटा नाटक क' लेलाक बाद अपन रंगमंचक वार्षिक दायित्वटा निमाहैत अछि। आगुओ निमाहिते रहत से कहबा मे एहि कारणेँ थतमती अछि जे जखन पटना मे रंगमण्डलीएक हाल बेहाल छैक त' आयातित रूपेँ कतेक दिन निमहि सकत। अपन लोकसापेक्ष फिकिर केँ अबडेरने दर्शकक-प्रशंसकक संख्या मे अनपेक्षित ह्रास सँ समिति स्वयं चिन्तित अछि। एहन विषम स्थिति मे नाट्य-प्रदर्शनक अतिरिक्त साहित्यक कोनहु अनुशासन मे ओ तागति नहि छैक जे श्रोता-दर्शक केँ जुमा लिअय। मुदा कष्टकारक विषय ई अछि जे आइ सभ सँ बेसी उपेक्षित यएह प्रभाग अछि, एही प्रभागक लोक अछि। साहित्य अकादमी मे पुरस्कृत विजेता रूप मे रंगकर्मी 'हेट्रिक' लगौलनि (2006 मे विभूति आनंद, 2007 मे प्रदीप बिहारी आ 2008 मे मंत्रेश्वर झा पुरस्कृत भेलाह)। मुदा ई एकटा गणितीय आँकड़ा सँ बेसी किछुओ नहि सिद्ध भ' सकल अछि। साहित्य अकादमी सेहो मैथिलीक रंगमंचीय श्रीवृद्धि दिस सँ आँखि मुनने रहल अछि। आनहु अकादमीक मोटामोटी यएह हाल अछि। पूर्व मे भंगिमा खूबे काज कयलक मुदा हेमनि मे एकरहु पर ककरहु नजरि लागि गेल सन छैक। नव शदीक आगमन आ तदजन्य सर्वक्षेत्रीय परिवर्तनक अनुकूल भंगिमा पछुआयल जा रहल अछि। दोसर समर्थ पीढ़ीक अभाव त' किछु तेहने सन संकेत करैत अछि। सामाजिक योगदान आ सहभागिता सेहो खूबे घटलैक अछि। महगी बढ़ला सँ नाट्य-प्रदर्शन महग भेल अछि से अतिरिक्त संकट। एखन जे ई सहभागिता आ योगदानक ह्रास-संकट अछि से रंगमण्डली सँ इतर साहित्यिक महंथ लोकनिक बेसाहल अछि जाहि मे रंगकर्म अनेरे पिचा रहल अछि। तथापि समस्या सँ उबरबाक लेल ब्योंत त' करहि पड़तैक। किछु पारम्परिकता केँ तेजय पड़तैक। रहिर्सलक पारम्परिक रूप बदलय, प्रदर्शनक सेहो पारम्परिकता बदलय आ नव-नव शिल्प उपयोग मे आबय तकर चेष्टा कयल जाय। मैथिली साहित्यक प्राय: सभ प्रभाग-प्रकोष्ट मे एकटा इमनदार आ युगसापेक्ष चिन्तनक महती आवश्यकता अछि। शर्त एतबा जरूर जे ओ चिन्तन स्वस्थरूपेँ हो आ ओकर प्रभाव-ग्रहण सेहो स्वस्थ मनोदशा सँ

कयल जाय। एकटा युवा-सम्मेलनक सेहो खगता लगैत अछि जे मैथिलीक भविष्य-नीतिक निर्धारण मे सन्नद्ध हो। समस्त महंथानक अगुऐती युवा करय आ वृद्धजन (कायिक-वाचिक-मानसिक रूपेँ) पाछू रहथु अपन अनुभव देबाक लेल। कारण 'बूढ़ाभाइ' लोकनिक अगुऐती सँ क्रांतिक स्वर आ रूप दुनू बुढ़ा गेल अछि। संवाद कि मध्यस्थता लेल ओ लोकनि अवश्ये उपयोगी होयताह मुदा एखन मैथिली मे एकटा क्रांतिक खगता अछि, एकटा आन्दोलनक दरकार अछि। समाज केँ सेहो अपन पारम्परिक सोच बदलबाक यएह समय छैक अन्यथा सांस्कृतिक भ्रष्टता तेहन पटकनियाँ देत जे भीड़क अंश बनल रहि जायब। अनचिन्हार बनि क' रहि जायब शासित होयबा लेल अभिशप्त, रंग-बिरंगक अपद्दान शिरोधार्य करबा लेल नतमस्तक आ सांस्कृतिक जी-हुजूरी लेल उपस्थित। मैथिलीक महंथक घोकचल विचार सँ जहिना सीतामढ़ी, शिवहर, चम्पारण, मुजफ्फरपुर, भागलपुर, हाजीपुर, समस्तीपुर, खगड़िया, बेगूसराय सन मैथिलक्षेत्र केँ गमाओल जा रहल अछि तहिना मैथिलीक साहित्यिक महंथी एकर साहित्य केँ कथा-कविताक साहित्य धरि धोकचा क' राखि देबाक समुद्योग कयने जा रहल छथि। एकर चोट सँ एतद्क्षेत्रीय ग्रामीण मैथिली रंगमंच त' चौपट्टे अछि, मैथिलीक शहरी रंगकर्म सेहो अप्रत्याशित रूपेँ प्रभावित भ' रहल अछि। एकरा एखनहुँ अकानब आवश्यक अछि। सरकारी योजनाक लाभ सेहो रंगमंचक समृद्धि लेल उठाओल जयबाक चाही। कारण रंगमंच मे जन-संकट सँ कनेको कम घातक नहि अछि अर्थ-संकट। तेँ प्रायोजित नाटक दिस सेहो डेग बढ़बाक चाही। ई कतेक दुखित करबाक खबरि अछि जे पटनाक संगहि प्राय: सम्पूर्ण बिहारक एकहुटा मैथिलीक रंगसंस्था अपन गैर सरकारी संगठनरूप मे उपस्थित होयबाक हुब्बा नहि रखैत अछि। सरकारी विज्ञापन पयबा लेल जे सरकारी अर्हता निर्धारित अछि ताहि पर मैथिलीक कोन पत्रिका आ कोन संस्था कतेक ठाढ़ उतरत से कहि नहि। ओहि अर्हता-नियम केँ भाषा विशेष लेल किंवा सांवैधानिक भाषा लेल सुपाच्य आ सुनम्य अवश्ये बनाओल जाय। आ एहन सन मारिते रास साहित्यिक-सांस्कृतिक काज करबा लेल कोनहु देवदूत त' नहिए उतरताह, आ ने एखन कोनहु चमत्कारे होबय जा रहल अछि मिथिला-मैथिलीक कपार मे। मोटामोटी चारूभर दोयम दर्जाक लोक जग्गह छेकने अछि आ

मिथिला-मैथिली केँ दिशा-निर्देश करबाक बदला मे दिग्भ्रमिते कयने जा रहल अछि। सुच्चा लोकक चुप्पी गबदी नहि बनि रहल अछि आ ने कोनहु बिहाड़िक पहिलुका शांतिक आभासे द' रहल अछि। युवावर्गक खगते नहि गमल जा रहल अछि। पूर्वपीढ़ी अपन दोहरौनीए केँ विकास कहने जा रहल छथि। कुर्सी केँ माथ चढ़ि क' बाजब बढ़ले जा रहल अछि। पत्र-पत्रिकाक भाषिक आ माटिक सरोकार केँ पुरना गप कहल जा रहल अछि। योग्य केँ अनठा क' अयोग्यक चुमान करब एकटा आवश्यक कार्य-संस्कृति सन भेल जा रहल अछि। आ एहन सन मारिते रास स्थिति एकहि संग मिथिला-मैथिलीक सांस्कृतिक आ रंगमंचीय रूप केँ गरोसबा लेल एकमत अछि। संस्कृतिकर्मी आ रंगकर्मी लोकनिक सोझाँ की अहू सँ पैघ संकट आओत! लड़ाइ लेल छाती आ डाँड़ सक्कत करहि पड़त, कारण ई लड़ाइ प्रकृतिगत किछु आन तरहक अछि। एहि मे जबारक संग-संग सौजनियोँ सँ सेहो लड़य पड़त। से आइ ने काल्हि लड़हि पड़त।

सांध्य गोष्ठी, चारिम पुष्प, 2012, पटना

•

भंगिमा : सक्रिय रंगकर्मक समर्थ प्रतिमान

'भंगिमा'क स्थापना 04 अगस्त 1984 ई. क' भेल छल। एकर गठन किएक भेल, कोना भेल, पृष्ठभूमि की छल, पृष्ठपुरुष के सभ छलाह प्रभृति विषय-विन्दुक विस्तार करब ने त' एत' पार लागत आ ने से अभीष्टे अछि। मुदा एतबा अवश्य कहल जा सकैत अछि जे तहियाक रंग-परिदृश्य की छल, केहेन छल आ कतबा छल। पटना मे 1955-56 ई. मे दरभंगा कोठीक सोझाँ ईशनाथ झा लिखित नाटक 'चीनीक लड्डू'क मंचन भेल छल जकर निर्देशक रहथि पं. श्री नन्द किशोर झा। तदनन्तर पं. गोविन्द झाक 'कीर्ति सिंह' (1958 ई.), प्रो. हरिमोहन झाक 'मंडन मिश्र' (1958 ई.) प्रभृति गोटपगरा नाटकसभ होइत रहल। आठम दशक मे एकटा महत्वपूर्ण निर्णयक अनुसार चेतना समिति (पटना) नियमित रूपेँ अपन विद्यापति स्मृतिपर्व समारोह मे एकटा नव नाटक करय लागल। अपन आनहु अवसर पर समिति नाटक क' अपन नाट्यरुचि देखायब प्रारम्भ कयलक। एकरा एना कही जे पटना मे मैथिली रंगमंचक सूत्रपात चेतने समिति कयलक। 1973-74 ई.क लगीच पटनाक रंगमंच अपन ठोस आकार लेबय लागल आ तकर बादहि सँ भफाइत चाहक जिनगी (1974), लेटाइत आँचर (1975), पहिल साँझ (1978) (तीनू सुधांशु 'शेखर' चौधरीक नाटक), पसिझैत पाथर (1976, डा. रामदेव झा), ओकरा आङनक बारहमासा (1979), एक कमल नोर मे (1980) (दुनू महेन्द्र मलंगियाक नाटक), आगि धधकि रहल छै (1981, अरविन्द कुमार 'अक्कू'), अंतिम प्रणाम (1982, पं. गोविन्द झा), पाथेय (1968, गुणनाथ झा), चौबटिया पर (डा. गंगेश गुंजन) प्रभृति नाटकसभ मंचित होइत गेल।

28 फरवरी 1982 क' 'अरिपन' नामक नाट्यमंच गठित भेल जे 'बेचारा भगवान' (मराठी नाटकक शैलेन्द्र पटनियाँ द्वारा मैथिली अनुवाद), 'बिरजू, बिलटू आ बाबू' (1983), गाम नइ सूतैए (1984) (दुनू महेन्द्र मलंगियाक नाटक), ताल-मुट्ठी (1983, अरविन्द कुमार 'अक्कू'), फागुन (1984, उषाकिरण खान) प्रभृति नाटकसभ कयलक मुदा एकर प्रदर्शन-स्तर पर प्रश्नचिह्न सेहो लगैत रहल। तथापि नाटकक समारोही आयोजन क' अरिपन मैथिलीक रंगमंच मे चर्चा एवम् प्रशंसा अवश्य पओलक। 1983 मे 'नवांगन' गठित भेल मुदा 'अगुरवान' (धूमकेतुक

कथाक शैलेन्द्र पटनियाँ द्वारा नाट्यरूपान्तरण)क अतिरिक्त कोनहु नाटक अपन उल्लेखनीय छाप नहि छोड़ि सकल।

पारसी थियेटरक आकर्षण आ प्रभाव प्रो. हरिमोहन झा, प्रो. आनंद मिश्र, पं. गोविन्द झा लोकनि केँ रंगमंच दिस अयबा लेल एकपेरिया त' धरौलक मुदा एखनहुँ मैथिलीक निजगुत रंगमंचक मारिते रास मौलिक समस्यासभ यथावत् मुँह बाबि रहल छल। गणेश सिन्हा, जावेद अख्तर, परवेज अख्तर लोकनि केँ आयात करैत काज चला रहल छल। रंगमंचक आन-आन प्रभाग मे अपन तकनीशियन आ कि विशेषज्ञक अभाव सदति रंगमंच मे मैथिल दृष्टिक सम्भावना केँ तोपने रहल, अभिनयक मैथिल परम्परा केँ गहनमरू बनबैत रहल। आन भाषाक रंगमंचक विकास आ स्तर तत्कालीन मैथिल रंगकर्मी केँ सम्मोहित त' करैत छल मुदा रंगमंचक मैथिलत्व किंवा मैथिलरूपक निस्सन स्थापना लेल उत्प्रेरित नहि करैत छल जे कि कोनहु भाषाक रंगमंचीय निजता ओ अपन मौलिक विकास लेल किछु आवश्यक तत्त्वसभ मे सँ छल। अपन संस्कृति आ सांस्कृतिक रूप केँ रंगमंचक माध्यम आ परिधि मे व्याख्यायित करब त' सहजेँ दिवास्वप्नवत् छल। साहित्यक मुख्य धारा मे अपन नाटक किंवा नाट्य-परम्परा केँ देखब तहिया एकटा नमहर सांस्कृतिक अपराध सन छलैक जकर पुष्टि किरतनियाँ नाटकक क्रम मे होइत रमानाथ बाबू आ जयकांत बाबूक लेख-युद्ध सँ सेहो होइत रहल अछि। एहने सन किछु जड़ियायल आ मौलिक रंगमंचीय समस्यासभ छल जे 'भंगिमा'क स्थापना हेतु एकटा ठोस पृष्ठभूमिक काज कयलक।

एतय दूटा बात उल्लेखनीय अछि। पहिल त' ई जे तहियाक बेसी निर्देशक केँ निर्देशनक ततबा ऊहि आ ज्ञान नहि छलनि जतबा तत्कालीन आन-आन भाषाक रंगमंचक दोयम-तेयम दर्जाक निर्देशक केँ रहैत छल। दोसर बात ई जे नाटकक आयोजन अपन उत्सवधर्मी बाध्यता केँ तेजि नहि पाबि रहल छल। तहियाक बेसी नाटक कोनहु-ने-कोनहु अवसर विशेषक नाटक अछि। नाटकक स्वतंत्र आयोजनक पवाहटि प्राय: 'अरिपन' सँ भेल। मुदा तकरा संग एकटा आर समस्या लागल छल। अरिपन आ कि चेतना समिति मे जे तहिया नाटक होइत छल ततय ई मानसिकता बेसी जोरगर छल जे नाट्यकथ्यक मूल रूप जेना-तेना उपस्थित भ' जाय। ओतय ई जाँचब महत्वपूर्ण नहि छल जे प्रस्तुति मे मेकअप, वस्त्र-विन्यास, संवादक प्रक्षेप-चातुर्य, रंग-योजना, सेट, मंचनक परिकल्पना-स्तर, प्रकाश आदि कतेक सार्थक हस्तक्षेप प्रस्तुत करैत अछि। एहि कालक प्रस्तुति मे एक

प्रकारक आयातित परम्परा देखल जाइत छल जाहि मे लेखकक रचना-प्रक्रिया आ प्रस्तुति विधानक निर्वाह मे मंचीय उपस्थापन केँ असहज होयबाक संकट बढ़ले रहैत छल। फलतः निर्देशन आ निर्देशकक अस्तित्व नाटककार द्वारा लिखल नाटकक पन्ना सँ बाहर किछुओ नहि छल। निर्देशक लेखकक समानान्तर नहि अपितु एकटा अनुशासित छात्र सन गछल जाइत छल जकरा लेल गुरुजीक 'बात-विचार' अकाट्य आ अलंघ्य होइत छल। भंगिमा अपन स्थापनाकालहि सँ एहि तमाम असहजताक प्रति साकांछ छल आ एहन सन मारिते रास पारम्परिक मिथकसभ केँ धकिय'बैत सेहो रहल छल।

भंगिमाक जतबा अग्रज नाट्य-संस्थासभ छल ताहि मे ओहन रंगचेता व्यक्तित्वक प्रायः अभाव सन छल जिनका आधुनिक रंगमंचक निस्तुक्की परिचय किंवा एकर विकास हेतु कोनहु पूर्वनियोजित योजना रहल हो। हँ, नाटक होअय आ होइत रहय से अवश्य इच्छा रहैत छलनि, मुदा एकर रंगमंचीय गुणवत्ता आ व्यवस्था सुदृढ़ हो तकर चाँकि त' सर्वप्रथम भंगिमे कयलक। आ तेँ कहल जा सकैत अछि जे तत्कालीन प्रचलित कहबी आ व्याकरण केँ नवरूप-नवअर्थ मे रखबाक हिम्मतियो भंगिमे कयलक सेहो अपन पहिलुके डेग सँ। भंगिमाक पहिल नाटक अछि- ओकरा आङनक बारहमासा (निर्देशक- कुणाल)। 21 सितम्बर 1984 क' भारतीय नृत्यकला मंदिर (पटना) मे एकर मंचन भेल। मुदा एहि नाटकक ई तेसर मंचन छल। एहि सँ पूर्वहि अखिलेश्वरक निर्देशन मे 22 फरवरी 1979 क' अमरनाथ झा जयन्ती पर आ 4 नवम्बर 1979 क' विद्यापति स्मृतिपर्व समारोहक अवसर पर चेतना समिति द्वारा दू बेर मंचित भ' चुकल छल। एतय उल्लेखनीय बात ई जे एहि मे विभूति आनंदक मल्लर (चारिम)क भूमिका आइयो 'माइलस्टोन' कहल जाइत अछि। अतः भंगिमाक पहिल नाटक छल- ओकरा आङनक बारहमासा, तेँ पहिल नाटककार- महेन्द्र मलंगिया, पहिल निर्देशक- कुणाल, पहिल आलेख- पटनाक मैथिली रंगमंचक यात्रा कथा, पहिल लेखक- कुमार शैलेन्द्र, भंगिमाक रंगमंचक पहिल अभिनेता- विनोद कुमार झा, अभिनेत्री- पूनम श्री, पहिल अध्यक्ष- छत्रानन्द सिंह झा (बटुकभाइ) आ पहिल उद्घाटक - वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री'। मुदा एक अर्थ मे एकर दोसर मंचित नाटक- 'प्रायश्चित' (लेखक- छत्रानन्द सिंह झा, निर्देशक- विनोद कुमार झा) केँ सेहो पहिल नाटक कहल जा सकैत अछि कारण ई भंगिमाक अपन तैयार कयल नाटक छल आ एहि मे किशोर केशवक उल्लेखनीय आ स्मरणीय नाट्ययुक्ति कएक अर्थ मे आधुनिक

मैथिली रंगमंचक लेल आइयो प्रासंगिक अछि।

उत्सवधर्मी आयोजन केँ रपेटैत भंगिमा एकटा रंग-आन्दोलनक खगता गमलक आ तकर पृष्ठभूमिक रूप मे अपन सक्रियता आ नैरन्तर्यक महत्व केँ गछलक जे कि तत्कालीन समाज मे 'नटकियाक नेनपन आ नङटपन-बतहपन' मात्र कहल जाइत छल। मुदा बटुकभाइ, कुणाल, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', विभूति आनंद, कुमार शैलेन्द्र, किशोर केशव आ उमाकान्त सन दीर्घचेता रंगकर्मी लोकनि केँ अपन एही 'बतहपन' पर विश्वास छलनि जकर सुपरिणाम अछि जे आजुक भंगिमा अपन 87टा नाटकक लगभग 250टा सँ बेसी प्रदर्शन क' ततेकटाक सूची बना चुकल अछि जे वर्तमान मे मैथिलीक कोनहु रंगदल हेतु एहि आँकड़ा केँ स्पर्शहु करब असम्भव सन अछि।

कहनहि छी जे भंगिमा सँ पूर्वहु नाटक होइत रहल छल। नाटकक नाम पर बेसीकाल खानापूर्ति होइत रहल से फराक बात। एतय चेतना समिति, अरिपन, आंगन, नवांगन आ कला समितिसभक रंगकर्म-चिन्तन, तकर गम्भीरतापूर्वक ग्रहण आ तकर सम्यक् प्रचार-प्रसारक ठोस प्रविधिक मादे त' प्रश्नचिह्न लगाओले जा सकैत अछि। ई संस्थासभ नाटकक प्रदर्शन त' आवश्यक गमलक मुदा रंगकर्मक सम्पूर्णता मे जे एकटा आवश्यक तत्व, रंगविषयक पत्रिका, तकर प्रकाशनक मादे मिसियो भरि नहि सोचि सकल। रंगविषयक पत्रिका (आ लेखन)क मादे आइयो स्थिति बहुत बदलल सन नहि अछि। मुदा भंगिमा अपन पहिले दिन सँ एतद्विषयक गाम्भीर्य देखायब प्रारम्भ क' देने छल आ अपन संस्थेक नाम 'भंगिमा' सँ 21 सितम्बर 1984 क' एकटा पत्रिका प्रकाशित करब प्रारम्भ कयलक। ई एहि रंगदलक ठोस आ दीर्घकालिक-भविष्यजीवी रंगचिन्तनक सुच्चा प्रमाण सेहो छल। पत्रिकाक स्वरूप स्मारिका सन छलैक आ कि पत्रिकाक आन-आन तत्व ततेक नेयारल-भासल नहि छलैक से पक्षसभ भंगिमाक संकल्प जे- ओ पत्रिका नियमित बहार करत- तकरा सोझाँ झूस भ' जाइत छलैक। तेँ कहल जाय जे भंगिमा प्रारम्भहि सँ मैथिलीक आधुनिक रंगमंच केँ गम्भीर रंगकर्म दिस ल' चलबाक फिकिर करय लागल छल। कहबा मे हर्ज नहि जे पटनाक मैथिली रंगमंच केँ आधुनिक रंगमंचक रूप मे विकसित करबाक लेल भंगिमाक विशिष्ट ओ सक्रिय नाट्यावदान आ नाट्यान्दोलन केँ अनठाओल नहि जा सकैत अछि। प्रारम्भ मे एकर प्रकाशन-संदर्भ स्वाभाविक रूपेँ काँच-कोचिल छल। कारण एहि सँ पूर्वक साहित्यिक पुरोधा लोकनि केँ ने त' एकर दरेग छल आ ने खगते। तेँ

भंगिमाक हेतु पत्रिकाक प्रकाशन निश्चित रूपेँ एकटा जरब भरल प्रायोगिक डेग छल, मुदा सएह प्रयोग कालांतर मे अपन कएकटा महत्वक संग सक्रिय रंगमंचीय प्रभाग मे एकटा सार्थक हस्तक्षेप सिद्ध भेल। प्रारम्भिक काल मे तीन-चारि अंक धरि रंगकर्मीए लोकनि लिखैत रहलाह जाहि मे रंगकर्मक मारिते रास स्वभुक्त यथार्थसभ यथारूप अबैत गेल। मुदा चारिमे अंक (दोसर वार्षिकोत्सव 4-5 अगस्त 1986) सँ एकरा मुख्य धाराक साहित्यसेवी लोकनिक लेख- विचारादिक सहयोग भेटय लगलैक। धूमकेतुक 'मैथिली रंगमंचक दिशा' नामक आलेख एकर प्रमाण भ' सकैछ। भंगिमाक प्रवेशांक मे पहिल पृष्ठ पर 'भंगिमा परिवार' छपल छल जाहि मे एकर पदाधिकारीगणक ब्योरा छल आ पत्रिकाक सम्पादकद्वय (शारदा दत्त झा-विभूति आनंद)क नाम समुचित जगह पर नहि अपितु अपन पहिल नाट्य-प्रस्तुतिक पात्र-परिचयक संग सभसँ नीचाँ मे देल गेल छल। अभिप्राय एहन सन जे सम्पादको एहि नाट्यमण्डलीएक एकटा सदस्य अछि। मुदा तेसरे अंक (पहिल वार्षिकोत्सव अंक) सँ सम्पादक (विभूति आनंद)क नाम पहिलुक पृष्ठ पर छपय लागल जे क्रमेण चलैत रहल। पहिलुक अंक सँ भंगिमाक चारित्रिक परिचिति रूप मे कवर पृष्ठ पर 'नाट्य विषयक अनियतकालीन पत्रिका' आ इनर टाइटिल पेज पर एकर उद्देश्य-वाक्यरूप मे 'सांस्कृतिक चेतनाक संवाहक' छापल गेल। तीन अंक धरि ई क्रम चलल आ चारिम अंक मे ई 'अनियतकालीन पत्र' भ' गेल (पत्रिका नहि) आ उद्देश्य-वाक्य परिवर्तित होइत 'मैथिली रंगकर्म केँ समर्पित' भ' गेल। 22म अंक सँ पुनः एकरा 'मैथिली रंगमंचक छमाही पत्रिका' कहल जाय लागल जे अद्यपर्यन्त अछि। मुदा पाँचम अंक सँ जे उद्देश्य वाक्य- 'मैथिली रंगकर्म केँ समर्पित' निपत्ता भेल से एकहि बेर 26म अंक मे उपर भेल। एहन सन जे एहि सम्पादनजन्य ओझरौट मे पड़ब अभीष्ट नहि अपितु अपन रंग-दर्शन-प्रदर्शनक चतुर्दिक पसार प्रमुख ध्येय। आ से कयबो कयलक। मुदा एतय कहब आवश्यक जे सम्पादन-दृष्टि आ कौशल्यक चढ़ा-उतरीक कारणे मारिते रास परम्परा बनैत गेल आ ढहैत गेल। तथापि भंगिमा जहिना छोट-पैघ सभतूर (कुणाल सँ स्वर्णिम धरि) केँ मिला क' 31-32टा निर्देशक केँ अवसर देलक तहिना शारदा दत्त झा-विभूति आनंद सँ आशुतोष अभिज्ञ धरि 16-17टा सम्पादक केँ सेहो अवसर देलक। अभिनेता-अभिनेत्रीक एकटा समर्थ संजाल सेहो स्थापित कयलक जकर संख्या पाँच सय सँ कम त' नहिए होयबाक चाही।

शनैः-शनैः पुर्वापेक्षा भंगिमाक सम्पादन परिपक्व होइत गेल। भंगिमा अपन दोसरे अंक मे मैथिली रंगमंचक निजता आ तकर समृद्धि ओ विकासक हेतु नाटकक बदलैत व्याकरणक अनुरूप लेखक, निर्देशक, कलाकार, तकनीशियन आ दर्शकक खगता गमलक[1], ग्रामीण रंगमंचक समृद्धि पर जोर देल गेल[2], युवावर्ग केँ रंगकर्म दिस अयबाक आ मोफत मे क्रांतिदूत आ वफादार सिपाही बनि अपन रंगमंचीय दायित्व निमाहि क' समाजक ऋण सँ 'उरीन' होयबाक आह्वान कयल गेल[3] आ पारिवारिक दायित्व केँ सम्यकरूपेँ निमाहैत आ महिला लोकनि लेल सक्रिय रंगकर्म करबाक ठोस प्रतिमान सेहो प्रस्तुत कयल गेल[4]। भंगिमा कालक्रमेण अपन परिधि चाकर सेहो करैत गेल। अपन दोसरे वार्षिकोत्सव सँ भंगिमा एकटा रंगमंचीय विमर्शक रूप गढ़य लागल। एहि मे एकरा स्वभाषाभाषी साहित्यकार धूमकेतु, अग्निपुष्प, डा. रमानन्द झा 'रमण', गिरीश चन्द्र, ज्योत्सना आनंद, उदयचन्द्र झा 'विनोद', जीवकांत, सुधांशु 'शेखर' चौधरी, मोहन भारद्वाज, गोपालजी झा 'गोपेश', अशोक, फणीश्वर नाथ रेणु, साकेतानन्द, प्रो. पन्ना झा, कुमार मनीष अरविन्द, ओम प्रकाश भारती, अरविन्द रंजन दास, शरदिन्दु कुमार चौधरी, डा. भीमनाथ झा, मार्कण्डेय प्रवासी, डा. प्रेमशंकर सिंह, सीताराम झा 'श्याम', गौरीकांत चौधरी 'कांत', देवशंकर नवीन, शैलेन्द्र आनंद, डा. नरनारायण राय, संजय कुन्दन, डा. रामदेव झा, राजमोहन झा, प्रदीप बिहारी, आचार्य आद्याचरण झा, रमेश रंजन (जनकपुर), डा. इन्दिरा झा, सुशीला झा, डा. उषाकिरण खान, रेखा दास, विकास कुमार झा, रामलोचन ठाकुर, देवकांत झा, मंत्रेश्वर झा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रो. आनंद मिश्र, अनिल पतंग, डा. ताराकांत मिश्र, विनय विनोद, डा. वासुकीनाथ झा, चन्द्रेश, डा. योगानन्द झा, डा. वीणा कर्ण, डा. मेघन प्रसाद, सीताराम शर्मा, श्रीकृष्ण दास, डा. महेन्द्र नारायण राम, डा. लेखनाथ मिश्र, प्रो. प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मौन', डा. जयकांत मिश्र, अविनाश चन्द्र मिश्र, डा. हीरा मंडल, डा. नारायण झा, डा. अरविन्द अक्कू, किशोर केशव, अजित कुमार आजाद, दीपक कुमार गुप्ता, उमाकांत, विनोद कुमार झा, मनोज पाठक, कुमार गगन, प्रशांत कांत, डा. रमण कुमार झा, डा. चक्रधर ठाकुर, कमल मोहन चुन्नू, डा. सत्यनारायण मेहता, नरेन्द्र झा, मनोज मनुज लोकनिक विचार-सहयोग भेटल आ संगहि आनहु भाषा-भाषी परवेज अख्तर, जावेद अख्तर, ब्रेख्त, स्तानिस्लावस्की, ब.ब. कारंत, गुरुशरण सिंह, चतुर्भुज, जीवनमय दत्त, उत्पल दत्त, हँसमुख बरारी, विजय मेहता,

हृषिकेश सुलभ, रविरंजन सिन्हा, प्रो. श्याम शर्मा, राजीव रंजन श्रीवास्तव, अनीश अंकुर, सुरेश कुमार हज्जू लोकनिक रंगमंच सँ संदर्भित विचार जनबाक माध्यम सेहो बनल। एकर ई उदारवाद मैथिलीक रंगमंच लेल कएक अर्थ मे महत्वपूर्ण छल। एहि क्रम मे आनहु ठामक रंगकर्मीक संग भंगिमा अपना केँ जोड़लक आ रंगवस्तुक आदान-प्रदान बरमहल होइत रहल। अपन निर्देशन, तकनीक, शिल्पादिक समृद्धि हेतु आनहु ठामक विशेषज्ञ लोकनि सँ निरन्तर संवाद, विचार-विनिमय आ विमर्श होइत रहल आ तकरा पत्रिकाक माध्यम सँ प्रसारितो करैत रहल जाहि सँ आइ ई कहबाक स्थिति मे भंगिमा भ' गेल अछि जे ओकरा लग रंगमंचक प्राय: सभ प्रभागक विशेषज्ञ छैक।

चारिमे वर्ष मे प्रवेश करैत भंगिमाक नाट्यदल अपन प्रयोगधर्मी स्वरूप अजमाबय लागल। 17 फरवरी 1988 क' पटना मे पहिल बेर 'चैम्बर नाटक' प्रस्तुत कयल गेल। एकर नाम छल– 'उमाकांत-एक' आ पहिल अभिनेताक रूप मे ख्यात भेलाह- उमाकांत झा। प्रयोग खूबे सफल रहल आ तकरा बाद 'गाछ लगाउ', 'जॉब भेकेन्सी', 'पाँच-पत्र', 'साँझक गाछ', 'बुलबुल आ रखबार', 'हँ मे हँ,' 'कुत्ता', 'प्रेमकथा' प्रभृति चैम्बर नाटकक एकटा शृंखले चलि पड़ल जे कि अपन अद्भुत नाट्ययुक्ति आ विशिष्ट प्रस्तुति-शैलीक कारणेँ बेस लोकप्रिय भेल आ बेस प्रशंसित सेहो भेल। नाट्ययुक्ति ओ शिल्प आधारित ई परिघटना भंगिमाक संग-संग आधुनिक मैथिली रंगमंचक पहिल 'टर्निंग प्वाईंट' छल।

मुदा एहि सँ एक वर्ष पूर्वहि एकटा आओर महत्वपूर्ण अध्याय भंगिमा द्वारा रचल गेल। ओ छल- बाल रंगमंचक बाल नाटक अर्थात् बाल भंगिमाक गठन आ प्रस्तुति। 31 दिसम्बर 1987 क' ललन प्रसाद ठाकुरक नाटक 'मैथिली फिल्म' केँ श्रीनारायण झाक निर्देशन मे पहिल बेर बच्चासभ द्वारा प्रस्तुत कयल गेल जकर प्रस्तुतिक रोचकता केँ एहि बात सँ अख्यासल जा सकैत अछि जे पुन: अगिला वर्ष 31 दिसम्बर 1988 क' एकर मंचन कयल गेल। तकरा बाद त' प्राय: नियमित रूपेँ एकटा क' बाल नाटक वर्षान्त मे 'ठहाका' नामक आयोजन मे होबय लागल जकर परिणामस्वरूप 16टा नाटकक 25टा शो भेल। लगभग 100टा बाल रंगकर्मीक सूची[5] सेहो भंगिमेक नाम सँ अछि। इहो आँकड़ा कोनहु दोसर रंगदल हेतु आब अस्पृश्ये सन लगैत अछि। 1986 मे भंगिमा अपन प्रदर्शन-कैलेण्डर

मे 'ठहाका' नाम सँ एकटा आर तिथि जोड़लक- 31 दिसम्बर। ठहाका (1986) मे प्रस्तुत होबयबला पहिल नाटक छल 'छींक' आ दोसर 'संयोग'। एहि अवसर पर प्राय: हास्य ओ व्यंग्य भरल नाटक कयल जाइत रहल। आइयो ई आयोजन ओहिना चलि रहल अछि।

एतेक रास मंचनक हेतु नाटकक 'स्टॉक' सेहो चाही छल जकर आपूर्ति लेल आ आनहु रंगमंचक संग अपन तादाम्य स्थापित करबा लेल भंगिमा अनुवाद आ रूपान्तरणक दुआरि खोललक। से सदति खोलनहि रहल। परिणामत: 35टा अनुदित-रूपान्तरित नाटक एकरा सूची मे संलग्न अछि। एहि मे सँ दू-चारिटा केँ छोड़ि शेष सभटा नाटक भंगिमा पत्रिकाक विशेषांकसभ मे यथावसर प्रकाशितो अछि। समय-समय पर भंगिमा विशिष्ट रंगकर्मीक साक्षात्कार आ स्मृति अंक सेहो प्रकाशित करैत रहल। भंगिमाक 11म अंक सुधांशु 'शेखर' चौधरीक स्मृति मे, 20म अंक श्रीकान्तमण्डलक स्मृति मे आ 49म अंक केशवनन्दनक स्मृति मे प्रकाशित कयल गेल। एतदिरिक्त 8म अंक अनुवाद नाटक अंक, 24म अंक लघु नाटक अंक, 40, 41, 42 आ 43म अंक मैथिली नाट्य-परम्परा अंक आ 50म अंक बाल रंगमंच अंक विशेषरूपेँ संग्रहणीय बनल।

2005 ई. सँ भंगिमा 'हमर कलाकार' नामक स्तम्भ प्रारम्भ कयलक जाहि मे प्रीति झा (अंक-40), रामबहादुर रेणु (अंक-41), कुमार शैलेन्द्र (अंक-42), श्रीनारायण झा (अंक-43), विभूति आनंद (अंक-44), तनुजा शंकर (अंक-45), आ ईशा वैदेही (अंक-50) लोकनि केँ स्थान भेटलनि। एतद्विषयक सुनियोजित कार्य-प्रणालीक आ समग्र दृष्टिक अभावक कारणेँ भंगिमाक ई स्तम्भ ने दीर्घकालिक बनल आ ने लोकप्रिय। तथापि भंगिमा केँ रंगकर्म आ रंगकर्मी सँ अद्भुत अनुराग छलैक। ताहि अनुरागक काल मे ओ भाषा आ देश-राजक सभटा बन्हन ढील क' दैत छल। एकर मारिते रास उदाहरण उपस्थित होइछ। एतय मात्र एकटा रखैत छी।

प्राय: 1985क अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली नाट्य-समारोहक अवसर छल। एहि अवसर पर महेन्द्र मलंगियाक नाटक 'काठक लोक' केँ हुनकहि निर्देशन मे मंचित होयबाक छलैक। मंचन भइए रहल छलैक कि ताही बीच मे समारोहक उद्घाटक अतिथि प्राय: तत्कालीन मुख्यमंत्री आबि गेलाह। चलैत नाटक केँ रोकि देल गेल आ आयोजन समिति अतिथिक स्वागत-सत्कारक प्रदर्शन मे लागि गेल। गम्भीर आ समर्पित रंगकर्मी लोकनिक

मनोदशा केँ ई खंडित घटना भीतर धरि छेदि देलक आ तखने भंगिमा निर्णय लेलक आ निर्णयानुरूप अपन अगिला वार्षिकोत्सव मे 04-05 अगस्त 1986 क' एकर पुन: अखंडित मंचन कयलक आ ई नाटक अभूतपूर्व रूपेँ सफल भेल। ओहि नाटकक बाबाजीक भूमिका मे उमाकांत अपन अभिनयक अद्भुत आ अभूतपूर्व चमत्कार देखौलनि। कहबा मे संकोच नहि जे आइ धरिक जतबा ठाम 'काठक लोक' मंचन देखने छी, बाबाजी बनल उमाकांतक अभिनय-स्तर शायदे केओ छू सकल।

वर्ष 1990 पुन: मैथिली रंगमंचक लेल एकटा दोसर 'टर्निंग प्वाईंट' सिद्ध भेल। 1988 ई. मे चेतना समितिक मंच सँ विद्यापति स्मृतिपर्व समारोह मे पं. गोविन्द झाक 'रुक्मिणी हरण' नाटकक कुणालजीक निर्देशन मे सफल मंचन भेल। ई नाटक कएकटा प्रयोग केँ समाहित कयने छल जाहि मे किरतनियाँ नाटकक किछु तत्वसभ केँ सेहो स्पर्श कयल गेल छल। एहिए बीच संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली सँ पूर्वक्षेत्र नाट्योत्सव 1990क लेल भंगिमा केँ आमंत्रण अयलैक। कुणालजी एहिए नाटक केँ किरतनियाँ फार्मेट मे प्रस्तुत कयल। एहि क्रम मे मारिते रास किरतनियाँ नाच देखल गेल, ओकरा रेकॉर्ड कयल गेल, बेस सूक्ष्मता आ सतर्कता सँ एकर विभिन्न अवयव, सौन्दर्य पक्ष ओ नाट्ययुक्तिक अध्ययन आ चिन्तन-मनन कयल गेल। भंगिमाक कएक मासक अहर्निश मेहनति उपरान्त ई नाटक पुनर्गठित भेल। स्वभाविके छलैक जे नाटकक 'फॉर्मेट' बदलबा काल किछु छुटलै, किछु हटलै आ किछु जुटलैक। तखन तैयार भेल एकटा सम्पूर्ण किरतनियाँ नाटक- रुक्मिणी-हरण। मुदा नाट्यक्षेत्र मे एकटा आओर कारणेँ एहि घटनाक महत्व बढ़ि जाइत अछि। भारतीय भाषाक कोनहु रंगमंच मे 'प्रदर्शन-आलेख' तैयार करबाक परम्परा प्राय: नहि छल मुदा एहि नाटक सँ प्रदर्शन-आलेख तैयार करबाक एकटा नव परम्पराक प्रारम्भ भेल। ई प्रयोग बेस प्रशंसित सेहो भेल। रंग-समीक्षक लोकनि नाट्यक्षेत्रक एकटा क्रांतिकारी घटनारूप मे एकरा गछलनि। भंगिमा द्वारा चैम्बर नाटक 'उमाकांत-एक' केँ छोड़ि सर्वाधिक मंचन (11 बेर) एहिए नाटकक भेल। निस्सन्देह एकरहु श्रेय भंगिमे केँ जाइत छैक, कुणालेजीक नाट्य-मण्डली केँ जाइत छनि। कुणालजीक लिखित घोषणा सभ केँ सोचबा लेल बाध्य सेहो कयलक- 'एहि नाटक वा नाचक अध्ययन तथा अनुशीलनक समुचित व्यवस्था कयल जाय तथा ओकरा अपडेटिंग क' क' आधुनिक रंग तकनीकक संग जोड़ल जाय। अंतत: एही सँ एक विशिष्ट मैथिली रंगमंचक

निर्माण संभव भ' सकत जकर मात्र भाषा टा नै अपितु व्याकरण तथा क्राफ्ट सेहो अप्पन हेतैक।'[6]

भंगिमा सदल-बल, सांगसायुध कुणालजीक संग छलनि। अपन प्रयोग आ तकर सुपरिणाम सँ उत्साहित कुणालजी आचार्य सोमदेवक रचना 'सीतायन' केँ नौटंकी शैली मे प्रस्तुत सेहो कयल आ तदुपरांत कुसमा-सलहेस (1997), लोरिकायन (1999) आ पारिजात-हरण (2006) प्रभृति किरतनियाँ नाटक प्रस्तुत क' मैथिली साहित्यक मध्यकालीन नाट्यशैलीक उत्खनन आ सम्बर्द्धन सन प्रशंसनीय काज कयल। पुन: पमारा शिल्प मे प्रो. हरिमोहन झाक कथा 'बाबाक संस्कार' केँ रूपान्तरित क' 31 दिसम्बर 2006 क' सफल प्रस्तुति कयल। उल्लेखनीय इहो जे मैथिलीक एकमात्र नाट्यसंस्था 'भंगिमा'टा छल जे अपन विशिष्ट आ निज नाट्यशैलीक संग देशक विभिन्न भाग मे अपन प्रदर्शन कए मैथिली रंगमंचक संगहि एकर निज रंगयुक्ति-रंगशैली केँ स्थापित, व्याख्यायित आ सम्बर्द्धित कयलक।

भंगिमा अपन प्रारंभिक कालहि सँ समीक्षाक बाट पर चलैत रहल। वार्षिकोत्सवक अवसर पर त' विधिवत् समीक्षा-गोष्ठी आयोजित होइत रहैत छल जाहि मे रंगमंच ओ साहित्यक मान्य विद्वान लोकनि आबि एकरा ऊर्जस्वित करैत रहलाह। ई गोष्ठी एकर 'ऊर्जा गृह' छल। भंगिमा अपना केँ मैथिली रंगमंचक एकटा 'वर्कशॉप' सन सेहो सिद्ध कयलक। एहि मे कोनहु नाट्यालेख पर प्रदर्शन-पूर्व समुचित विमर्श एकर विशिष्ट पक्ष छल जाहि मे अपेक्षित मार्जन-परिमार्जन सम्भव होइत छल। ई प्रदर्शन-पूर्व विमर्श आ प्रदर्शनोपरांत समीक्षा दुनू केँ आत्मसात कयने रहैत छल। 2008क बाद ई गोष्ठी बन्द भ' गेल से एकरा लेल एकटा नमहर साहित्यिक क्षति सन भेलैक। नव सदी एकरा लेल कएकटा कठिनाइ उपस्थित कयने गेलैक। बदलैत आर्थिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक-सामाजिक परिवेश मे एकर सक्रियता घटलैक, सामूहिकता दुबरेलैक, लोक छँटलैक आ सामाजिक सहयोग सेहो अपन जिम्मेवारी बिसरय लागल। परिणामस्वरूप भंगिमा घाहिल होइत गेल। अन्तर्वेदना एकर स्वास्थ्य केँ दुबराबय लगलैक। गति मन्थर-स्वाभाविक छलैक। तथापि भंगिमा 29म वर्ष मे प्रवेश क' चुकल छल। एहिए बीच मैथिली साहित्य आ रंगकर्मक चीन्हल-जानल जगह विद्यापति भवनक जीर्णोद्धार सेहो प्रारम्भ भ' गेलैक जाहि कारणेँ एकर प्रदर्शन-कैलेण्डर सेहो बाधित भेल।

आजुक बदलैत वैश्विक मनोदशा सँ भंगिमा सेहो चपेट मे अछि।

पूर्वापेक्षा युवाक रंगमंचीय रुझान मे अप्रत्याशित रूपेँ ह्रास भेलैक अछि। भंगिमा सन मैथिलीक सक्रिय रंगमंचक हेतु ई धोकरीक मारि सन सिद्ध भ' रहल अछि। एहन स्थिति मे किछु रंगमंचीय प्रश्न अपेक्षाकृत बेसीए भावुक क' रहल अछि जे मैथिलीक एहि स्थापित रंगमंचक भविष्यतकालीनरूप केहेन होयत, कुणालजीक किरतनियाँ नाटकक परम्परा ककर कान्हक आश्रय पाओत, किशोर केशव, कुमार गगन, मनोज मनुज लोकनिक निर्देशनक परम्परा ककर आंगुर धरत, उमाकांत, ब्रह्मानन्द, कुमार गगन लोकनिक अभिनय परम्परा ककर बाँहि थाम्हत, बटुकभाइ, प्रेमलताजी लोकनिक सांगठनिक क्षमता-दक्षता ककरा रूप मे देखार होयत, विभूति आनंद, छत्रानन्द, किशोर केशव लोकनिक सम्पादन-दक्षता कोन करौटे बैसत, दोसर पाँतिक आशुतोष अभिज्ञ, स्वर्णिम, ईशा लोकनिक अभिनय-परम्परा कोना आकार लेत, बाल रंगमंचक की होयत आदि।

भंगिमा एकटा नमहर यात्रा तय कयने अछि आ मारिते रास रंगमंचीय उपलब्धिक अभिलेख एकरा खाता मे सम्मिलित छैक (जकर समुचित लेखन-विस्तार एतय सम्भव नहि)। भंगिमाक एहि रंगमंचीय महावदान पर स्वतंत्ररूपेण शोधकार्य होयबाक चाही। बटुकभाइ, प्रेमलताजी, कुणालजी, उमाकांतजी लोकनि खूबे काज कयल। से नमहर-नमहर आ असम्भवो काजसभ कयल। ताहि सँ समस्त मैथिली रंगमंचक आ ताहि ब्याजेँ मैथिली भाषा-साहित्यक छाती गर्वोन्नत अछि। मुदा सभ दिन यएह लोकनि लागल रहताह से सम्भवो नहि आ उचितो नहि। कारण बहिक्रम ककरो नहि छोड़ैत छैक। तेँ हमरा बुझने आब हिनका लोकनि पर काज होयबाक चाही, शोध होयबाक चाही। किछु काज त' एहन अभरैत अछि जे शीघ्रे होयबाक चाही अन्यथा अबेर भ' जायत। हिनका लोकनिक 'भंगिमा' मे व्यक्त विचार-आलेखक संग्रह प्रकाशित हो, सेमिनार कि विचार-गोष्ठीक नियमित आयोजन क' हिनका लोकनि सँ ओ विचार-व्यवहार ग्रहण कयल जाय जे भंगिमा (नाट्यमण्डली आ पत्रिका दुनू) केँ रंगमंचक सभ मोर्चा पर समृद्ध बनबैत रहल, एहि लेल निरन्तर व्याख्यानक कार्यक्रम चलय, मैथिली रंगमंचक निजरूप 'किरतनियाँ नाटक'क गुण-धर्मक व्याख्यान, कार्यशाला, प्रशिक्षण आ व्यावसायिक प्रदर्शन होअय, नाटकक संगहि जन-जागरण आ अपन दर्शक-प्रशंसकक बीच जाय संवाद स्थापित करबा लेल पुनः चैम्बर नाटकक प्रदर्शन हो आदि-आदि। कारण भंगिमे एहन नाट्य-संस्था अछि जे मैथिली रंगमंचक निजता केँ रूपायित-व्याख्यायित क' अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति

दियौलक। से अर्थाभाव, संसाधनक अभाव, सहयोगक अभाव आदिक संगहि मारिते रास अन्तर्बाह्य वेदना केँ झेलैत-झमारैत। तेँ एकरहि सँ अपेक्षा अछि।

संदर्भ-संकेत :

1. भंगिमाक अप्पन बात- कुणाल, भंगिमा, अंक-2
2. ग्रामीण रंगमंच केँ उठायब आवश्यक- छत्रानन्द, भंगिमा, अंक-2
3. रंगमंचः एकटा शौकिया कलाकारक दृष्टि मे- किशोर कुमार झा, भंगिमा, अंक-2
4. किछु तीत, किछु मिट्ठ- प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', भंगिमा, अंक-3
5. भंगिमाक बाल रंगमंच- कुमार गगन, भंगिमा, अंक-50
6. किरतनिञा नाट्य- कुणाल, भंगिमा, अंक-11

भंगिमा, अंक-52, दिसम्बर 2012, पटना

•

मैथिली रंगकर्मक नमहर आ सुखद घटना

(संदर्भ : 'जल डमरू बाजे'क पटना प्रस्तुति)

दू मास पहिले सँ खबरि छल जे मैलोरंग (दिल्ली) 'जल डमरू बाजे' (नाटक) ल' क' पटना आबि रहल अछि। आ से हमरे नहि, पटनाक लगभग सभ सक्रिय रंगकर्मी केँ फोन आ कि एस.एम.एस. आबि चुकल छलनि जे 18 मइ 2010 क' भारतीय नृत्यकला मंदिर (पटना) मे एकर मंचन होयत। (बाद मे कोनहु कारणवश एकर तिथि 07 मइ 2010 निर्धारित भेल)। ई नाटक मूलत: हिन्दी मे लिखल गेल छल जकर कि दिल्ली (एन.एस.डी.) मे वैभवपूर्ण भव्य प्रस्तुति भेल। तकरे मैथिली रूप छल ई प्रस्तुति जकर रूपांतरण कयल प्रकाश झा आ काश्यप कमल। हमरा जखने एहि नाटकक पटना आगमनक खबरि भेटल छल त' हम खगता सँ बेसी हुलसल रही। से लगैए मात्र एहि कारणे जे मैथिली रंगकर्मक क्षेत्र मे एकटा अभूतपूर्व घटना घटय जा रहल छल। महत्वपूर्ण यएहटा नहि छल जे मैलोरंगक प्रसादात् दिल्लीओ मैथिली रंगकर्मक केंद्र बनल जा रहल अछि। महत्वपूर्ण इहो नहि जे ओतय नाटकक मंचनक अलावे आनो तरहक मारिते रास सांस्कृतिक गतिविधि मैलोरंग एकसुर्रे चला रहल अछि। हमरा लेल महत्वपूर्ण ई छल जे दिल्लीक एकटा मैथिलीक नाट्यदल नाटक करबा लेल पहिल बेर पटना आबि रहल अछि। आइ धरि प्राय: मिनाप (जनकपुर, नेपाल) आ पटनियाँ संस्था दिल्ली, कलकत्ता कि आन-आन शहर दिस जाइत रहल छल। तेँ मैलोरंगक एहि मंचन केँ हम एकटा पैघ घटना गछने रही आ ताहि संग एकटा लोभ सेहो पोसि लेने रही। लोभ ई छल जे जेँ कि पटना मे मैलोरंगक ई पहिल प्रस्तुति अछि जे कि ऐतिहासिक दृष्टिए महत्वपूर्ण सेहो अछि आ उल्लेखनीय सेहो, तेँ सोचलहुँ जे अतीव महत्वक ई तिथि पहिल-पहिल हमरेसभक नामे रचल जाय। अभिप्राय जे मैलोरंगक पहिल प्रस्तुति मिथिला-मैथिलीक पटनियाँ चौपाड़ि पर होअय। ताहिए क्रम मे हम अपन ई बुधियारी लगबय चाहलहुँ जे 07 मइ क' मैलोरंग पटना पहुँचत आ 08 मइ क' शो करबाक

छैक। त' की हर्ज जे 07 मइ क' साँझु पहर एकटा बरू दोसरे नाटक (पाँच-पत्र, मैलोरंगक टटका प्रस्तुति) चेतना समिति (पटना)क विद्यापति भवन मे भ' जाय आ आधुनिक मैथिली रंगकर्मक ई पहिल घटना चेतने समितिक नामे आ कि विद्यापतिए भवनक नामे लिखा जाय आ एकर श्रेय सेहो चेतने समिति केँ भटैक। सभ किछु त' ठीके-ठाक छलैक। मात्र खगता छलैक छोट-छीन बजटबला एकटा स्थानीय आयोजकक। मुदा हमर सबटा बुधियारी घुसरि गेल आ कि एना कही जे घुसारि देल गेल। आब त' एतबे कहि सकैत छी जे परिस्थिति संग नहि देलक आ 07 मइ क' विद्यापति भवन मे ई मंचन नहिए भ' सकल।

शुक्र-गुलजार। सरकारी कारबार। केओ देखनाहर नहि केओ पुछनाहर नहि। तय भ' गेलैक जे 07 मइ क' 'जल डमरू बाजे' नाटक होयत मुदा ताहू दिन नृत्यकला मंदिर अपन बनियौटी नहि तेजि सकल छल। कोनहु आन संस्था हेतु आन रंगक कार्यक्रम लेल 'बुक' छल नृत्यकला मंदिर। मैलोरंग 07 मइ क' भोरे पहुँचि गेल छल मुदा टीम रहत कत' आ की खायत-पीयत तकर फिकिर केनिहार केओ नहि छलैक। ने सरकारी स्तर पर आ ने स्थानीय स्तर पर। नाटकक प्रति संवेदनशून्यताक स्थिति ई छल जे दसे बजे सँ गोहरि करैत तीन बजे बेरिया मे मंच सुर्पुद कयल गेल जखन कि नाटकक ओरियाओन मे ततेक समय लगैत छैक जे भोरे सँ लागल-भीड़ल रहला पर साँझु पहर मंच व्यवस्थित आ यथासम्भव मनोनुकूल भ' पबैत छैक। मुदा धन्यवाद दी मैलोरंगक रंगकर्मी लोकनि केँ। अढ़ाइ-तीन घंटाक भीतर मे जी-जान अरोपि क' एहि उभरा-भाँड़ मंच केँ प्राय: अनुकूल क' लेलक, जखन कि प्रस्तुतिजन्य सफलताक दृष्टिए ई एकटा खतरनाक स्थिति छलैक। दिनभरिक थकान सँ रंगकर्मीक अभिनय विचित्र रूपेँ प्रभावित भ' जाइत छैक। मुदा 'टीम वर्क'क एहन साधल नमूना बड़ थोड़ देखबा लेल भेटैत छैक। हाँइ-हाँइ झाड़ू-बाढ़नि, पर्दा-पोशाक, लाइट-साउण्ड, मेकप-सेटप। कखन-कोना-की भेलैक से ने जानि। छओ बजे रंगकर्मीओसभ अपन-अपन प्रस्तुति लेल तन-तन करैत। बेधैत ई जरूर छल जे पटना मे कहबा लेल भरल रंगकर्मी। मैथिल रंगकर्मी खास क'। मुदा दूओ-चारि गोटे मैलोरंगक व्यवस्थापन मे देहो ल' क' ठाढ़ होइतथि! सांस्कृतिक भैयारीक ई टटका स्थिति हमरा बड़ डेराओन लागय।

आ ओहि पंडितजीक खिस्सा सेहो मोन पड़ल रहए जिनका नोंते दिन दुनियाँ भरिक काज बजरि जाइत छलनि। जे-से। मैलोरंग रणधीर मिश्रा (हिन्दी रंगमंचक मैथिलीभाषी रंगकर्मी) सन गोटपगरा स्थानीय रंगकर्मीक सहयोग सँ जेना-तेना मंच पर ठाढ़ होबय जोग व्यवस्था बनाइए लेलक।

सरकारी नेयार-भास होइत-होइत साढ़े छओ के लगीच नाटक प्रारम्भ भेल। पटनाक लगभग समस्त सक्रिय आ मुहपुरुख रंगकर्मी नृत्यकला मंदिर पहुँचि नाटक देखलाह आ 'ग्रीनरूम' धरि पहुँचि अपन महत्वक आ पैघत्वक प्रदर्शन क' अपन भाँजो पूरि गेलाह। ओना आब ई भाँज पूरब रंगकर्मक क्षेत्र मे एकटा औपचारिकताक संगहि एकटा नव फैशनक रूप मे सेहो पसार ल' रहल छैक। दर्शकक संख्या बेजाय नहि छलैक। एतेक लोक कहाँदन कहियो नहि जूमैत रहैक शुक्र-गुलजार मे। कार्यक्रमक उसार भेलाक बाद वरिष्ठ रंगकर्मी कुणालजी आ भंगिमाक अध्यक्ष जयदेव मिश्रजी सब गोटे केँ मधुर सँ मुँह मीठ करबैत अगिला दिन सांयकाल 5 बजे विद्यापति भवन मे भेँट-धाँटक नोँत-हकार बिलहलनि।

कबैया-ड्योढ़ पर अगिला दिन 08 मइ 2010 क' विद्यापति भवन मे 5 बजेक बदला छओ-सबा छओ के लगीच किछु गोटे जूमैत जाइत गेलाह। मुदा प्रशंसनीय बात ई जे मैलोरंग सपरिकर (जे पटना मे रहि गेल छल) एहि बैसारक ऐतिहासिक महत्व केँ अकानैत ससमय पहुँचि गेल रहथि। सर्वश्री बटुकभाइ, कुणालजी जयदेवबाबू, उमाबाबा, कुमार गगन, मनोज मनुज, अजित आजाद, अनीश अंकुर, लक्ष्मीरमण मिश्र, प्रेमलताजी, किशोर केशव, प्रियंका, ब्रह्मानंद, आशुतोष मिश्र, रीतू कर्ण, कुंदनझा लोकनि पहुँचलाह। एहि भेँट-घाँटक मादे भंगिमाक अभीष्ट छलैक आगत रंगमंडलीक स्वागत आ ताही बहन्ने दुनू ठामक रंगकर्मीक जान-पहिचान आ दुनू ठामक रंगमंचक कार्य-संस्कृति पर फैल सँ गपशप आ तीत-मीठ अनुभवक आदान-प्रदान। से कहबा मे हर्ज नहि जे एकर अपेक्षानुरूप परिणाम सेहो प्राप्त भेलैक। अपन उद्‌गार व्यक्त करैत कुणालजी मारिते रास कारण सँ युवा मे रंगकर्मक प्रति घटैत रुचि केँ रेखांकित करैत मैलोरंगक जुआइत रंगदल आ रंगकर्म दुनूक प्रशंसा सेहो कयलनि। कमल मोहन चुन्नू पटनियाँ मैथिली रंगकर्मक नामे इतिहास नहि बनबाक कचोटक सकारण विस्तारपूर्वक रखैत पटनियाँ रंगमंच केँ एहि स्तर

धरि पहुँचि उपस्थिति केँ प्रमाणित आ जगजियार करबाक आग्रह केलनि। हिन्दीक वरिष्ठ रंगकर्मी अनीश अंकुर नाटकक कैनवास मे पात्रक 'फिटनेस' केँ 'सब्जेक्टिभ-ऑब्जेक्टिभ एटीच्यूड' सन गहीँर बिन्दु केँ थोड़बे मे बेकछबैत किछु छिटपुट बात केँ छोड़ि एहि प्रस्तुतिक लेल मैलोरंगक उत्साहवर्द्धन कयल। मनोज मनुज एहि प्रस्तुतिक प्रकाश योजना आ ध्वनि संयोजन केँ सराहैत ग्रामांचल मे एकर मंचन पर एकर ताम-झामक कारणे उत्पन्न सम्भावित संकट केँ उघार कयल। बटुकभाइ एहि नाटक मे उपस्थित पुबरिया पारक मिथिलाक एकटा खाँटी समस्या, खास क' बाढ़िक समस्या केँ उजागर करबाक दरेगक सराहना करैत मैलोरंगक सब गोटे के शुभाशीष देल। एही क्रम मे प्रेमलताजी, कुमार गगन उमाबाबा, ब्रह्मानंद, प्रियंका, आशुतोष मिश्र, रीतू कर्ण लोकनि सेहो अपन-अपन भावोद्‌गार व्यक्त कयल। जयदेव मिश्र एहि बैसारक कुशलतापूर्वक संचालन करैत रहलाह आ बीच-बीच मे अपन बात सेहो रखैत रहलाह। एहिए क्रम मे किछु रंगकर्मीक ई कहनाम जे- ओ नाटक नहि देखि सकलाह- से जाहि अन्हार केँ देखार करैत छल से चिंताजनक जरूरे छल सेहो तखन जखन कि ओ एतहुक स्थानीय रंगकर्म मे सक्रियता सँ लागल-भीड़ल रहैत छलाह। तथापि गपशपक ई आयोजन बड़ सुखद रहल। मैलोरंग दिस सँ मारिते रास उलहन-उपराग सेहो भेल। मौलायल स्वरेँ गछबो करैत जाइ गेलाह पटनियाँ रंगकर्मी लोकनि। मैलोरंगक प्रकाश, मुकेश आ नीलेशक वक्तव्य आधुनिक मैथिली रंगकर्मक भविष्यत्काल लेल पुनर्विचार करबाक हेतु अवश्ये बाध्यकारी छल। सांस्कृतिक आ संस्थागत भैयारी पर जोड़ दैत ई लोकनि एतबा जरूर रेखांकित कयल जे भंगिमा (पटना) अपन कयल पछिला काज केँ स्वयं अकानय, आत्मगौरव आनय, अपन तमाम कृति-वृत्तिक डाक्यूमेटेशन करय आ एकरा जहाँ-तहाँ पठाबय जाहि सँ रंगविषयक शोधार्थी कम सँ कम एतेक त' बुझिए सकय जे मैथिली रंगकर्मक क्षेत्र मे भंगिमाक विराट योगदान छैक। आ अंत मे भंगिमाक उपाध्यक्ष किशोर कुमार झा धन्यवाद बिलहैत मैलोरंग दिस सँ आयल विचार सभ पर अपन भंगिमाइ रंगकर्मीबन्धु केँ विवेकपूर्वक विचार करबाक आग्रह करैत एकटा निस्सन बुधियार सन अपना देहक गरदा आनक मुँह पर झारि देलनि।

ओना जँ देखल जाय त' आधुनिक रंगकर्म मे भंगिमाक ठीके एकटा पैघ योगदान छैक मुदा अफसोस जे एहि योगदान पर भंगिमाइ आइ किछु बेसीए आत्ममुग्ध भ' रहल छथि जखन कि खगता छलैक आत्मनिरीक्षण आ आत्मालोचनाक। आखिर ई किएक ने सोच-विचारल गेल जे आजुक भंगिमा केँ एतेक क्षमता त' रहबाक चाही छलैक जे ओ अपना बुत्ता पर पटना मे मैलोरंगक पहिल प्रस्तुति करा सकैत आ इतिहास केँ अपना ढंग सँ अपना नामे करा लैत। मुदा एखन धरि जखन भंगिमेक अपन इतिहासक ठेकान सम्भव नहि, जकरा लेल तीन-चारि वर्ष सँ लगातार एकाएकी पुरना भंगिमाइ केँ हम आग्रह करैत आबि रहल छी, त' आन कोनहु इतिहास केँ भंगिमा साझी करत से कोना सोचल जाय। एकर बादहु भंगिमाक सदाशयता किंचिते आ कि देरिये सँ सही मुदा एहि अर्थ मे प्रशंसनीय त' अछिए जे आन दोसर छैहो कहाँ जकरा मादे उलहनो उपराग कयल जाय आ ओ सुनबो करय। जएह किछु करितो अछि से भंगिमे, सुनितो अछि त' भंगिमे।

मैलोरंगक एहि प्रस्तुति मे एकर ऐतिहासिक महत्वक संगहि प्रस्तुति सम्बन्धी किछु तत्वसभ पर रंगमंडली केँ किछु बेसीए ध्यान देबाक चाही। अथवा एना कही जे एहि तत्वसभ केँ आधुनिक रंगकर्मक सुच्चा व्यावहारिक दृष्टिकोण सँ देखल जयबाक चाही। जाहि भाषा मे नाटक रचल जाइछ ताहि भाषा-क्षेत्रक रंगमंचीय स्थिति, समृद्धि, विकास आ तकर दर्शक वर्गक बोध-स्तर आ मनोदशाक संगहि स्वीकार्यताक क्रमिक स्थिति केँ जरूरे अकानल जयबाक चाही। भाषांतरण, नाट्यरूपांतरण आ कि प्रदर्शन आलेख तैयार करबाकाल सूझ-बूझ आ सतर्कताक किछु बेसीए खगता होइत छैक। एकहु रत्ती बेसम्हार भेला सँ नाटक मे 'सबजेक्ट' सन उपस्थित होमयबला पात्र अन्यान्य गुण-धर्मक अछैतो 'ऑब्जेक्ट' सन बनि क' एहि जाइछ। 'नाटकक दर्शक आ कि दर्शकक नाटक' से फरिछौट त' चाहबे करी। यएह फरिछौट नाट्य-प्रयोजनक मूलाधार अछि। एहि प्रस्तुति मे दृश्यक नाम पर फिल्मक शॉट सन समायोजन, कथ्य-विस्तार मे उचित क्रमिकताक अभाव, ध्वनि-प्रभावक गज-पट तारतम्य, परिस्थितिजन्य आक्रोशक घनघोर अभाव, (लागय जेना सरकार सम्पोषित विभागक कार्यक्रम देखि रहल छी), बात केँ आन दिशा मे ल' जाय दृश्य-छलक नाम पर दर्शक-छल करबाक अशोभनीय चेष्टा, प्रयोगक अओढ़ मे मारिते रास

उपकथा आ आहे-माहेक समावेशन, स्थापित कथ्यक बेर-बेर आवृत्ति आदि-आदि किछु बिन्दुसभ बरोबरि अखरैत रहल। जबरदस्त नाट्यवस्तुक कमजोर स्क्रिप्ट सँ ई संकट अबिते छैक। एहि नाटकक मैथिली भाषा त' कोनहु कोन सँ कोसीक्षेत्रक प्रभाव नहि जनमा सकल छल। जँ नाटकक सबजेक्ट केँ सार्वजनिक-सर्वक्षेत्रीय बनयबाक छलैक त' ताहू लेल अपेक्षित होमवर्क नहिए सन कयल गेल। कएक बेर त' एना लागल जे भ' गेलैक नाटक। खास क' बच्चा केँ सहथ भोंकेलाक बाद बड़ीकाल धरि नाटकक कएकटा दृश्य अपन बात दर्शक धरि पहुँचयबाक लेल अपसियाँत रहल आ अपन प्रभाव नहिए सन बना सकल। ताहि पर सँ बीच-बीच मे लड़का-लड़कीक जबरदस्ती गाँथल प्रेम-प्रसंग नाटकक मूल कथ्य आ गति केँ बाधित रहल । तखन त' पात्रक अभ्यास आ एहि 'हाइटेक' प्रदर्शन मे स्क्रिप्टक संगे चलबाक एहि रंगमंडलीक प्रस्तुतिजन्य सहजता सन निर्देशकीय चमत्कार बेजोड़ छलैक। लागल जेना औँघायल पटनियाँ मैथिली रंगमंचक आँखि मे पानि झोँकि क' चलि गेल केओ। किछु तेहने सन।

मिथिला सृजन, अंक-03, अगस्त-सितम्बर 2010, मधुबनी

•

अमरजीक रंगदृष्टि

पटना पुस्तक मेला (2010) मे मारिते रास पोथी किनलहुँ-बेसाहलहुँ जाहि मे आलोचनात्मक प्रवृत्तिक पुस्तक बेसी छल। पढ़बा मे आलोचना हमर प्रिय विधा अछि ताहू मे नाट्यालोचना त' कने बेसीए प्रिय। एहि क्षेत्र मे घुरझार लिखैत रहलहुँ अछि। रंगमंचक आधुनिक प्रवृत्ति केँ देखैत-अखियासैत सेहो रहलहुँ अछि। रंगमंच मे एकर आधुनिकताक अपन परिभाषा छैक, अपन मापदंड छैक आ अपन गुण, चरित्र आ सौन्दर्य छैक जे कि एकरा साहित्यक आन विधा सँ अपन फराक आ विशेष अस्तित्व कायम रखबा मे आधारो बनल छैक आ सहयोगियो बनल छैक। एही विशेषताक कारणे हम साहित्य अकादमी सँ 2008 ई. मे प्रकाशित श्रीचन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' द्वारा सम्पादित पुस्तक 'आधुनिक मैथिली रंगमंच : अतीत, वर्तमान ओ भविष्य' किनलहुँ। 167 पृष्ठक एहि पुस्तक मे कुल 19 गोटेक सहभागिता छनि जे कि 10-11 दिसम्बर 2005 क' कोलकाता मे आयोजित संगोष्ठीक क्रम मे एकत्र भेल रहथि। यद्यपि पुस्तक मे एकटा विचित्र विरोधाभास अछि। साहित्य अकादमीक पदाधिकारी श्रीब्रजेन्द्र त्रिपाठी पृ.-15 मे एहि संगोष्ठीक शीर्षक 'मैथिली नाटकक रंगमंच : अतीत, वर्तमान ओ भविष्य' कहैत छथि। मुदा पुस्तकक इनर टाइटिल पेज पृ-03 पर एकरा लेल प्रयुक्त भेल अछि- 'Contemporary Maithili Theatre : Past, Present and Future' आ एहि पुस्तकक नाम राखल गेल अछि 'आधुनिक मैथिली रंगमंच : अतीत, वर्तमान ओ भविष्य'। एतय ओझरौट ई होइछ जे पुस्तक केँ कोन एँगिल सँ देखल जाय! तथापि तीनू शीर्षक मे रंगमंच शब्द विद्यमान अछि तेँ एकरा रंगमंचेक दृष्टिए देखब उचित बुझल जयबाक चाही।

अपन अभ्यासक अनुसार हम पुस्तक केँ आद्योपांत पढ़ल। पुस्तक प्रारम्भ होइत अछि अमरजीक आमुख सँ जे कि हिनक सम्पादकीय वक्तत्व सेहो अछि। मुदा एहि मादे हम अंत मे गप करब। एखन हम श्रीब्रजेन्द्र त्रिपाठीजीक स्वागत भाषण सँ प्रारम्भ करैत छी। त्रिपाठीजी संस्कृत नाटकक वर्तमानकालिक रंगमंचक क्रम मे कावलम नारायण पणिक्करक आ लोकनाट्यक क्रम मे हबीब तनवीरक नाम लेलनि से निश्चये हुनक

ज्ञान-औदार्यक परिचायक अछि, संगहि सभ राज्य मे आ सभ विश्वविद्यालय मे नाटक आ रंगमंचक विभाग हो से सुझाव स्वागत योग्य अछि। नीक बात। मुदा जखन ओ रंगकर्मक विकास हेतु उपयुक्त माहौल बनबय मे वरिष्ठ रंगकर्मी (कनिष्क नहि)क आह्वान करैत छथि त' से विरोधाभासी लगैत अछि कारण जाहि संगोष्ठी मे त्रिपाठीजी स्वागत भाषण पढ़ि रहल छलाह ताही मे हुनक एहि मापदंड के अबडेरल गेल छल। 19टा प्रतिभागी मे अत्यल्पसंख्यक बनल छल सक्रिय रंगकर्मी। आधुनिक रंगमंच विषयक संगोष्ठी मे बिनु योग्यता-विचार केँ सक्रिय रंगकर्मी केँ अछोप बूझि कतिया क' त्रिपाठीजी के बड़ कुशलता सँ फुसला लेल गेल छल। जखन कि होयबाक त' ई चाही छलैक जे सुच्चा आ सक्रिय रंगकर्मी-रंगचिन्तक लोकनि मुहपुरुख रहितथि आ आधुनिक मैथिली रंगमंचक गहेगह अध्ययन-मनन कयल जाइत। सम्पूर्ण संगोष्ठी मे नाटकक साहित्यिके पक्षक चर्चा अभीष्ठ रहल। एतय प्रश्न ई उठैत अछि जे की चौबटिया नाटक, चैम्बर नाटक, एकल नाटक, मूक नाटक प्रभृति विषय आधुनिक रंगमंचक हिस्सा मे नहि छैक? एकर वेशभूषा, रंग-योजना, प्रकाश-परिकल्पना, मंच-विधान, दृश्यबन्धक मंचीय समायोजन, छान्दिक-आलंकारिक बिम्बक दृश्यगत-मंचगत समायोजनक सीमा-सौविध्यादि प्रभृति रंगमंचीय विषय पर त' गलतीयो स' गप नहि भ' सकल। एतद्विषयक रंगमंचीय प्रयोगक रेखांकन कदाचित हिनका लोकनिक बौद्धिक क्षेत्र सँ बाहरक गप छल। तखन मैथिलीक कोन आधुनिक रंगमंचक ताकहेर मे एतेक रास उद्यम कयल गेल? पुस्तकक तेसरे पृष्ठ पर संगोष्ठीक शीर्षकक अंग्रेजी रूप- 'Contemporary Maithili Theatre : Past, Present and Future' सँ स्पष्ट अछि जे संगोष्ठीक उद्देश्य समकालीन रंगमंच सँ जुड़ल अछि मुदा अपसोच जे एकहुटा आलेख एकर समकालत्व पर विचार नहि क' सकल अछि। स्वयं त्रिपाठीजी रंगमंचक नव-नव तकनीकी परिवर्तनक उपयोगक गप कयलनि मुदा की रंगमंचक तकनीकी पक्ष पर एकहुटा आलेख छैक एहि पुस्तक मे? नहि छैक। मुदा किएक नहि छैक? तखन एकर Past की आ एकर Future की? एतद्विषयक ज्ञाता केँ किएक ने नोंतल-हकारल गेल छल संगोष्ठी मे? पुस्तक पढ़ि क' त' लगैत अछि जे एहि विषयक दक्ष मैथिली रंगमंच मे छैके नहि। जखन कि वस्तुस्थिति एकदम उनटा अछि।

ई त' महंथ लोकनिक अज्ञानताटा अछि जाहि कारणे रंगमर्मज्ञ लोकनि कतियाओल जा रहल छथि।

विषय-प्रवर्तनक क्रम मे अमरजीक आचार्य रमानाथ झाक स्थापनाक विरुद्ध हिम्मति प्रशंसनीय अछि। मुदा हम एकरा दोसरो कोण सँ देखैत छी। रमानाथबाबू त' तुलसी-ताम-गंगाजल ल' क' नाटक केँ उपटाबय लेल उपस्थित भेल रहथि मुदा जयकांतबाबू अपन ठोस अन्वेषण-स्थापनादि ल' क' एकरा निमित्त ठाढ़ भ' गेलाह। वस्तुत: हिनका दुनूक (रमानाथबाबू आ जयकांतबाबू) बीच लेखयुद्ध रंगकर्मेतर साहित्यिक प्राणी द्वारा रंगकर्म कि रंगकर्मीक अवदान केँ खारिज किंवा समर्थन करबाक युद्ध छल। प्रकारान्तर सँ आजुक स्थिति सेहो ओहने अछि। रंगकर्मे जीतैत रहल से फराक बात मुदा नव रूप मे त' रमानाथबाबूक समगोत्रीक संख्या बढ़िये गेल अछि जे नाटक त' मानैत छथि मुदा ओकर मंचीय मूल्य केँ अनठा क'। अमरजीक सेहो किछु तेहने सन स्थिति छनि।

डा. रामदेव झाक बीज भाषण ठीके सारगर्भित छनि। मुदा भाषण (लेख)क अंत ओ तीनटा समस्याक रेखाकंन सँ करैत छथि। पहिल जे- 'नगरीय रंगमंचक नाटक ग्रामीण रंगमंच लए अनुपयुक्त भ' रहल अछि।' मुदा कोना भ' रहल अछि तकर कोनहु ठोस चर्चा नहि कयलनि? की आबहु वएह गाम छैक जे रामदेवबाबूक युवावस्था मे छल जतय सड़क नहि, बिजली नहि, गाम पिछु विद्यालय नहि? व्यवस्थाक स्तर सँ आब गामहु मे ओ सभ किछु सुलभ छैक जे शहरिया रंगमंच मे उपलब्ध छैक। बात त' प्रयोक्ता दलक नाट्यचिंतनक छैक जे ओ नाट्यकथ्य आ नाट्यवस्तु केँ विभिन्न रंगमंच पर कोन सम्भव आ स्वीकार्य विधि सँ प्रस्तुत करय चाहैत अछि। ग्रामांचलक जाहि रंगमंचक गप भ' रहल अछि से अपना केँ कतेक प्रयोगधर्मी बना सकल? प्रयोगक लेक सक्रियता आ अभ्यासक बेसी खगता होइत छैक। उत्सवधर्मी रंगमंच आ कि सक्रियकताक नाम पर अत्यंत मंथर रंगमंच सँ रंगप्रयोग कि रंग-आन्दोलनक त' उमेदे नहि कयल जयबाक चाही। एहि दिशा मे शहरी रंगकर्मक योगदान बड़ पैघ अछि। गौआँरी नाटकक स्वर आ त्वरा ततेक धिम्मर रहैत अछि जे ओकर धम्मक केँ पड़ोसियो गाम नहि अकानैत अछि मुदा शहरी रंगमंचक धम्मक तेहने होइछ जे कारंत, रतन थियम, निरंजन गोस्वामी, उषा गांगुली, सुनील

पोखरेल, नसीरुद्दीन शाह, नादिरा बब्बर, कुणाल, महेन्द्र मलंगिया लोकनिक देहातियो प्रस्तुति पर दिल्लीक महंथानक कान ठाढ़ भ' जाइत छैक। एहने धम्मकक कारणे त' ब्रेख्त बरहमल देशनिकलुए बनल रहलाह। ई शहरिये रंगमंचक चमत्कार छलैक जे ई संगोष्ठी कलकत्ता मे आयोजित भेल छल, कलिगाँव कि कबिलपुर मे नहि। अभिप्राय ई जे हमहूँ ग्रामीण रंगमंच मे बहुत रास नाटक कयने छी, क' रहल छी आ एहि रंगमंचक पक्षधरो छी मुदा रामदेवबाबूक चिन्तन-भूमि पर ठाढ़ भ' क' नहि।

हिनक दोसर समस्या छनि जे- 'शहरी रंगमंच एकहिटा नाटक केँ बेर-बेर प्रस्तुत करैत रहैत अछि।' त' हम कहय चाहब जे ओ रंगमंचक किछु व्यावहारिक आ अपरिहार्य अध्यायसभ सँ अपरिचित छथि तेँ एहन गप भ' रहल छनि। तेसर समस्या छनि जे- 'नाटकक लेखन आ अभिनयक बावजूदो नाटक साहित्य नहि बनि रहल अछि से चिन्ताक विषय।' मुदा रामदेवबाबूक ई चिंता व्यर्थ छनि। साहित्य मे जे रंगमंचीय दृष्टि सँ उबाउ आ अव्यावहारिक पक्ष अछि तकरा आधुनिक रंगमंच छोड़ने सन जा रहल अछि। से उचितो अछि आ आवश्यको। नाटक अपन दुनू मूल्य (साहित्यिक आ मंचीय)क संग नाटक अछि। बिनु साहित्यिक मूल्य केँ नाटक कोना कहल जायत मुदा ओहि मूल्यक जे मलिकौत छलैक से मंच पर आबि क' टूटि गेलैक अछि। आब ओकरा ओकर मंचीय मूल्यक परिप्रेक्ष्य मे सेहो गछल जा रहल अछि। से एकर सीमा सेहो छैक आ सौन्दर्य सेहो। किछु आधुनिक नाटक देखने एकर सोदाहरण व्याख्या भ' जायत। स्वकालीन मान्यता केँ गसिया क' धेने ओकर उत्तरकाल छूटि जाइत छैक आ तखन नव मान्यता-प्रयोगादि केँ गछय मे अशौकर्य होइत छैक।

उद्घाटन-भाषण मे अशोक कुमार ठाकुर नाट्य-साहित्यक मारिते रास तथ्य रखलनि अछि से प्रशंसनीय मुदा, अंतत: ओ साहित्यिके मूल्यक ओकालति मे अपन ऊर्जा जियान कयलनि। ओ जाहि रुक्मिणी-हरण नाटक केँ मध्यकालक बूझि लेलनि, वस्तुत: ओ पं. गोविन्द झा 86-87 ई. मे लिखलनि आ चेतना समिति, पटना ओकरा दिनांक 23.11.1988 क' विद्यापति स्मृतिपर्वक अवसर पर कुणालक निर्देशन मे मंचित कयलक। मुदा ई नाटक अपन प्रसिद्धिक शिखर तखन छूलक जखन कुणालजी एकरा किरतनियाँ फार्मेट मे पूर्णत: परिवर्तित क' एकर प्रदर्शन-आलेख तैयार

कयल। जनतब दी जे आधुनिक मैथिली रंगमंच मे प्रदर्शन-आलेखक सूत्रपात एतहि सँ भेल अछि आ तकर एकमात्र श्रेय कुणालजी केँ जाइत छनि।

डा. देवकांत झा आधुनिक मैथिली नाटकक विकासक गप त' कयलनि मुदा से विकास नाटकक लेखनक विकास भ' क' रहि गेल छनि। ओ एक ठाम लिखैत छथि जे- 'नाटकक प्रकृति-प्रवृत्तिक अनुरूप मंचक विकास अपेक्षणीय अछि अन्यथा मंचक बान्हल-छानल फर्मा मे नाट्यकलाक आत्मा मरि जयतै।' उक्त कथन सँ स्पष्ट अछि जे आइयो देवकांतबाबू नाटकेक हिसाबेँ मंच केँ सेहो गढ़य चाहैत छथि। लगैत अछि जे हुनका आधुनिक रंगमंचक उपयोगिता आ ओकर प्रभाव-परास-क्षेत्रादिक अद्यतन अनुभव नहि छनि। तेँ त' ओ नाट्यकलाक आत्मा केँ मरि जयबाक गप क' गेलाह। आखिर नाट्यकला किंवा नाटकक आत्मा की छैक? नाटककार द्वारा गढ़ल यथारूप नाटक कि हुनक कथ्यविधि आ कि हुनक शब्द-विम्बादिक आहे-माहे। संकटक जतबाटा लिस्ट देवकांतबाबू तैयार कयने छथि तकर मूल कारण अछि रंगमंचक विभिन्न प्रभागक ज्ञानाभाव। जाहि लेखक केँ एकर ज्ञान छलनि किंवा छनि से आइयो सफल नाटककार-नाट्यालोचक छथि। महत्वपूर्ण ई नहि जे नाटक पैघ कि मंच पैघ अपितु ई महत्वपूर्ण छैक जे लेखक केँ मंच आ नाटकक बीच तादात्म्यक ज्ञान आ संतुलन-सामर्थ्य कतेक छनि। देवकांतबाबू जखन नाटकक सूची बनबैत छथि त' पहिल साँझ (सुधांशु 'शेखर' चौधरी), विदापत, कुसमा-सलहेस (कुणाल), रुक्मिणी-हरण (पं. गोविन्द झा), रक्त (अरविन्द अक्कू), सामा-चकेबा, जटा-जटिन, लोरिक-चंद्रा, राजा सलहेस, इथ-उथ, सेहन्ता (रोहिणी रमण झा), घूग्घू (मनोज मनुज), अगुरवान, मलाहक टोल, पृथ्वीपुत्र (तीनू रूपान्तरित नाटक, मूल लेखक क्रमशः धूमकेतु, राजकमल आ ललित) प्रभृति आधुनिक मैथिली रंगमंचक किछु कालजयी नाटक एकाते रहि जाइत छनि। हिनक आधुनिक नाटक 1904 ई. (सुंदर संयोग, जाहि सँ हम असहमत छी) सँ प्रारम्भ भ' क' 1989 ई. (पसिझैत पाथर) पर अंत भ' जाइत अछि जखन कि ई संगोष्ठी 2005 ई. मे भ' रहल छल। हिनका सँ कुणाल, रोहिणी रमण झा, कुमार शैलेन्द्र, मनोज मनुज, कमल मोहन चुन्नू, कुमार गगन सन आधुनिक नाटककारक नाम छूटि जाइत छनि जे एखनहुँ रंगमंचक समृद्धि मे लागल छथि। ई देवकांतबाबू आ हुनक साहित्यिक

दियादवादक सीमा संकोच त' अछिए, हिनक बसियायल-भसियायल नाट्य-विकासक प्रतिफल सेहो अछि। लगैत अछि तकरे क्षतिपूर्ति मे ओ कखनो रामदेवबाबूक स्तुति करैत छथि त' कखनो पं. गोविन्द झाक। चलैत-चलैत एकटा झाड़ूमार सामान्यीकरण सेहो दैत छथि जे मंचक लेल जे नाटक लिखल जाइछ ताहि मे मौलिक लेखनक रसास्वाद नहि आबि पबैत अछि। हम एतबे कहय चाहब जे वस्तुक अनुरूप बटखरा नहि रखने ई स्थिति अबैत छैक।

विभूति आनंद एकटा भीजल रंगकर्मी छथि से हिनकर आलेखो बजैत अछि। आधुनिक रंगमंच मे कोनहु प्रस्तुतिक रचना-प्रक्रिया जाहि चारि स्टेज सँ गुजरैछ से आब एकर आवश्यक मान्यता किंवा मापदंड सन भ' गेल अछि। मुदा एक मिनट। की एहि मापदंड सँ पसिझैत पाथर केँ भेटोघाँट छैक जकरा कि वर्ष 1989 ई. मे मैथिली साहित्यक सर्वोच्च पुरस्कार भेटि चुकल अछि?

अमलेन्दु शेखर पाठक आधुनिक मैथिली नाटकक संरचना विधानक क्रम मे अपन बात त' रखलनि मुदा पुरान स्थापना केँ नव व्याख्याक संग। सिर्फ मैथिली मे संवाद रखला सँ किंवा नाटक मे मैथिलीक गीत-गजल सन्हिया देला सँ नाटक आधुनिक भ' जाय, से कम-सँ-कम हमरा गछबा मे अशौकर्य अछि। हम श्रद्धा-संवेदनादि सँ मंत्रमुग्ध भ' ने इतिहासक छानबीनक पक्षधर छी आ ने एहन इतिहासक निर्माणक पक्षधर छी। 'सुंदर संयोग' केँ रंगमंचीय दृष्टिए देखले नहि गेल। जाहि दृष्टिए देखल जा रहल अछि से निःसंदेह महामना जीवन झाक अवदान केँ ओछ करबा मे सहयोगी सिद्ध भ' रहल अछि। जँ एना होइक जे 'जीवन झा नाट्योत्सव' नामक एकटा योजना बनय जाहि मे एकछाहा हुनके नाटकक मंचन हो, से विभिन्न ठामक रंगदल द्वारा हो। ओहि समस्त रंगदल केँ ओहि नाटकक मंचीय-प्रदर्शन हेतु जोड़-घटावक सुविधा-स्वतंत्रता सेहो देल जाय। एहि आयोजन केँ मैथिलीक तमाम साहित्यकार देखथु। स्वतः परिचय भेटि जयतनि जे आधुनिक नाटक की होइत छैक आ आधुनिक रंगमंच की होइत छैक। तखन अमलेन्दुजी केँ ने त' आधुनिक नाटकक व्याकरण-संहितादि ताकय पड़तनि आ ने आधुनिक भरत कि विश्वनाथ ताकय पड़तनि। कानून संहिता बनओने प्रशासन मे सुविधा अवश्य होइत छैक मुदा से एकर

समाजशास्त्रीय पक्ष छैक। रंगमंच केँ बेसी कानून-सम्मत बनओने एकर विकासक गति मंथरे भेलैक अछि। रंगमंचक कानून-तंत्र किंवा प्रजातंत्र किछु अपना तरहक छैक। कोनहु होशगर आ सक्रिय रंगकर्मी सँ पूछल जाय जे आजुक रंगमंच मे भरतमुनिक नियम-कानूनक कतेक प्रतिशत अनुपालित अछि। रंगमंचक आधुनिकता कोनो अकास स' टघरल स्थापना नहि छैक। प्राचीने परम्पराक उबाउ रूप केँ छोड़ि अथवा ओकरा प्रयोगसापेक्ष बना क' निरन्तर निखारबाक एकटा क्रमिक एवम् सामूहिक प्रक्रियाक प्रतिफल अछि ई। नव-नव तकनीकक रंगमंचीय प्रयोग आ नव-नव आविष्कारक रंगयुक्तिक संग समावेश रंगमंच केँ आधुनिक बनबैत छैक। अस्तु। एखन एकर विस्तार मे जायब हमर अभीष्ट नहि। हम पुनः अपना पाहि पर अबैत छी।

बरमहल कहल जाइछ जे मैथिलीक नाटक गाम सँ कटि रहल अछि, आधुनिक नाटक गामक मंचन-व्यवस्थाक अनुकूल नहि रहि गेल अछि, आदि-आदि। आखिर गामक रंगमंच मे परिवर्तन-सम्बर्द्धनादिक गुंजाइश किएक ने गछल जाइत अछि। गामक स्थिति आ सामर्थ्यक अनुरूपे ग्रामीण रंगमंचक गढ़नि भेल अछि। आब जँ गामहु केँ बिजली चाही त' एकर रंगमंच लेल डिबिया-लालटेन किएक? गाम दिन-दिन बेपर्द भेल जाइछ आ एकर रंगमंच पर पर्दा-प्रथा कतेक प्रासंगिक? एखनहु गाम पिछु रंगशाला नहि अछि। गामक बड़का-बड़का सबजनियाँ दलान भइबट्टीक ग्रास बनि, कोला सँ कियारी भ' गेल। नाटकक स्टेज कत' बनत? तथापि जँ कोनहु फर्द जगह पर स्टेज बनितहु अछि त' ओहि मे ओकर ताम-झामक ओरियाओन बड़ भारी पड़ैत छैक। पर्दा टाँगय मे जे बेलना बेलय पड़ैत छैक तकरे सँ आजिज भ' प्रकाश-योजनाक शरण लेल गेल अछि। एहि सँ ग्रामीण रंगमंचक कोनहु सौन्दर्य आहत नहि होइत छैक। लोकनाट्य त' सेहो बेपर्दे होइत अछि, मात्र एकटा पछिला झाँपटा चाही। रूप-सज्जा सामान्य क' देल गेल छैक। हर्जे की? गाम आ शहर दुनूक रंगमंच सँ हमर सम्पर्क क्रियात्मक रहल अछि। गामक रंगमंचक मादे एखनो मारिते रास भ्रामक तथ्य जे बिलहल जाइछ से ग्रामीण रंगमंचक समर्थनक चिंता कम आ शहरिया रंगमंचक विरोधक चिंता बेसी अछि। ग्रामीण रंगमंचक अभिप्राय अविकसित रंगमंच त' नहिए होयबाक चाही। एखनहुँ

गमैया रंगकर्म पर पारसी रंगमंचक प्रभाव किछु बेसीए अछि। की एकरा मैथिलीक रंगकर्म गछल जाय? ताहि अर्थ मे त' कोलकाता, पटना, जनकपुर, मधुबनी, बेगूसराय आ कि दिल्लीक रंगमंच गामेक रंगमंचक पर्याय अछि।

चीनीक लड्डू, बसात, कुहेस प्रभृति नाटक कहियो बड़ सफल नाटक रहल होयत से मानि लैत छी। मुदा आइ ओकरा आंगनक बारहमासा, काठक लोक, ओरिजनल काम (तीनू महेन्द्र मलंगियाक नाटक), अंतिम गहना (रोहिणी रमण झा), बकलेल (ललन प्रसाद ठाकुर), रक्त (अरविन्द अक्कू), रुक्मिणी-हरण (पं. गोविन्द झा), पारिजात-हरण (उमापति) (अंतिम दुनूक नाटकक प्रदर्शन आलेख- कुणाल) नाटकसभ मैथिली रंगमंचक माइलस्टोन नाटक अछि। पछिला दस वर्षक कुल मंचन मे सर्वाधिक मंचित महेन्द्र मलंगियाक नाटकसभ अछि। एहि तमाम रंगमंचीय तथ्य केँ अनठा क' अमलेन्दुजी 'पसिझैत पाथर' मे नाटकक सबटा गुण, रीति आ सौन्दर्य केँ थोपि दैत छथि त' एहि प्रकारक नाट्यज्ञान पर की कहल जाय! स्तुति करय लेल नव-नव सिद्धांत गढ़ब अंततः घातके सिद्ध भेल छैक। स्यमंतक, बज्र, इथ-उथ (तीनू रोहिणी रमण झाक नाटक) एकटा चिनमा (विनोद बंधु), गुलाबछड़ी, पढ़ुआ कका अयला गाम, (अरविंद अक्कू), गठबंधन, शपथ ग्रहण (कुमार गगन), नव घर उठे, बसही टोल, चाङुर (कमल मोहन चुन्नू), घुग्घू (मनोज मनुज), खड़िया खेल (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) प्रभृति आधुनिक रंगबोध आ रंगप्रयोग सँ भरल एहन नाटकसभ हिनका लोकनि केँ नहि अभरैत-अरघैत छनि से कोनहु नान्हिटा त्रासदी नहि छैक।

नाटकक साहित्यिक मूल्यक शुद्धतावादी हेँजक सम्भ्रान्त साहित्यकार श्री योगाबाबूक अश्लीलताक सार्वजनिक मापदंड की छनि? नाटकीय मर्यादा की छैक? वस्तुतः आजुक समय मे ई शब्दावली मात्र कुलीन-सम्भ्रान्त बनबाक भाभट मात्र अछि। तेँ ई लोकनि समकालीन नाटकक प्रवृत्ति अकानय मे पछुआ गेल छथि। कोनो ठीक नहि जे ई लोकनि मंटो, चुगतई कि विजय तेंदुलकरक नाट्यप्रस्तुति केँ कामसूत्र कि कोकशास्त्र कहि देथि। नाटकक समकालत्व पर गप करबा काल चारूभर होइत प्रयोग-परिवर्तनादि पर नजरि रखबाक चाही। कहबा मे हर्ज नहि जे एहि स्तर सँ एहि पुस्तकक

एकहुटा पत्रवाचक उपयुक्त नहि बुझाइत छथि। योगाबाबू 'शपथ ग्रहण'क जाहि संवादक चर्च करैत छथि तकर मंचन या त' ओ देखने नहि छथि अथवा ओहि नाटकक मूलकथ्य केँ अनठाय रंगमंचक भाषा-प्रकृति केँ अपने चास-बास मे खुटेसय चाहैत छथि। नाटकक भाषा-प्रकृति आ अन्य विधाक गद्यक भाषा-प्रकृति मे अंतर छैक। नाटक केँ समग्रता मे नहि देखने ई व्यवधान होइते छैक जे योगाबाबू सन दृष्टिवान् लोक केँ भेल छनि।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क दृष्टि रंगमंच सँ सम्पृक्त अछि से हिनक आलेख 'आधुनिक मैथिली नाटक मे गीत ओ संगीत'क तथ्य आ विश्लेषण कहैत अछि। मुदा ई त' रंगमंचक प्रदर्शन-सापेक्ष पक्ष अछि तेँ एहि क्रम मे ओ जतबा नाम गनौलनि से त' ओकर गीतपक्ष मे चलि गेल। ओ ने त' नाटकक संगीतक गुण-धर्मक चर्च करबाक खगता गमलनि आ ने एकटा चिनमा, पढ़ुआ कका अयला गाम, गुलाबछड़ी, मुद्रायज्ञ, नव घर उठे, बसही टोल, चाङुर प्रभृतिक सांगीतिक प्रयोग केँ रेखांकित-विश्लेषित क' सकलीह जे कि हिनके शहर (पटना)क रंगमंच पर मंचित नाटकसभ अछि।

शैलझाक आलेख 'आधुनिक मैथिली रंगमंच मे नारी' मे जे रंगमंच मे अभिनेत्रीक समस्या अछि से सिर्फ कलकत्ताक रंगमंचक परिप्रेक्ष्य मे। पटना, दिल्ली, मधुबनी आ कि जनकपुरक रंगमंच आब नारीपात्रक पैंच-पालट नहि करैत अछि। पटना मे त' मैथिली भाषी अभिनेत्रीक नमहर लिस्ट अछि। अभिप्राय जे शैलझा अपेक्षित मेहनति नहि क' सकलीह। सम्पादक महोदय सेहो एकरा रेखांकित करब जरूरी नहि बुझलनि मुदा अभय कुमार यादव, जे कि सिद्धांत कम आ अनुभव बेसी लिखने छथि, तकरा सम्पादक अपन सम्पादकीय मे एकटा जबरदस्त लथार मारि देलथिन। छत्रानन्द सिंह झा मैथिलीक रेडियो नाटक केँ चारूभर सँ देखबाक प्रयास कयलनि अछि। डा. महेन्द्र नारायण राम लोक-नाटकक किछु महत्वपूर्ण आ व्यावहारिक पक्षक लेखा-जोखा प्रस्तुत कयलनि अछि। अरविन्द अक्कूक आह्वान जे जँ मैथिली नाटकक विकास चाहैत छी त' निश्चित रूपे ग्रामीण रंगमंच केँ शहरी मंच जकाँ विकसित कर' पड़त, तखनहि मैथिली नाटक मे उत्कृष्टता आओतैक' से जरूरे सराहनीय अछि। प्रदीप बिहारीक रंगमंचीय अनुभव आ तज्जन्य विचार-विमर्श जरूरे नीक छनि। भंगिमा केँ रंगमंचक पत्रिका (अर्द्धवार्षिक) गछबा मे जे हर्ज भेलनि से फराक बात।

शंकरदेव झा 'आधुनिक मैथिलीक एकांकी ओ प्रहसन'क मादे गप कयल अछि मुदा ई विस्तृत आलेख अपन प्रारम्भहि सँ रंगमंच सँ असम्पृक्त सन अछि। नाटकक लघुरूप नहि छैक एकांकी। ई त' एक अंकक नाटक अछि जे लघु आ कि दीर्घ किछुओ भ' सकैत अछि। लगक दूरी, पहिल साँझ, भफाइत चाहक जिनगी प्रभृति नाटकसभ कहबा लए त' ओ एकांकी प्रकृतिक अछि मुदा समय लैछ ओ पूर्णांकी सन। तेँ सभतरि भरतमुनिक नाट्यशास्त्र सँ काज नहि चलत। आजुक रंगमंच ओहि सँ एक धाप आगुए निकलि चुकल अछि। चैम्बर ड्रामा, एकल नाट्य, चौबटिया नाटक, मूक नाटकसभ एकर उदाहरणो अछि। धरातलीयरूप मे नाट्यशास्त्र आ कि वर्णरत्नाकर प्रभृति ग्रंथक बेस उपयोगिता अछि मुदा जखन एकर उपयोग नाट्य-प्रशासनक एकमात्र कानून-संहिताक रूप मे होमय लागल त' रंगमंच आ रंगकर्मी केँ ई मान्यता कहियो नहि स्वीकार्य भेलैक अछि। एकांकीक मादे किछु तथ्य-सूचनादि अवश्य एहि आलेखक उपयोगी पक्ष अछि। मुदा पोखरिक भीड़ पर बैसि क' पोखरि केँ थाहि लेबाक दाबी जतेक उचित होइत छैक ततबे उचित छनि समकालीन नाटक आ रंगमंच पर शंकरदेवजीक विचार। नाटकक सैद्धांतिक पक्षक प्रायः सभटा विचार एकभग्गू छनि। तखन जे ओ मलंगियाजी कि कुणालजीक मादे गप करैत छथि से हिनका दुनू गोटे केँ मैथिलीक लाखो दर्शक उदारतापूर्वक रंगदक्ष व्यक्तित्व मानि लेने अछि। आब कोनहु साहित्यकारक प्रमाण पत्रक खगता नहि छनि हिनका लोकनि केँ। कारण, भारत सरकारक राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (एन.एस.डी.) दिल्ली मे मैथिलीक इएह दू-तीन टा नाम अछि जे मैथिली रंगमंचक पर्याय बनल अछि। हिनका लोकनिक ई स्तर कोनहु मतदानक आ कि पैरवीक प्रतिफल नहि अपितु हिनक सुच्चा आ प्रतिबद्ध रंगकर्मक पुरस्कार अछि। एकटा आओर खास बात। ई लोकनि नाट्येतर साहित्यकारक रंगमंचीय टिप्पणी केँ अकानितो नहि छथि। कारण हुनको लोकनि केँ बूझल छनि जे मैथिलीक प्रायः तमाम मुहपुरुख साहित्यकार रंगमंचीय ज्ञानक मामिला मे शून्यवते छथि। दरभंगिया पीठक त' रंगकर्मक क्षेत्र मे गलतीयो सँ चर्च नहि होइछ। तेँ त' जखन दरभंगिया महंथान सँ नाट्यालोचना होइछ त' तकरा अनाधिकार चेष्टा बूझैत छथि ओ लोकनि। दरभंगाक रंग-सक्रियता की छैक? जतहुक रंगमंच जतेक सक्रिय ततहुक नाट्यालोचनाक स्तर ततेक

उन्नत होइत अछि। आँखि मूनि क' कैंची चलयला सँ अपनो अहित होयबाक सम्भावना रहैत छैक।

नाटक केँ 'स्टेज कॉपी' बनय सँ बेकार चिन्तित छथि शंकरदेव। ओ स्टेज कॉपीक अभिप्राय नहि बूझि रहल छथि। रंगमंच मे ई एकटा स्वतंत्र विधाक रूप मे 'प्रदर्शन-आलेख' नाम सँ विकसित आ प्रतिष्ठित भ' चुकल अछि। मैथिली मे एकर सम्पूर्ण श्रेय कुणालजी केँ जाइत छनि। मलंगियाजीक एकांकी सँ साहित्य समृद्ध भेल अछि से गछय मे अशौकर्य छनि शंकरदेव केँ। आखिर साहित्यिक एहन कोन परिभाषा हिनका लोकनिक केँ हाथ लागि गेल छनि? नाटक लेल शुद्ध साहित्यिकताक एतेक आग्रह किएक? की नाटक एखनहु अपन मंचीय मूल्य केँ साहित्यिकताक तर मे पिचाइत देखओ। एही साहित्यिकताक चलते मैथिलीक मारिते रास नाटक अपन मूलरूप मे मंचक सीढ़ी चढ़ैत-चढ़ैत बेदम भ' जाइत अछि। एकांकीक जतबा वर्गीकरण शंकरदेव कयल अछि से की मंच सापेक्ष वर्गीकरण अछि? ई एकटा पैघ संकट छैक जे आइ धरि रंगमंच केँ रंगमंचीय दृष्टिए ई लोकनि देखहे ने चाहलनि। ई मैथिलीक नाट्येतर साहित्यकार लोकनिक बुधियारी सेहो छनि आ सीमा सेहो।

फूलचंद झा 'प्रवीण'क आलेख 'आधुनिक मैथिली रंगमंचक स्थानीय रूप' अवश्ये मेहनतिक संग लिखल गेल अछि। समग्रता मे देखी त' एहि पुस्तकक एकहु अध्याय आधुनिक मैथिली रंगमंचक तकनीक, रूप, सौंदर्यादि पर नहि अछि। पुस्तक पढ़ि त' एतबे अर्थ लगैत अछि जे एखनहुँ मैथिली रंगमंच प्राचीनकालिक किंवा मध्यकालिक रूप-गुणदि केँ धयनहि अछि कारण, उल्लिखित नाटकक बेसी संख्या या त' ओही कालखंडक अछि अथवा साहित्यिक मूल्यक अछि। जे लोकनि मैथिलीक रंगमंच केँ आधुनिक बनौलनि तिनका पर केन्द्रित एकहु टा आलेख नहि अछि एहि पुस्तक मे। जेना सुधांशु 'शेखर' चौधरी, त्रिलोचन झा, पं. गोविन्द झा, श्रीकांत मंडल, गुणनाथ झा, दयानाथ झा, महेंद्र मलंगिया, कुणाल, कौशल कुमार दास, प्रशांत कांत, विनीत झा, कुमार शैलेन्द्र, किशोर केशव, मनोज मनुज आदि। जँ नहि बेसी त' एतबा त' स्पष्ट कयले जा सकैत छल जे ई नामसभ आधुनिक मैथिली रंगमंच मे कोन कारण सँ प्रासंगिक अछि। एहने सन किछु प्रासंगिक तत्वक अभाव मे ई पुस्तक गदौस बनैत-बनैत

बाँचल अछि। रमचेलवा साहित्य आ संस्कृतिक ई परिणाम अछि जे एकटा गम्भीर विषय पर एकटा नामचीन संस्था द्वारा आयोजित सेमिनार अंततः नोंतपुरी, भँजपुरी आ सपठैती भ' क' रहि गेल अछि।

आब गप एहि पुस्तकक सम्पादन पर। एकर सम्पादक छथि श्रीचंद्रनाथ मिश्र 'अमर'। सम्पादनक हिनक किछु बानगी देखल जाय। पुस्तकक अनुक्रम मे सम्पादकक अपना नाम मे 'श्री' सटा क' लिखल गेल छनि मुदा ब्रजेन्द्र त्रिपाठी, योगानंद झा, छत्रानंद सिंह झा, अशोक झा लोकनिक नाम सँ श्री हटा क' राखल गेल अछि। रामदेवबाबू आ योगानंद झाक नाम मे डॉ. लागल अछि मुदा देवकांत झा (पृ. 37) आ विभूति आनंदक (पृ. 43)क नामक संग डॉ. नहि अछि जखन कि अनुक्रम मे डॉ. अछि। लगैत अछि जेना डॉक्टरेटक उपाधि एम. एल. एकेडमी सँ बँटाइत छलैक। अनुक्रम मे अमरजीक 'मिश्र' रामदेवबाबूक 'झा' आ अमलेन्दु शेखरक 'पाठक' सटले अछि मुदा ब्रजेन्द्र त्रिपाठीक 'त्रिपाठी' छत्रानंद सिंह झाक 'झा' आ महेंद्र नारायण रामक 'राम' हटल अछि। सम्पादनक ई कोन मापदंड छैक?

सम्पादकीय आमुख मे सम्पादक देवकांत झाक हवाला दैत लिखैत छथि जे वैश्विक समस्या केँ ध्यान मे राखि नाटक नहि लिखल जाइत अछि। त' हमर आग्रह जे सम्पादक देवकांतबाबूक संग पटना आबि किछु आधुनिक नाटक जेना- स्यमन्तक, वज्र, इथ-उथ, एकटा चिनमा, गठबंधन, बसही टोल प्रभृतिक ताकहेर क' अपन नाट्यज्ञान केँ अपडेट करथु। अभय कुमार यादव लेल जे श्रम करबाक सुझाव सम्पादक देलनि से इहो कहितथि जे अभयजी केँ आर कोन-कोन बिंदु केँ स्पर्श करबाक चाही छलनि। योगानंद झाक विचारक समर्थन क' जवारी टा निमाहलनि सम्पादक।

'सुंदर संयोग'क प्रथम मंचनक तिथि (अनुमानितो)क अभाव अंततः सम्पादके पर प्रश्नचिह्न अछि। प्रदीप बिहारीक कथ्यक बदला मे सम्पादक दरभंगिया रंगमंचक बलधकेल ओकालति करैत 'तर्जनी'क गप कयल अछि। की दरभंगिया तर्जनी मधुबनीक जमघट आ प्रतीक, जनकपुरक मिनाप, पटनाक भंगिमा, दिल्लीक मैलोरंग, आ कि कोलकाताक कोकिल मंच प्रभृति रंगदलक बरोबरि करबाक हुब्बा रखैत अछि? सम्पादकक अंतिम दाबी जे ई संकलन नाटक ओ रंगमंच विषयक एक आधार बनत

जे भविष्य मे मार्गदर्शक काज क' सकत, से एकदम महत्वहीन अछि। ई पोथी त' आधुनिक मैथिली रंगमंचक आधार केँ कमजोरे करैत अछि। भविष्यजीवी एहन कोनहु प्रकारक ठोस अध्याय दिस ई पोथी संकेत नहि करैत अछि। ओहुना सम्पादकक आधुनिक मैथिली रंगमंचक मादे सपरिवार चिंता रंगमंचक मादे असफल चेष्टा मात्र कहल जा सकैत अछि, आर किछुओ नही। 'आधुनिक मैथिली रंगमंच...' शीर्षक देखि रंगमंचीय आलोचनात्मक पुस्तक किनलाक बाद जे मोन पनियायल छल से पढ़ि लेलाक बाद पछता रहल अछि।

28 सितम्बर 2011, पटना

•

मैलोरंगक विलाप : रंगयात्रा-प्रसंग

02 जनवरी 2011 क' यात्रीजीक कविता 'विलाप'क श्री महेन्द्र मलंगिया द्वारा कयल नाट्य-रूपान्तरणक मैलोरंग, दिल्ली द्वारा कयल गेल प्रस्तुति देखबा लेल पटना सँ हमहूँ नोँतल गेल रही। जाड़क कनकन्नी एक दिस आ नाटकक प्रति दरेग दोसर दिस। बीच मे धुइन लगबाक कारणेँ ट्रेनक विलम्ब सँ चलबाक आ कि निरस्त भ' जयबाक समाचार बेर-बेर अदका दैत छल। वरिष्ठ रंगकर्मी डा. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' आ नवतुरिया रंगकर्मी रीतू कर्ण केँ सेहो चलबाक छलनि। पहिलीए जनवरी (2011)क सायंकाल दिल्ली लेल चलैत गेलहुँ। ई यात्रा महत्वपूर्ण लागि रहल छल कारण भरि रस्ता रंगकर्मेक गपशप होइत गेल। अपन अनुभव बिलहय मे प्रेमलताजी कोताही नहि कयलनि। संस्मरणक बहन्ने तत्कालीन-समकालीन रंगकर्म, एकरा प्रति आम धारणा, नाट्य-स्थिति, मंच-मंचनक दशा-दिशा, अपन दीर्घकालीन रंगमंचीय सहभागिता-सक्रियता, रंगमंच लेल समाजक संग संघर्षदि विषयक गपशप हमरा लेल बेस उपयोगी भ' रहल छल।

भोरे नई दिल्ली उतरि गाँधी शांति प्रतिष्ठान पहुँचि चाह-पान-जलपानादि सँ निवृत्त भेलहुँ। प्रकाश अयलाह जे कि अझुका प्रस्तुतिक निर्देशक सेहो रहथि, हुनके संग श्रीराम सेंटर चलि अयलहुँ जतय मैलोरंगक रंगकर्मी लोकनि अझुका प्रस्तुति लए अपन-अपन हिस्साक काज मे लागल-भीड़ल रहथि। कार्यक समुचित वितरण आ तकर कुशल निर्वाह हमरा नीक लागि रहल छल। मुदा ताहू सँ बेसी नीक लागल छल एकर रचना-प्रक्रिया। किछु गोटे मंच सरिया रहल छल, किछु बाहर मे नमहर श्वेतपट पर मैलोरंगक प्रतिभागी-सदस्य लोकनिक फोटो, पेपर कटिंग आदि लगा रहल छल आ एही हूलि-मालि मे मुदा किछु गोटे अपन आगन्तुकक स्वागत सेहो नहि बिसरि रहल छल। कने रहि क' मलंगियाजी अयलाह। कुशल-छेमक बाद कनेकाल विलापक रूपान्तरण-प्रक्रिया पर गपशप भेल आ तकर बाद मैथिली रंगकर्मक प्रति दुबराइत स्थिति-परिस्थिति लेल ओ चिन्ता सेहो प्रकट कयल। बटुकभाइ, कुणालजी, किशोर केशव लोकनिक कुशल-छेम पूछि पटनाक रंग-सक्रियता लेल एक बेर फेर सँ शंख

फुकबाक खगता कहलनि। स्टेजक मनोनुकूल व्यवस्थाक बाद प्रकाश विलापक एकटा संक्षिप्त अभ्यास करा ओकरा अंतिम रूप द' देलनि। ता बेरिया भ' गेल छलैक आ हम सब हॉल सँ बाहर भ' गेल छलहुँ। रंगकर्मी लोकनि 'ग्रीन-रूम' दिस जाइत गेलाह।

मैलोरंग अपन दर्शक-समाज केँ कतेक गसिया क' धेने अछि से एकर करमान लागल दर्शकक संख्या सँ स्पष्ट छल। एहि दर्शक मे आइ सर्वश्री विभूति आनन्द, कुमार शैलेन्द्र, संजय चौधरी, सुनील कुमार झा, मनोज प्रतिहस्त, भास्करानन्द, हेमन्त लोकनि सन पटनियाँ रंगकर्मी सेहो रहथि जे किछु वर्ष पूर्व धरि पटनाक रंगकर्म लए जान-प्राण अरोपैत छलाह। हिनका लोकनिक बीच रहि हमर मोन अवश्य हुलसय मुदा पटनियाँ रंगकर्म मे हिनका लोकनिक खगता केँ बिसरि नहि पबैत रही। किछु गोटे केँ बैसय जोग सीटक अभाव मे ठाढ़े-ठाढ़ नाटक देखय लेल सहर्ष बाध्य देखि पटनियाँ दर्शकक मनोदशा पर ग्लानि सेहो होइत रहल। प्रकाशक उद्घोषणाक बाद युवा साहित्यकार अविनाशक संचालन मे पुरस्कार-वितरण प्रारम्भ भेल। प्रेमलताजी केँ हुनक आजीवन रंग-सेवा लेल ज्योतिरीश्वर सम्मान (पहिल) देल गेल आ तदुपरांत किरण झा (कोलकाता), ज्योति झा (दिल्ली) आ रीतू कर्ण (पटना) लोकनि केँ 'प्रमिला झा नाट्यवृत्ति'क रूप मे तीनू केँ 4100 रुपैयाक संग प्रमाण-पत्र सेहो देल गेलनि। प्रेमलताजीक सम्मान मे सम्पूर्ण दर्शक दीर्घा केँ ठाढ़ भ' क' स्वागत करैत देखि दर्शकक संस्कार पर त' गर्वबोध होइते रहल, प्रेमलताजीक रंग-साधनाक सोझाँ सादर माथ सेहो लबैत रहल। तकर बाद प्रारम्भ भेल 'विलाप'क मंचन।

रूपान्तरित नाटक प्रारम्भ होइत अछि एकटा गमैया खेल सँ जाहि मे दूटा एकपिठिया भाय-बहिन सन (संतोष-प्रेमलता) पात्र अछि जकर अभिनयक चुस्ती प्रशंसनीय अछि जे बिनु संवादहि केँ अपन सम्पूर्ण प्रभाव छोड़ैत अछि। तकर बादक दृश्य माय-बेटी (ज्योति-प्रेमलता)क संवादक अछि जकरा रचबाक मुख्य प्रयोजन अछि बेटी केँ बौद्धिक आ कि कामगंधक स्तर पर अबोध स्थापित करब, जाहि क्रम मे भोज मे लोटा ल' जायब, कुसियारक चर्च करब, मनुक्खक बीया द' पूछब सन संवादक गढ़नि भेल अछि जे कि यात्रीकालीन समाज मे जनानीक स्थिति आ स्तरक

फरिछौट सेहो करैत अछि। एहि अबोध बेटीक जखन विवाह होइत छैक त' अपन घरबला (मुकेश)क संग सेहो पिठिये जकाँ करैत रहैत अछि जकरा लेल माछ मारबाक घटना, छिट-फुट टेना-मेनी सन किछु अतिरिक्त दृश्य सेहो गढ़ल गेल अछि। एहि ठाम चोरा क' वर केँ सासुर जयबाक घटना आ तकर नाटकीय गढ़नि बड़ रोचक अछि। तकरहि बाद अनचोके हाक-डाक होइत छैक आ ओकर पतिक मृत्यु भ' जाइत छैक। एतय एहि विधवा युवती (सुधा)क जीवनक समस्या केँ कएक 'एंगिल' सँ देखल गेल अछि। दियर (अमरजीत)क वासना, एकटा अन्य पुरुष (जितेन्द्र) द्वारा एहि दुखित पड़ल विधवाक सोझाँ जमीन-जत्था-घराड़ी बेचबाक प्रस्ताव सन किछु दृश्य बेस मार्मिक अछि। आ अंततः एकर नाटकीय अंत तीनटा विधवाक मूक उपस्थितिक रूप मे दृश्य-संकेतक माध्यमे एकटा सुनगैत प्रश्न सँ होइत अछि जे अति-बौद्धिकताक नमहर-नमहर दाबी करयबला एहि समाज मे आइयो विधवा स्त्रीक एहन नारकीय स्थिति किएक छैक?

एक त' बाबाक कविता अपने कसल-गसल छनि। ताहि पर स' मलंगियाजीक रूपान्तरण-कौशल्य। मंचन नीक ओरियेलैक। निर्देशकीय स्तरक किछु प्रयोगसभ ध्यान सेहो आकृष्ट कयलक। जेना- सधवा लेल हरियर गाछ आ विधवा लेल सुखायल डारि, दियरक वासना-प्रदर्शन लेल विधवाक सुखाइत साड़ी केँ सूंघब आ कामातुर सन ओकर साड़ी केँ भरि पाँज क' पँजियायब, पति द्वारा पत्नीक छाबा केँ अपन पयर सँ सोहरायब, स्त्रीक दू चरित्र लेल दू टा पात्र (प्रेमलता आ सुधा)क उपयोग, एकटा मौगियाह चरित्रक गमैया रूप (प्रसून), मंचक दुनू कात दू अलग-अलग स्पॉट लाइट मे दू गामक, दू ठामक दू लोकक गपशप इत्यादि। मंचनक पार्श्व-पक्ष पर सेहो बेस काज भेल छल। गोविन्द सिंहक प्रकाश संचालन आ राजीव मिश्राक ध्वनि प्रभाव, एहि दुनू तत्वक मात्रा-विवेक संतुलित छल। नाटकक केन्द्रीय भाषा तरौनी-मंगरौनीबला राखल गेल छल मुदा लड़काक पिता (दीपक)क भाषा पछबरिया सीतामढ़ीक शैलीक छल जखन कि लड़का (मुकेश)क भाषा ओहन नहि राखल गेल छल। नाट्यभाषाक शुद्धतावादी समुदाय लेल ई अनसोहाँत भ' सकैत अछि। मुदा विधायक (बेनीपट्टी) श्री विनोद नारायण झा एहि प्रयोगक बड़ प्रशंसा कयल।

रूपान्तरित नाटक मे ठाम-ठीम विलाप कविताक किछु पाँति

(रिकॉर्डेड) सेहो उपयुक्त भेल। एहि संदर्भ मे किछु बिन्दु पर गपशप कयल जा सकैत अछि। जहिना नाट्येतर साहित्यकार नाटकक मंचीय मूल्य केँ सदति अनठओने रहलाह अछि तहिना आधुनिक रंगमंच मे नाटकक साहित्यिक मूल्य केँ सेहो अनठाओल जा रहल अछि जखन कि दुनूक लेल दुनूक खगता छैक। नाटक मे कविता केँ कोना राखल जाय सेहो एकटा महत्वपूर्ण प्रश्न अछि। विलापक प्रस्तुति नाटकीय तत्व सँ परिपूर्ण त' छल मुदा हमरा सदति लगैत रहल जे कविता मे वर्णित यात्रीजीक दरेग पूर्णतः उजागर नहि भ' रहल अछि। कहल जा सकैत अछि जे ई अन्तर एकर विधागत वैषम्यक कारणे सेहो भ' सकैत अछि मुदा एहि अन्तर केँ न्यून करबाक मारिते रास ब्योँत रहैत छैक लेखक-निर्देशक लग। कवि त' एसकरे लेखक-निर्देशक रहैत अछि अपना कविता मे। मुदा नाट्यरूप मे जखन दू मानसिकताक मेल होइत छैक त' एहन-एहन मारिते रास संकट जनमैत छैक। जँ यात्रीजीक कविता केँ हुनकहि कविता-पाठ करबाक निरपेक्ष रूप मे किंवा सुच्चा रूप मे अङेजल जाइत आ तकर समानान्तर रूपान्तरित नाटक चलैत त' नाटकक संगहि कविताक नाट्य-सम्भावनाक स्थिति स्पष्ट होइत। कविता-पाठ मे नाटकीयता भरला सँ ई स्थिति अस्पष्टे रहल। प्रति-प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि जे यात्रीजीक कविता-पाठ करबाक स्व-रूप की छलनि। एतय एकटा भोगल यथार्थक उल्लेख करब आवश्यक। सुनू जानकी (लेखक- छत्रानन्द सिंह झा) मे मैथिलीक वरेण्य कवि श्री हरेकृष्ण झा आ ज्योत्सना चन्द्रम्‌क एक-एकटा कविताक उपयोग कयल गेल अछि जकर वाचन सम्बन्धित पात्रे करैत अछि। ताहि क्रम मे अपन उक्त विचार केँ पुष्ट करबाक लेल वएह कविता श्री हरेकृष्ण झाक मुँहे सूनल जे कि 'सुनू जानकी' मे भास्करानन्द पढ़ैत छलाह। कहबा मे हर्ज नहि जे प्रभावक स्तर पर हरेकृष्ण झा द्वारा बाँचल कविता बड़ आगू छल। यात्रीजी कोना कविता पढ़थि तकर साक्षी एखनहु कुणालजी, कुमार शैलेन्द्र, अजित आजाद सन रंगकर्मी छथि। नाटक अपन दुनू मूल्यक संग नाटक अछि। कविता केँ अति नाटकीयता सँ भरब ओकरा असहज बनायब छैक, ओकर साहित्यिक प्रक्षेप केँ दुइर करब छैक। कविताक उपयोग त' तेना होयबाक चाही जे ई बूझय जोग हो जे रूपान्तरित नाटकक हेतु यात्रीजीक कविता एकटा कच्चा माल सन अछि। बाबाक कविता एहि नाटक मे कोनहु

खास प्रभाव नहि छोड़ि सकल। रूपान्तरण करैतकाल कथ्य-स्वतंत्रताक स्वतंत्रता नहि रहैत छैक तेँ ओकर आयाम बेस नमहर-चाकर नहि कयल जा सकैत छैक। ओ त' मूलकृतिक चारूभर घूमैत रहैछ। बाबाक कविता मे मारिते रास घटना सूत्ररूप मे छैक जकरा स्थापित करय लेल मलंगियाजी विधागत स्वतंत्रताक उपयोग विवेकपूर्ण ढंग सँ कयने छथि फलतः नाटकक समग्र प्रभाव बाबा सँ एक धाप आगू पड़ब स्वाभाविको छल आ आवश्यको छल। कविताक प्रस्तुति आ कविताक नाट्य-रूपान्तरणक प्रस्तुति मे अन्तर होइत छैक से एहि प्रस्तुति केँ देखि क' बूझल जा सकैत अछि। लग मे रा.ना.वि. (राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय) (NSD) होयबाक लाभ मैलोरंगक रंगकर्मी केँ सेहो भेटि रहल छैक से एकर प्रस्तुति बजैत अछि। एहि ठाम एकटा आओर वैशिष्ट्य देखैत छी। मैलोरंग अपन प्रस्तुति केँ 'कैजुअली' आ कि टाइम-पास रूप मे नहि लैत अछि। एकर सम्पूर्ण रचना-प्रक्रिया रंगबोध सँ भरल रहैत छैक। लगैए एहने सन किछु बात छैक जे एकर प्रस्तुति दर्शक केँ खूबे रूचैत छैक।

हँ, अविनाश सन युवा साहित्यकार सँ संचालनक मादे कनी बेसीए उमेद छल। एहि संदर्भ मे डा. देवशंकर नवीनक अभाव खटकल। जे-से। मंचन सम्पन्न भेला उतर 'उपरांत-गोष्ठी'क बाद मैलोरंगक आतिथ्य छोड़ि अपना पितियौतसभक संग लक्ष्मीनगर अयलहुँ। अगिले दिनक रिजर्वेशन छल। वापस पटना आबि गेलहुँ। मैलोरंग-दलक संग भरि पोख गप-शप करबाक योजना अहू बेर नहि पूरल। सालक प्रारम्भ रंगकर्मेक ओरियाओन स' भेल से सोचि-सोचि आह्लादित भ' रहल छी। यात्रीजीक प्रति मैलोरंगक ई श्रद्धांजलि प्रशंसनीय लागल। अनुकरणीय सेहो।

सांध्य गोष्ठी, तेसर पुष्प, पटना, 2011

•